जिनवाणी

नमस्कारमंत्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं

एसो पंचणमुक्कारो सव्वपावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं पढमं हवइ मंगलं

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल जयपुर

सितम्बर 2001, आश्विन, 2058

आह्वान है हमारा -

उन इतिहास प्रेमियों को जो सुधर्मा स्वामी से लेकर देवर्द्धिगणिक्षमाश्रमण तक के इतिहास का सांगोपांग अध्ययन करना चाहते हैं।

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-2 की परीक्षा में शामिल होने के लिए।

चौंकिये नहीं।

इस परीक्षा का अग्रिम प्रश्न-पत्र जिनवाणी पत्रिका के अगस्त माह के अंक में प्रकाशित हो चुका है जिसमें से ही प्रश्न-पत्र भाग ''ब'' के सभी 70 अंक के प्रश्न पूछे जावेंगे। केवल भाग ''अ'' के 30 अंक के प्रश्न पुस्तक से रहेंगे।

100 में से 100 अंक प्राप्त करने वालों को 21 हजार रु. का विशिष्ट सम्मान पुरस्कार। 25 वर्ष से कम उम्र को युवा वर्ग और 25 से अधिक को प्रौढ़ वर्ग। दोनों वर्गों के लिए प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार क्रमशः 11, 9 व 7 हजार रुपयों का तथा सभी उत्तीर्ण होने वालों को आकर्षक पुरस्कार।

जुट जाइये। शत-प्रतिशत अंक प्राप्त करने के लिए।

परीक्षा तिथि - 16 जून, 2002
आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि - 31 मार्च, 2002
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :-

रतनलाल सी. बाफना, ज्वैलर्स

नयनतारा, सुभाष चौक, जलगांव - 425001
फोन व फैक्स नं. 223903, 222630, 225903, 227332

हमारी आगामी योजनाएँ (प्रस्तावित)-

1. जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग - 3,4
2. उत्तराध्ययन सूत्र भाग-3
3. सामायिक सूत्र (उपाध्याय अमरमुनिजी)
4. जैन तत्व प्रकाश (आचार्य अमोलक ऋषिजी)

जिनवाणी

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं करेंति जे भावेण।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी॥
मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

- **प्रकाशक**
  सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
  दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
  जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 565997
- **संस्थापक**
  श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़
- **प्रधान सम्पादक**
  डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.
- **सम्पादकीय सम्पर्क-सूत्र**
  3 K 25, कुड़ी भगतासनी
  हाउसिंग बोर्ड
  जोधपुर- 342005(राज.)
  फोन नं. 0291-747981
- **सम्पादक मण्डल**
  डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.
- **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
  रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
- **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	5000 रु.
संरक्षक सदस्यता	2000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

visit us at:www.jinwani.com

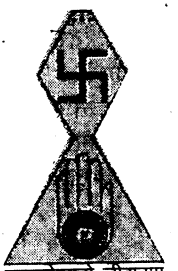

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

एवं विणयजुत्तस्स,
सुत्तं अत्थं च तदुभयं।
पुच्छमाणस्स सीसस्स,
वागरेज्ज जहासुयं।।

-उत्तराध्ययन सूत्र 1.23

सुविनीत शिष्य को गुरुजन भी,
प्रश्नों के उत्तर खोल कहें।
सूत्र अर्थ जाना जैसा,
वैसा ही सम्यग्ज्ञान कहें।।23।।

सितम्बर 2001
वीर निर्वाण सं. 2527
आश्विन, 2058

वर्ष : 58 **अङ्क** : 09

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस,
जयपुर, फोन : 562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है

नोट : यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन / निबन्ध

साधना के ज्ञातव्य सूत्र	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा.	7
तप ज्योति भी है और ज्वाला भी	: महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी	12
Spread of Jainism in India and abroad	: Shri Prakash Lall Jain	17
महामंत्र णमोक्कार : स्वरूप एवं माहात्मय (2)	: श्री जशकरण डागा	23
महत्त्व त्याग का है	: श्री कन्हैयालाल लोढ़ा	27
दुर्लभ मानव जीवन का उपयोग	: डॉ. मंजुला बम्ब	36
नारी के प्रति हीनभाव क्यों ?	: सुश्री सपना धाड़ीवाल	38
आओ वैराग्य में मन रमाएँ	: श्री नेमीचन्द जैन	45

विचार / आगम–परिचय / तथ्य

महावीर वाणी (अपरिग्रह)	: संकलित	6
इनकी नजर में भगवान महावीर	: सपना राजेश रीड़	11
समय की कीमत	: संकलित	16
उत्तराध्ययनसूत्र : तेतीसवाँ अध्ययन	: प्रो. चाँदमल कर्णावट	32
भगवान महावीर : 101 तथ्य (3)	: श्री राजेश जैन 'देवकर'	34

कथा / कविता / प्रसंग

महामंत्र की महिमा	: सुश्री रिंकी जैन	26
तख्ती पर नाम	: श्री नितेश नागोता	31
मुक्तक	: श्री विरेन्द्र जैन 'यश'	39
जन्म और मृत्यु से परे	: श्री दिलीप धींग 'जैन'	40
कंदमूल का त्याग	: श्री नन्दावल्लभ लोहनी	41
कड़ी मेहनत, पक्का इरादा, दृढ संकल्प	: श्री नवरतन डागा	43

स्तम्भ / अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग–2 की परीक्षा	: संकलित	47
साहित्य–समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	49
समाज–दर्शन	: संकलित	50
श्रद्धांजलि	: संकलित	57
जोधपुर श्रावक–सम्मेलन	: अरूण मेहता	60
साभार–प्राप्ति–स्वीकार	: संकलित	69
पाठक–पत्र	: संकलित	75

सम्पादकीय

डॉ. नेमीचन्द जैन : एक विराट् प्रेरक व्यक्तित्व

■डॉ. धर्मचन्द जैन

बीसवीं शती के महान जैन पत्रकार एवं सम्पादक डॉ. नेमीचन्द जैन इक्कीसवीं शती के अहिंसकों एवं जैन पत्रकारों का मार्ग प्रशस्त कर 8 अगस्त 2001 को आकस्मिक रूप से चल बसे। अहिंसा, शाकाहार एवं प्राणिसेवा के लिए जन–जन में जागृति उत्पन्न करने वाले 74 वर्षीय डॉ. नेमीचन्द जैन के मन में अभी भी पूरा जोश एवं उत्साह था। वे उनसे मिलने वाले व्यक्ति में प्राण फूंककर उसे ऊर्जावान एवं सक्रिय बनाने का आत्मविश्वास रखते थे। उन्होंने अपने व्याख्यानों, वार्तालापों, लेखों, सम्पादकीयों एवं यात्राओं के माध्यम से इस मानव जाति को जो संदेश दिया, वह सदैव प्राणवती प्रेरणा का कार्य करेगा।उनके द्वारा सम्पादित 'तीर्थंकर' मासिक पत्रिका अपने आपमें बेमिसाल है। मई सन् 1971 से जुलाई 2001 तक आपने 'तीर्थंकर' के 363 अंक सम्पादित किए। इसके विभिन्न विशेषांक भी प्रभावशाली रहे। तीर्थंकर पत्रिका उनके जीवन का एक मिशन थी। उन्हीं के शब्दों में– "तीर्थंकर' मेरा जीवन–मिशन है, अतः जब भी मैं उसे सम्पादित करता हूँ, उसमें अपनी साँस–साँस उँडेल देने की भरपूर कोशिश करता हूँ।" 32 पृष्ठों की लघुकाय पत्रिका रूपी गागर में वे विचारों का सागर उँडेल देने के लिए प्रयत्नशील रहते।

विगत सवा ग्यारह वर्षों से 'शाकाहार–क्रान्ति' पत्रिका के माध्यम से जन–साधारण में आपने शाकाहार के महत्त्व को स्थापित करते हुए अण्डे, मांस आदि के दोषों को उजागर किया। छोटी–छोटी 110 पुस्तकों के द्वारा आपने एक ओर जैन–धर्म–दर्शन का ज्ञान कराया, वहीं दूसरी ओर पाठकों को सम्यक् सोच प्रदान किया। 'बहुआयामी महामंत्र णमोकार' 'ऊँ–100 तथ्य', 'जैन धर्म 100 तथ्य', 'जैन धर्मः इक्कीसवीं शताब्दी', 'अहिंसा का अर्थशास्त्र', 'जैन आहार, विज्ञान और कला', 'शाकाहार–100 तथ्य', 'बेकसूर प्राणियों के खून में सने हमारे ये बर्बर शौक', 'अण्डे के बारे में 100 तथ्य' 'मांसाहारः100 तथ्य', 'कत्लखानेः 100 तथ्य', 'भूकम्प की वजह', 'सौ अच्छे काम', 'प्रणाम महावीर', 'जैन धर्म का प्रारम्भिक परिचय' आदि आपकी अनेक कृतियाँ पठनीय हैं।

डॉ. जैन ने अहिंसा एवं शाकाहार को आन्दोलन का रूप दिया। अहिंसा व शाकाहार के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु भगवान महावीर फाउण्डेशन,चेन्नई के द्वारा 5लाख रुपये का पुरस्कार घोषित किया गया जो शीघ्र ही आपको अर्पित किया जाने वाला था, परन्तु आपका आयुष्य पहले ही पूर्ण हो गया। इस पुरस्कार से पूर्व भी आपको अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। गतवर्ष रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन की ओर से जलगांव में आपको अहिंसा अवार्ड प्रदान किया गया था।

आप जैनों की चारों सम्प्रदायों में मान्य थे। सब जगह जाते थे और अपने क्रान्तिकारी विचारों की छाप छोड़ते थे। आपने अनेक आचार्यों, प्रतिष्ठित साधु-साध्वियों, विद्वानों, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं आदि से अनेक उपयोगी मुद्दों पर

बातचीत की, जिनका प्रकाशन समय–समय पर तीर्थंकर पत्रिका में होता रहा। वार्तालापों में गहन मंथन के साथ आप नवनीत निकालने का प्रयास करते थे। आपमें आत्मीयता का भाव गजब का था। कब, कैसे प्रेरणा देनी, इसमें आप कुशल थे। दिल्ली में भगवान महावीर और अहिंसा पर आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी के समय 10–11 अप्रेल 2001 को आपके साथ रहने का अवसर मिला। उसके पश्चात् आपने 17 मई 2001 को मुझे इन्दौर से एक प्रेरक पत्र लिखा–

"मान्य भाई,

दिल्ली में आपके साथ **10-4-/11-04** की तारीखें सुखद रहीं। कई मुद्दों पर कई तरह की चर्चाएँ हुई। भाई श्री दुलीचन्दजी तथा भाई सागरमल जी की उपस्थिति ने भी अपनी भूमिका सम्पन्न की। लगा कि यदि कुछ लोग बैठकर सामाजिक/सांस्कृतिक/नैतिक/धार्मिक गिरावट पर गंभीरतापूर्वक विचार करें तो समाधान खोजे जा सकते हैं। असल में आज हमारे सामने कई करारी चुनौतियां हैं, जिनकी हम लगातार अनदेखी कर रहे हैं। एक दिन यही चुनौतियाँ अपने रक्तरंजित पंजे हमारे अस्तित्व पर रख हावी हो जाएँगी और फिर हमारे पास कोई विकल्प नहीं रहेगा।

संगोष्ठियों की प्रभाव-परिधि प्रायः सीमित होती है। इन्हें एक नया मोड़ देने की जरूरत है। सबमें पहला यह कि जो विद्वान अपने चर्चा/शोधपत्र लायें वे उसमें से एक फीचर (लोकपाठ्य लेख) भी तैयार करें जिसे एक "विचार-सेवा' सभी अखबारों को प्रचारित करे। इस तरह की एक विचार सेवा आरंभ करने का मेरा इरादा है। साथ दीजिये ताकि उसे मैदान में लाया जा सके।

आपमें बहुविध संभावनाएँ हैं। आगे आइये। आप युवा हैं। अभी इस क्षेत्र में आपको बहुत काम करना है। कई परम्पराएँ कायम करनी हैं। कइयों का मार्गदर्शन करना है। कमर कस लीजिये और तुरन्त आगे आ जाइये।परिजनों से स्नेह कहिये। पत्रोत्तर दीजिये। संपृक्त रहिये।

आपका स्नेहाधीन

(नेमीचन्द)"

'विचार–सेवा' का आपका विचार निश्चित ही सराहनीय था, किन्तु वह कार्यान्वित नहीं हो सका। आपने दिल्ली में मुझे फीचर लिखने हेतु बहुत प्रेरणा की, तीर्थंकर में प्रकाशनार्थ लेख भेजने हेतु भी कहा। अब स्मृतियां शेष हैं, वे ही प्रेरणा का आलम्बन हैं। 16 जून 2001 को लिखा आपका पत्र भी कम प्रेरक नहीं है–

"मान्य भाई,

गृह-प्रवेश के मंगल क्षणों का आत्मीय निमन्त्रण सामने है, कृतज्ञ हुआ। मुझे विश्वास है, आपका यह "अपना घर" तो साबित होगा ही- "धरती है मेरा कुटुम्ब" जैसा भी कुछ क्रमशः बनेगा। इसके कण-कण से विश्व-मैत्री/शान्ति/सुख-समृद्धि की ऊर्जा प्रकट होगी। आपकी वाणी में बल आयेगा और आपके शब्द चारित्र की गरिमा प्राप्त करेंगे।

बहिन सौ. मधुजी को भी स्नेह दीजिये।

मुझे लगता है अब तो जल्दी ही वहाँ आना होगा और कम से कम कुछ घंटों तो रुकना ही होगा। तैयार रहिये-तैयार रखिये। पुनः मंगलकामनाओं के साथ.. आपका स्नेहाधीन

(नेमीचन्द)"

यह पत्र भी प्रेरणाप्रद आशीर्वचनों के माध्यम से आपके व्यक्तित्व को विराट् बना रहा है।

जिनवाणी के मानद सम्पादक डॉ.नरेन्द्र जी भानावत के साथ आपका अटूट प्रेममय रिश्ता था। उसे आपने वर्तमान में भी कायम रखा। आपके मन में बहुत योजनाएँ थी, बहुत से सत्संकल्प थे। उन्हें पूरा करने के लिए किसी को आगे आना होगा।

सादा जीवन एवं उच्च विचारों के धनी डॉ. जैन में जो अदम्य उत्साह एवं कार्यनिष्ठा थी वह विरलों में होती है। आपने जो अहिंसा एवं शाकाहार के प्रचार का मिशन बनाया वह जीव रक्षा एवं जीवनमूल्यों की दृष्टि से सदैव हमारा मार्गप्रशस्त करेगा।

एक सफल श्रावक सम्मेलन

जोधपुर में 8 एवं 9 सितम्बर 2001 को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक-सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें बैंगलोर, चेन्नई, मुम्बई, जलगांव, जयपुर, पाली, पीपाड़, सवाईमाधोपुर, अलीगढ़, हिण्डौन, भरतपुर, जोधपुर आदि विभिन्न स्थानों के हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया।

श्रावक–सम्मेलन के प्रमुख उद्देश्य होते हैं– 1. पारस्परिक वात्सल्य एवं मैत्रीभाव में अभिवृद्धि 2. श्रावकों के आचरण में सुधार पर चिन्तन 3. संघ हित में विचार 4. संघ द्वारा प्राणिसमाज को योगदान पर विचार आदि। सम्मेलन सम्यक् मिलन का अवसर है। जोधपुर के संघ द्वारा आयोजित इस सम्मेलन की प्रमुख विशेषताएँ थी–

1. व्यवस्थित एवं योजनाबद्ध रीति से कार्यक्रमों का संचालन।
2. गुणीजनों, तपस्वियों एवं वीर माता–पिताओं का संघ द्वारा सम्मान।
3. दिवंगत संघसेवी श्रावक-श्राविकाओं के परिवारजनों को स्मृति चिह्न।
4. अनुशासन
5. समुचित आतिथ्य
6. श्रावक जीवन को समुन्नत बनाने एवं पारिवारिक जनों में संस्कार निर्माण पर बल।
7. आदर्श श्रावकों के जीवन का स्मरण।
8. उत्साह एवं उमंग के साथ दूरस्थ एवं निकटवर्ती श्रावकों की उपस्थिति।
9. कार्यकर्त्ताओं की तत्परता।

आधुनिक्र युग में सामूहिक कार्यक्रम भी व्यक्ति के जीवन में प्रेरणा का कार्य करते हैं। उसके मन में धर्मनिष्ठा एवं सत्संस्कारों के प्रति आकर्षण का भाव उत्पन्न होता है। सम्मेलन सदाचरण, नैतिकता एवं आध्यात्मिक प्रवृत्तियों में प्रगति करने का संदेशवाहक रहा। यही सम्मेलन की प्रमुख सफलता कही जा सकती है।

महावीर वाणी

अपरिग्रह

मुच्छा परिग्गहो वुत्तो। -दशवैकालिक 6

वस्तु के प्रति रहे हुए ममत्व भाव को परिग्रह कहा है।

वित्तेण ताणं न लभे पमत्ते,
इमम्मि लोए अदुवा परत्थ।।

-उत्तराध्ययन सूत्र 4.5

प्रमत्त पुरुष धन के द्वारा न तो इस लोक में अपनी रक्षा कर सकता है और न परलोक में ही।

नत्थि एरिसो पासो पडिबंधो अत्थि
सव्व जीवाणं सव्वलोए। -प्रश्नव्याकरणसूत्र 1.5

विश्व के सभी प्राणियों के लिए परिग्रह के समान दूसरा कोई जाल नहीं, बन्धन नहीं।

इच्छा हु आगाससमा अणंतिया। -उत्तराध्ययनसूत्र 9.48

इच्छा आकाश के समान अनन्त है।

धणधन्न-पेसवग्गेसु, परिग्गहविवज्जणं।
सव्वारंभपरिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं।।

-उत्तराध्ययनसूत्र 19.29

धन–धान्य, नौकर–चाकर आदि का परिग्रह त्यागना, सर्व हिंसात्मक प्रवृत्तियों को छोड़ना और निरपेक्षभाव से रहना, यह अत्यन्त दुष्कर है।

जया निव्विंदए भोए, जे दिव्वे जे य माणुसे।
तया चयइ संजोगं, सब्भिंतर–बाहिरं।। -दशवैकालिकसूत्र 4.17

जब मनुष्य दैविक और मानुषिक(मनुष्य संबंधी) भोगों से विरक्त हो जाता है तब वह आभ्यन्तर और बाह्य परिग्रह को छोड़ कर आत्म-साधना में जुट जाता है।

जे पावकम्मेहिं धणं मणूसा,
समाययन्ती अमयं गहाय।
पहाय ते पास पयट्ठिए नरे।
वेराणुबद्धा नरयं उवेंति।। -उत्तराध्ययनसूत्र 4.2

जो मनुष्य धन को अमृत मानकर अनेक पापकर्मों द्वारा उसका उपार्जन करते हैं, वे धन को छोड़ कर मौत के मुंह में जाने को तैयार हैं, वे वैर से बंधे हुए मर कर नरकवास प्राप्त करते हैं।

जस्सिं कुले समुप्पन्ने, जेहिं वा संवसे नरे।
ममाइ लुप्पई बाले, अन्ने–अन्नेहिं मुच्छिए।।

-सूत्रकृतांगसूत्र 1.1.4

अज्ञानी मनुष्य जिस कुल में उत्पन्न होता है, अथवा जिनके साथ निवास करता है उनमें ममत्वभाव रखता हुआ अपने से भिन्न वस्तुओं में मूर्च्छा भाव प्राप्त करके बहुत दुःखित होता है।

साधना के ज्ञातव्य सूत्र

■ आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

अन्तर्लक्ष्यी ध्यान

गणधर गौतम धर्मध्यान के एक उच्च स्तर पर पहुँचे हुए महापुरुष थे। वैसे धर्मध्यान आपका भी होता है, हमारा भी होता है, लेकिन भिन्न भिन्न कोटि के व्यक्तियों के धर्म-ध्यान के स्तर और उसकी साधना में परस्पर बड़ा गहरा अन्तर रहता है। कषाय के तीव्र भाव क्रमशः जितने अधिक कम होते जायेंगे और ज्यों.ज्यों साधक वीतराग भाव के अधिकाधिक नजदीक बढ़ता जायेगा, त्यों.त्यों धर्म.ध्यान उत्तरोत्तर उतना ही उच्च से उच्चतर बनता जायेगा और अन्ततोगत्वा वही धर्म.ध्यान शुद्धतम बनकर शुक्ल ध्यान के रूप में परिणत हो जायेगा। वस्तुतः इसी प्रकार का ध्यान आत्मा का अन्तर्लक्ष्यी ध्यान होता है। इस प्रकार का अन्तर्लक्ष्यी ध्यान सर्वसाधारण में क्यों नहीं होता और हम इस ध्यान की महिमा को जानकर भी इस परम शक्ति को, इस परम प्रकाश को क्यों नहीं पाते? यदि इसके कारणों पर विचार किया जाय तो इसका मुख्य कारण अज्ञान की प्रबलता ही स्पष्ट प्रतीत होता है।

वह अज्ञान है-धर्म का अज्ञान, व्यवहार का अज्ञान। एकान्तवाद को मानने वाला भी मिथ्यात्वी ध्यान की साधना करता हुआ दिखाई देता है, सुना जाता है और दीर्घकाल तक बाहरी संतोष प्राप्त कर वह अपना समाधिस्थ रूप भी संसार के समक्ष प्रस्तुत करता है। धर्मध्यान के सम्बन्ध में जैन दर्शन की मान्यता यह है कि जब तक किसी प्राणी के अन्तर के अज्ञान की, तीव्र मिथ्यात्व की एवं मोह की उपशान्ति नहीं होती तथा सम्यक् ज्ञान की ज्योति नहीं जग जाती तब तक उस प्राणी को धर्म ध्यान का अधिकारी नहीं कहा जा सकता।

आर्त्त रौद्रादि ध्यान

गुणस्थान की दृष्टि से भी ध्यान पर शास्त्रों में विचार किया गया है। किस गुणस्थान में कौनसा ध्यान होगा, इस संबंध में शास्त्रों में पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। आर्त्तध्यान मोह कर्म के उदय भाव से होने वाला ध्यान है और मोह कर्म के उदय से आर्त्तध्यान के उत्पन्न होने पर मोह कर्म के उदय का आश्रय पाकर प्रकट हुए क्रोध-कषाय के तीव्र भावों में रौद्र ध्यान का आविर्भाव होता है। जब तक हम आर्त्तध्यान के आश्रित होंगे तब तक रौद्र कषायों के भाव आते रहेंगे, क्योंकि कषायों के प्राबल्य में किसी भी समय रौद्र ध्यान उत्पन्न हो सकता

है। मन में राग-द्वेष-क्रोधादि भावों का प्राबल्य होने पर धन, धरा, धामादि के प्रश्न को लेकर बात-बात पर मित्रों, सगे-संबंधियों एवं अन्यान्य लोगों के साथ लड़ाई-झगड़ा करना, दूसरों का बुरा सोचना, दूसरे लोगों के धन, जन एवं प्राणों को हानि पहुंचाने का विचार करना यह रौद्र ध्यान है। धन, धरा, धाम इत्यादि आर्त्तध्यान के निमित्त हैं। आर्त्तध्यान रागाश्रित है और रौद्र ध्यान द्वेष प्रधान है। रागादि दोषों की आत्यन्तिकी मन्दता होने पर ही धर्मध्यान एवं शुक्ल ध्यान की आराधना हो सकती है। इसलिए ध्यान को उन्नत बनाये रखने तथा उत्तरोत्तर उन्नत करने का साधन है- सम्यक् ज्ञान को निर्मल, निर्मलतर और निर्मलतम बनाना।

सम्यग्ज्ञान किसका?

यहां सहज ही यह प्रश्न उत्पन्न होगा कि वह सम्यग्ज्ञान किसका हो? वह सम्यग्ज्ञान वस्तुतः लोक का अर्थात् द्रव्य, गुण और पर्याय का होना चाहिये। आपको इस प्रश्न का समीचीनतया समाधान पाने के लिए द्रव्य, गुण और पर्याय इन तीनों के लक्षण, भेद आदि के संबंध में अच्छी तरह समझना आवश्यक है।

द्रव्य छः प्रकार का है- धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल, जीव और काल। काल को छोड़कर इनमें से प्रत्येक के साथ अस्तिकाय लगता है तब पूरा नाम बनता है। जैसे- धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय, पुद्गलास्तिकाय और जीवास्तिकाय। काल के साथ अस्तिकाय नहीं लगता, क्योंकि काल में प्रदेशों का समूह नहीं होता, इसलिये इसको अस्तिकाय नहीं कहते। इस प्रकार धर्मास्तिकाय से लेकर काल तक इन छः द्रव्यों में एक जीव और शेष पांच अजीव द्रव्य है।

लोक-छःद्रव्यों का समूह

इन छह द्रव्यों के समूह को लोक माना गया है। जैसा कि शास्त्र में कहा है- **"एस लोगोत्ति पन्नत्तो"**

लोक के इन छः द्रव्यों में संसार के सभी अनन्त-अनन्त पदार्थों का समावेश हो जाता है इन छः द्रव्यों में से दो द्रव्य प्रमुख हैं। ये हैं- जीव और पुद्गल।

धर्मद्रव्य जीव और अजीव- इन दोनों को गति करने में सहायता करता है। जीव गति करता है और अजीव यानी पुद्गल भी गति करता है। गति करने वाले जीव और अजीव को गति करने में किसी के सहारे की अपेक्षा होती है।

बिना सहारे के जीव-अजीव या पुद्गल गति नहीं कर सकता। जैसे किसी जलाशय का पानी सूख जाय तो मछली गति नहीं कर सकती। यदि मछली को जमीन पर छोड़ दिया जाय तो वह खत्म हो जायेगी। यदि आसमान में किसी चिड़िया की तरह मछली को उछाल दिया जाय तो वह आकाश में गति नहीं कर सकती। किसी कबूतर को, चिड़िया को, परिन्दे को आसमान में छोड़ दिया जाय तो वह उड़ जायेगा। पक्षी की गति है आकाश में और मछली की गति है पानी में। इसी तरह हरिण की गति भूमि पर है। भूमि पर दौड़ता हुआ हरिण आपकी पकड़ में मुश्किल से आयेगा। लेकिन यदि हरिण को पानी में छोड़ दिया जाय तो अधिक समय तक उसमें नही रह पायेगा, आगे नहीं बढ़ पायेगा। इसका मतलब यह हुआ कि हरिण की पानी में गति नहीं है। चलने वाला हरिण भूमि पर चलता है, उड़ने वाला पक्षी आकाश में उड़ता है और तैरने वाली मछली पानी में तैरती है। तीनों ही स्थलों के तीन उदाहरण दिये। जल के लिये मछली, आकाश के लिए कबूतर और भूमि के लिए हरिण। आकाश, भूमि और जल चलने वाले नहीं हैं। लेकिन यदि इन तीनों चीजों का आधार या सहयोग हटा दिया जाय अर्थात् हरिण से भूमि छीन ली जाय, मछली को पानी से निकाल दिया जाय और पक्षी को आकाश से हटा लिया जाय तो तीनों की गति अवरुद्ध हो जायेगी।

गति एवं अवस्थिति के सहायक द्रव्य

इसी तरह जीव में चलने की ताकत है, लेकिन चलने के लिए धर्मद्रव्य का सहयोग अथवा आधार होना चाहिये। बिना धर्मद्रव्य के सहयोग के जीव अथवा अजीव पुद्गल गति नहीं कर सकता। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि संसार के जीव दौड़ते हैं, स्थिर होते हैं तो इसमें धर्म और अधर्म द्रव्य सहायक कारण होते हैं। जहां धर्म द्रव्य गति करने में सहायक होता है वहां अधर्म द्रव्य स्थिर होने में सहायक होता है।इनको उदासीन या निमित्त कारण के नाम से भी अभिहित किया जाता है।

उदासीन एवं प्रेरक निमित्त

कारण दो प्रकार के होते हैं- एक प्रेरक और दूसरा उदासीन। घर में घड़ी लगी हुई है और उसमें 8.30 बज गये तो व्याख्यान में जाने का समय हो गया।घड़ी व्याख्यान के समय की याद दिलाने में कारण हुई। एक घर में माताजी, पिताजी या पुत्र ने कहा-"अभी तक तैयार नहीं हुए हो, मालूम भी है साढ़े आठ

बज गये हैं। जल्दी करो। व्याख्यान में जाना नहीं है क्या?'' दोनों में- घड़ी एवं घर वालों में क्या अन्तर हुआ? एक कारण तो हुई घड़ी, घड़ी ने बताया कि साढ़े आठ बज कर पांच मिनट ऊपर हो गये। व्याख्यान में जाने के इच्छुक व्यक्ति को लगेगा कि जल्दी करूँ अन्यथा लेट हो जाऊँगा। घड़ी व्याख्यान सुनने के लिए प्रेरणा देने का कारण बनी है। माता-पिता आदि घर के सदस्य भी व्याख्यान में जाने की प्रेरणा देने के कारण बने है। दोनों में क्या अंतर हुआ? घड़ी टाइम बताती है लेकिन प्रेरणा नहीं करती। साढ़े आठ ही नहीं पौने नौ अथवा साढ़े नौ भी बज जाय तो भी घड़ी आवाज लगाकर प्रेरणा नहीं कर सकती, ताकीद नहीं कर सकती। लेकिन घर के सदस्य एक-एक कर आवाज लगाते हैं प्रेरणा करते है कि बाबू साहब! अभी तक आप तैयार नहीं हुए, ९ बजने वाले हैं, आप कैसे लेट हो रहे हैं? वे व्याख्यान में भेजने के प्रेरक कारण हैं। घड़ी भी कारण है, लेकिन घड़ी का काम टाइम बताना मात्र है अतः यह उदासीन कारण बना, और घर के सदस्य प्रेरक कारण बन गये। व्याख्यान में आने वाला कौन है, प्रेरणा करने वाला आता है या सुनने वाला? आना किसके अधीन है? सुनने वाले के। लेकिन प्रेरणा देने वाला विद्यमान है तो फर्क पड़ता है। मान लीजिये कभी घड़ी बन्द हो गई तो उससे जो व्याख्यान में जाने के समय का ठीक पता चलता था, वह नहीं चल सकेगा। घड़ी के बन्द हो जाने की स्थिति में साढ़े आठ अथवा 9 का समय हो जाने पर भी 'अभी तक तो आठ ही बजे हैं'- इस प्रकार की गलतफहमी होना संभव है।

जिस प्रकार व्याख्यान में जाने के लिए घड़ी निमित्त कारण बनती है, उसी तरह संसार के जीवों और पुद्गलों को गति करने में धर्मास्तिकाय सहायक होता है। धर्मास्तिकाय हाथ पकड़कर चलने को नहीं कहता। वस्तुतः धर्मास्तिकाय न स्वयं चलता है और न जीव अथवा अजीव पुद्गल को चलने के लिये कहता अथवा प्रेरणा ही करता है। वह तो जीव एवं अजीव पुद्गल को गति करने में सहायता मात्र करता है। उदाहरण के रूप में समझ लीजिये- आप व्याख्यान सुनने आये। व्याख्यान समाप्त होते ही आपका लड़का, मित्र, भाई अथवा ड्राइवर आपके पास आकर कहता है-'श्रीमान! चलिये, नीचे गाड़ी तैयार खड़ी है।' ये लोग आपको बुलाने आते हैं अथवा हॉर्न बजाते हैं, पर गाड़ी तो आपको नहीं कहती कि चलिये। गाड़ी चलने को तैयार खड़ी है, उसको यदि

स्टार्ट करोगे तो चल पड़ेगी। गाड़ी चलने में सहायक होती है। यह उदासीन सहकारी कारण है। चलते-फिरते किसी मित्र पर आपकी दृष्टि पड़ी और उससे बात करना चाहते हो तो गाड़ी को रोकना पड़ेगा। गाड़ी को रोकने का सहकारी कारण बना-ब्रेक। ब्रेक न हो तो गाड़ी जहां चाहो वहां तत्काल नहीं रूक सकती। गाड़ी को गति देने का कारण तो बना इंजिन, जिससे गाड़ी ने स्पीड़ पकड़ी एवं चल पड़ी और ब्रेक गाड़ी को ठहराने का कारण बना। **(क्रमशः)**

इनकी नजर में भगवान महावीर

* यदि आज मानवता को बचाना है तो महावीर के बताए हुए रास्ते के बिना दूसरा कोई रास्ता नहीं है।– **सर्वपल्ली डॉ. राधाकृष्णण**
* अगर कोई पूर्ण अहिंसा को आचरण में लाया हो एवं उसका प्रचार किया हो तो वह भगवान महावीर ही हैं।– **महात्मा गांधी**
* भगवान महावीर की तरह अगर हम अपने दोषों और कमजोरियों को दूर कर लें तो सारा संसार खुद ब खुद सुधर जायेगा।
  – **लाल बहादुर शास्त्री**
* भारत में भगवान महावीर ने उद्घोषणा की कि धर्ममात्र सामाजिक रूढ़ि नहीं वह जीवन का वास्तविक सत्य है।– **गुरुदेव रवीन्द्रनाथ**
* महावीर का उपदेश किसी संप्रदाय के लिए नहीं प्राणीमात्र के लिए है।
  – **चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य**
* महावीर आज की साइंस के संस्थापक थे।– **रिचर्स स्कॉलर माधोआचार्य**
* महावीर स्वामी ने जन्म-मरण की परंपरा पर विजय प्राप्त की थी, उनकी शिक्षा विश्व-मानव के कल्याण के लिए थी।– **आचार्य नरेन्द्रदेव**
* महावीर स्वामी ने शब्दों में ही नहीं अपितु रचनात्मक जीवन में एक महान् आन्दोलन किया था। वह आन्दोलन जो नवीन एवं संपूर्ण जीवन में सुख पाने के लिए नव आशा का स्रोत था जिसे कि हम यहाँ धर्म कह रहे हैं।–**श्रीमती आइस डेविड्स**
* भ.महावीर अलौकिक महापुरुष थे। वे तपस्वियों में आदर्श, विचारकों में महान्, आत्मविकास में अग्रसर दर्शनकार और सभी विद्याओं में पारंगत थे। उन्होंने अपनी तपस्या के बल से उन विद्याओं को रचनात्मक रूप देकर जन समूह के समक्ष उपस्थित किया था।
  –**डॉ. अर्नेस्ट लायमैन, जर्मनी**

प्रस्तुति–सपना राजेश रीड़, देवकर, जिला–दुर्ग (छत्तीसगढ़)

तप ज्योति भी है और ज्वाला भी

■ *महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा.*

पूर्वबद्ध कर्मो की निर्जरा का साधन तप है। चातुर्मास में तपाराधन विशेष होता है। आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के आज्ञानुवर्ती महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने औरंगाबाद में 25 अप्रेल 2001 को अक्षयतृतीया के अवसर पर तप-विषयक प्रवचन फरमाया था, जिसका आशुलेखन श्री नौरतनजी मेहता, जोधपुर ने किया। सम्यक् तपाराधन के लिए वह प्रवचन प्रस्तुत है।-**सम्पादक**

अज्ञान तिमिर का हरण कर ज्ञान की निर्मल जयोति में तप-साधना से कर्मकलिमल को समाप्त करने वाले अनन्त उपकारी तीर्थंकर भगवन्तों को वन्दन करने के पश्चात् खंती-मुत्ति आदि दशविध धर्म को धारण कर चतुर्विध संघ का रक्षण और संवर्द्धन करने वाले जीवन-नैया के खेवनहार, चतुर्विध संघ के नायक, तप संजीवनी का बोध कराने वाले अनन्त उपकारी गुरु भगवन्तों को भावपूर्वक वन्दन!

बन्धुओं!

अनन्त करुणानिधि खेदज्ञ, भेदज्ञ, सर्वज्ञ प्रभु महावीर ने अपनी अंतिम देशना में मोक्ष मार्ग का प्ररूपण करते हुए अमोघ वाणी में फरमाया-

नाणं च दसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा,
एस मग्गो ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसीहिं। उत्तराध्ययनसूत्र 28.2

आगमकारों का कथन है कि जितने भी तीर्थंकर भगवन्त होते हैं उनकी वाणी अमोघ होती है, अर्थात् वह वाणी खाली नहीं जाती। कभी कोई व्रत लेने वाला नहीं हो और वह वाणी खाली चली जाय तो वह आश्चर्य में समाहित होता है।

संत महापुरुष फरमाते हैं कि चार चीजें अमोघ होती हैं, वे कभी खाली नहीं जाती। कहा है-

अमोघं वासरे विद्युत्, अमोघं निशि गर्जनं,
अमोघं सतां वाणी, अमोघं देवदर्शनम्।

दिन में बिजली चमकेगी तो वर्षा अवश्य होगी। रात्रि में बादल गरजेंगे तो अवश्य बरसेंगे। तीर्थंकर भगवन्त की वाणी भी अमोघ होती है, वह खाली नहीं जाती। हमारे जैसे सुनने वाले चले जायें, तो भी प्रभाव होगा। तीर्थंकरों की वाणी श्रवण कर कोई न कोई व्रत अंगीकार करता ही है और चौथा है देव दर्शन। देव दर्शन हो जायेंगे तो वे कुछ न कुछ देकर ही जायेंगे, खाली हाथ नहीं

जायेंगे। तीर्थंकर भगवन्तों की वाणी के अनुसार मोक्ष मार्ग का प्ररूपण ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तप रूप में किया जा रहा है।

जितने भी तीर्थंकर भगवंन्त हो गये, शास्त्रकार कह रहे हैं- वे जिनेश्वर भगवन्त जिनका ज्ञान श्रेष्ठ और दर्शन उत्तम बताया जा रहा है। उनका ज्ञान एक बार आ जाता है तो, वापस नहीं जाता। केवलज्ञान का प्रकाश ही कुछ ऐसा है कि वह कभी समाप्त नहीं होता। पांच ज्ञानों में चार ज्ञान आते है और समय के साथ चले जाते हैं। चाहे मतिज्ञान हो, श्रुतज्ञान हो, अवधिज्ञान हो या मन:पर्यव ज्ञान हो। एक भव में कुछ ज्ञान अनेक बार आते है और चले जाते हैं। ज्यों ही मिथ्यात्व आया ज्ञान, अज्ञान में बदल जायेगा। सम्यक् दर्शन का प्रकाश जगेगा तो अज्ञान, ज्ञान में बदल जायेगा। सम्यक् दर्शन (क्षयोपशम समकित) एक भव में प्रत्येक हजार बार आता-जाता है। आज समाज में बड़ी भ्रमणा है कि अमुक गुरु के जायेंगे तो हमारी समकित चली जायेगी। किसी के यहां आने-जाने से समकित चली जायेगी, यह कहना या सोचना भ्रमणा नहीं तो क्या है?

भगवती सूत्र में गौतम गणधर और खंदक का वर्णन आता है। खंदक अव्रती था। वह मिथ्या मान्यता को मानने वाला था। वह भगवान के पास पहुँचा। प्रभु ने कहा- गौतम! तुम्हारा पूर्व मित्र खंदक आने वाला है। चौदह पूर्व के ज्ञाता खड़े हो जाते हैं। आज के श्रावक का सम्यक् दर्शन कैसा?

प्रभु का केवलज्ञान ऐसा नहीं कि आने के बाद वापस चला जाय। वह सदैव बना रहता हे। शरीर छूटने के बाद भी केवलज्ञान रहता है। उनका सम्यग्दर्शन भी ऐसा श्रेष्ठ-उत्तम है कि वह भी वापस जाने वाला नहीं। उनका सम्यक्त्व क्षायिक है। उपशम समकित वाला अर्न्तमुर्हूत में नीचे गिर जायेगा, लेकिन क्षायिक समकित आ गया तो वापस जाने वाला नहीं है। जिनका चारित्र यथाख्यात है, ऐसे श्रेष्ठ ज्ञान दर्शन के धारक तीर्थंकर भगवन्त ने मोक्ष के चार मार्ग कहे हैं- ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप । सम्यग्ज्ञान को मोक्ष का मार्ग बताया जा रहा है। ज्ञान द्वारा हेय-ज्ञेय और उपादेय का बोध होता है। दर्शन से अन्तर की श्रद्धा मजबूत होने वाली है। ज्ञान कितना ही हो जाय और यदि दर्शन नहीं हो तो मोक्ष नही हो सकता। अभवी नौ पूर्वो का ज्ञान कर लेता है, परन्तु श्रद्धा नहीं है तो उससे निर्जरा नहीं हो सकती, पुण्य बंध हो सकता है।

चारित्र कर्मों को रोकने वाला है। पुराने कर्मों को समाप्त करने वाला कोई साधन है तो वह है तप। तप भवरोगों का नाश करता है। तप ऊर्जा है, तप ज्योति है और ज्वाला भी। ज्योति इसलिये कि वह आत्मगुणों को प्रकाशित करता है। तप ज्वाला है, क्योंकि वह कर्मों को जला-बलाकर समाप्त करने वाला है। तप देवों द्वारा वंदनीय एवं अर्चनीय बनाता है एवं जीवन में विकारों की आग समाप्त कर सद्गुणों का बाग खिलाता है। तपस्वी देवों द्वारा सेवनीय बन जाता है जैसा कि उत्तराध्ययनसूत्र के 12 वें अध्ययन में प्रभु ने फरमाया -

सक्खं खु दीसइ तवो विसेसो,
न दीसई जाइविसेस कोई।
सोवागपुत्तं हरिएससाहुं
जस्सेरिसा इषि महाणुभावा।। उत्तराध्ययनसूत्र 12.37

आपने हरिकेशी मुनि का नाम सुना होगा। वह चांडाल कुल में जन्मा था। उसका न रूप सुन्दर था, न वर्ण ही, तप के अवलम्बन से वह विकारों के दावानल को शमन करने वाला था। गुरुदेव फरमाया करते थे कि एक सेठ की पुत्रवधू को यौवनावस्था में विकार सताने लगे। भोगों का नशा ऐसा होता है कि अच्छे-अच्छे तपस्वी गिर सकते हैं, तो उस बहन को जिसका पति परदेश गया हुआ हो उसे विकार सताना शुरू कर दे, कोई आश्चर्य नहीं है। विकार मानव को बेभान कर देते हैं। आंख रहते हुए ऐसा अंधा बना देते हैं जिसे रात में तो क्या दिन में भी दिखना समाप्त हो जाता है। नीति में कहा है-

'दिवा पश्यति नो घूकः काको नक्तं न पश्यति,
अपूर्वः कोऽपि कामान्धो दिवानक्तं न पश्यति'

अर्थात् उल्लू को दिन में दिखाई नहीं देता, कौआ रात को नहीं देखता, किन्तु कामान्ध व्यक्ति तो दिन.रात दोनों को नहीं देखता। अतः पुत्रवधू ससुर के पास जाकर कहने लगी कि आप इस वृद्ध नौकर को हटा दें और इसकी जगह जवान नौकर को रखें। वृद्ध समझ गया, वह अनुभवी था। सोचने लगा- विकारों के प्रभाव से यह ऐसा कह रही है। वृद्ध ने कहां- 'बेटी! मै नौकर दूसरा ले आऊंगा पर इसके पहले तुम्हें एक तेला करना होगा।' पुत्रवधू ने तप चालु कर दिया। तेले का प्रभाव ऐसा हुआ कि वह पुनः श्वसुर से आकर बोली- मुझे दूसरा नौकर नहीं चाहिए। क्यों, क्या हुआ? उसका मन बदल गया। तीन दिन के

तप में उसके विकार जल-बलकर स्वाहा हो गये।

तप कैसा करना? आज भगवान आदिनाथ का तप संपूर्ति दिवस है। हमें तप-साधकों के जीवन को समझना है। शास्त्र में वर्णन आता है-

कसेहि अप्पाणं जरेहि अप्पाणं- आचारांगसूत्र

जैसे.जैसे शरीर कृश होता जाय वैसे.वैसे कषायों में भी मन्दता आनी चाहिये। गुरुदेव फरमाया करते थे- तप में शरीर मुरझाता है, मन विकसाता है। शरीर का स्वभाव है- अन्न नहीं मिलेगा तो वह मुरझायेगा। **'अन्नं वै प्राणाः'** एक दिन अन्न नहीं मिले तो दिन निकालना मुश्किल हो जाता है।इसलिये कवि ने कहा-

न कुछ देखा ज्ञान-ध्यान में न कुछ देखा पोथी में।
कहत कबीर सुनो भाई साधु सब कुछ देखा रोटी में।।

पेट में भोजन है तो भगवान याद आते हैं। **भूखे भजन न होय गोपाला, ये लो अपनी कंठी माला।** शरीर का स्वभाव है, अन्न नहीं मिलने पर आपका और मेरा ही नहीं अनन्तबली भगवान आदिनाथ का शरीर कृश हो गया। तीर्थंकर भगवन्त अनन्त बली होते हैं। उनकी कनिष्ठ अंगुली में इतना बल रहा होता है कि वे अंगुली मात्र के दबाव से मेरु पर्वत धुजा दें। तप में शरीर तो क्षीण होता ही है, कषायों की क्षीणता भी होनी चाहिये। कषाय मन्द नहीं होते तो तप, तप नहीं ताप और संताप हो जाता है। तप करने वालों को प्रायः क्रोध आ जाता है, इसलिये एक कहावत सुनने में आती है-

तपस्या में तामस घणो, पंडिताई में वाद।
महन्ता में मान घणो, दुर्लभ बणणो दास।।

तपस्या में क्रोध आए तो शास्त्र की भाषा में वह तप नहीं, ताप है। एक गांव में संत आये। संत ने सुना- एक बहन तेले-तेले पारणा करती हुई वर्षीतप कर रही है। पहले वर्ष एक दिन उपवास, एक दिन पारणा, दूसरे वर्ष बेले-बेले पारणा और वर्षीतप। संत पातरा लेकर तपस्वी बहिन के घर पहुंच गए। शहरों में गोचरी भी समस्या है। आप सन्तों को रोकना तो चाहते हैं, पर कई घरों में गोचरी कैसे दी जाती है, विवेक नहीं होने से संतों को समस्या का सामना करना पड़ता है। कई घरों में धोवण पानी क्या होता है, मालूम नहीं। धोवण पानी की पृच्छा के उत्तर में जवाब मिलता है- बाबजी! आप तो आयंबिल खाते पधारो,

वहां अचित्त जल मिल जायेगा। कई बहिनें धोवण बनाया कैसे जाता है, नहीं जानती। संत-सती घंटे-घंटे घूमते रहे उन्हें भोजन तो मिल जाता है, पानी नहीं मिलता। धोवण-पानी का विवेक रखा जाय तो दोष से सहज बच जाते हैं और निर्दोष लाभ मिलता है।

संत तपस्वी बहिन के यहां गोचरी के लिए पहुँच गये। पूछा- बहन को देखा नहीं, बहन कहां है? घर के दूसरे लोगों में से एक बोला- ''महाराज! आप उणरो नाम मत लेवो। वा तपस्या तो घणी करे, पर उणरो टैम्परेचर 108 डिग्री बण्यो रेहव।''

तप की यह स्थिति कई भाई-बहिनों में मिल सकती है। तप की ही क्या ज्ञान की भी यही बात है। किसी को थोड़ा-बहुत ज्ञान क्या हो गया, वह वाद-विवाद करने के लिए तुरन्त तैयार हो जायेगा। 'मेरा सो सच्चा' यह बात छोड़ने के लिए कोई तैयार नहीं है। शास्त्रकार कहते हैं- 'सच्चा सो मेरा'।

मुझे कहना यही है कि तपस्वी का आदर्श जीवन होना चाहिये। आदिनाथ भगवान के तप संपूर्ति दिवस पर आप कषायों की मन्दता के लिए कुछ न कुछ संकल्प करें और तप के दूषणों को ध्यान में लेकर शुद्ध तप-साधना का अभ्यास करें। जो अनशन आदि बाह्य तप नहीं कर सकते वे विनय, स्वाध्याय रूप आभ्यन्तर तप कर अपने जीवन को समुज्ज्वल बनाने का प्रयास करें। इसी भावना के साथ...

समय की कीमत

1 वर्ष की कीमत – परीक्षा में श्रेणी गमाये हुए विद्यार्थी को पूछिए।
1 महीने की कीमत – असमय में प्रसव वाली माता को पूछिए।
1 सप्ताह की कीमत – बीमार पड़े हुए मजदूर को पूछिए।
1 दिन की कीमत – निर्धारित समय पर अर्जी न भरने वाले उम्मीदवार को पूछिए।
1 घण्टे की कीमत – परीक्षा में विलम्ब से पहुँचने वाले परीक्षार्थी से पूछिए।
1 मिनट की कीमत – गाड़ी चूकने वाले यात्री को पूछिए।
1 सैकण्ड की कीमत – दुर्घटना से बचने वाले भाग्यवान को पूछिए।
1 सैकण्ड के शतांश भाग की कीमत – दौड़ने में रजत पदक प्राप्तकर्त्ता को पूछिए।

Spread of Jainism in India and Abroad

● **Prakash Lall Jain**

As it is well known and accepted by all the historians that Jainism had already been established as an important religion in various provinces of india before Mahavira and the Buddha began their missionary activities. During their period, Magadha, Kausala, Kapilvastu, Vaisali, Pava, Mithila, varanasi, Simhabhumi, Kausambi, Avanti, etc. were prominent Jaina centres. After Mahavira's parinirvana, Jainism was patronised by the Sisunagas, Nandas, Kharavela, Mauryas, Satavahanas, Guptas, Paramars, Chandelas, Kalakuris, and others who provided all possible facilities to develop its literature and cultural activities. .The Southern part of India was also a great centre of Jainism. Bhadrabahu and Visakhacharya with their disciples migrated to the south and propagated Jainism there. Andhra, Satvahanas, Pallavas, Pandyas, cholas, Chalukyas, Rastrakutas, Gangas, and others were main dynasties which rendered sufficient royal patroanage and benefits to Jainism and its followers through the spirit of religious toleration which existed in this region. The Jainas were given magnificent grants for their spiritual purpose. Numerous Jaina temples and sculptures throughout the ages were erected by the kings of that time and many facilities were provided for literary services throughout India.

Jainism crossed Indian borders from south India in about eighth century BC, if not earlier and became one of the most imoportant religions of Ceylon, which was known in those days by the name Lanka, Ratnadvipa or Simhala. The Mahavamsa refers to the existence of Jainism in Ceylon even before the arrival of Buddhism. According to it, Pandukabhaya built a house at Anuradhapur for the Niganth Jotia and Giri and some Niganthas, Jaina tradition takes the history of Jainism in Ceylon even prior to its Aryanization, or the arrival of Aryas. Ravana, a king of Lanka long ago is said to have erected a Jaina temple there at Trikutgiri. Another Statue of Parasvanatha, the 23rd Tirthankara found in the caves of Terapur is also said to be from Lanka. Jainism was a living religion of Ceylon up to the 10th century AD.

Kalkacharya, another Jain monk, is said to have visited

Burma or Svarnabhumi((Uttaradhyana Niryukti, 120), Rishabh deva is said to have travelled to Bhali (Bactria), Greece, Svarnabhumi, Panhave(Iran) etc (Avasyaka Nir. 336-37).. Tirthankar Parshvanatha also want to Nepal. The existence of Jainism can also be proved in Afghanistan. Tirthankara images in the Kayotsarga pose or meditating pose have been found in Vahakaraj Emir (Afghanistan). Digambara Jaina monks have been in Iran, Siam and Philistia. Greek writers also mention their existence in Egypt, Abysiniya, and Ethyopia.

Jaina art and architecture

The Jainas have been amongst the foremost in contributing to the field of art and architecture since the early days. The images of Tirthankara Rishabhadeva and the figures of standing or seated nude yogins found inscribed on some terrocotta seats are ample proof of the same. The relics of the prehistoric Indus valley civilisation, discovered at Mohenjodaro, as well as nude Harappan red stone statue are almost equally old. The latter is remarkably akin to the polished stone torso of a Jina image from Lohanipur (patna) which is ascribed to the Mauryan times(4th B.C.), King Kharavela of Kalinga, as the Hathigumpha inscriptions speak, reinstalled the Jaina image which had been taken away by Nanda to Magadha in 4th Century B.C.. During the Satvahana period (60.B.C.to 225A.D.) Mathura and Saurashtra were the main centres of Jainism. Gandhara art and Mathura art belong to Kusana period(1st B.C. to 2nd A.D.) in which Jainism flourished to Mathura and the Ardhaphatika sect, Yapaniya sangha and Nagara art came into existence.

Gupta period (4th to 7th Century A.D.) is said to be the golden period of ancient indian culture. Harigupta, Siddhasena, Harisena, Ravikirti, Pujyapada, Patrakesari, Udyotanasuri and other famous Jain acharyas existed in this period and they actively helped in spreading the message of Mahavira all over India and abroad. Karnataka, Mathura, Hastinapur, Saurashtra, Avanti, Ahichhatra, Bhinnamala, Kausambi, Devagumpha, Vidisa, Sravasti, Varanasi, Vaisali, Patilputra, Rajagriha (now Rajgiri), Champa, and others were the main centres of Jain art and

architecture and these places have been mentioned in Jaina literature at various places. After the Gupta period, Kakkula, Vatsaraja and Mahendrapala were the Jaina kings in the Pratihara dynasty. King Munja, Navasaahasanka and Bhoja were ardent followeres of Jainism. Dhanapala, Amitagati, Manikyanandi, Prabhachandra, Asadhara, Dhanjaya etc. had contributed profusely to the literary field during the same period. Chittor was the capital of paramaras, during the early period, where Kalakacharya and Haribhadara devoted their entire lives for the development of Jaina art and architecture.

During the Chandela dynasty, Khajuraho, Devagarh, Mahoba, Madanapur, Chanderi, Ahar, Papora and Gwalior became famous for their Jaina art. Some of the important inscriptions, toranas, images and other sculptural material were found in Tripuri. As mentioned earlier, Bihar has been a prominent state since very early days with regard to Jaina culture. It is said to be the 'Parinirvana bhumi' of so many Tirthankaras and is heavily enriched through Jaina statues, relics and sculpture at Rajgarh, Nalanda, Parsvanath hill, Simhabhumi, Barabar hill, Patna, Pavapuri etc. The earliest Jaina images were recovered in Bengal from Surohar and Mandoil, which are of Mathura style. The images of Jaina Tirthankaras, found in Orrissa at Udaigiri-Khandagiri and other places such as keonjhar, Mayurabhanja, Jaipore, Cuttack are very beautiful from artistic point of view.

Gujarat and Rajasthan have been strongholds of Jainism since an early time. Shatrunjaya and Girnar are the siddhakshetras of Jainas. Rastrakutas and Chalukyas, Pratiharas, Paramaras, Chauhan and other dynasties patronised Jainism and its art and architecture. Hemchandracharya was a court poet of Jaisimha and Kumarapala. Vastupala and Tejapala, who were ministers of Baghelas of Solanki branch built a large number of Jaina temples at Abu, Girnar, Satrunjaya, Ranakpur etc. Famous temples of that period were also built at Jaisalmer, Sirohi, Udaipur, Jodhpur, Nakoda, Jaipur, Alwar and so many other places. the exitence of Jainism in Punjab and Sindh can be traced out long before the Christian era, from the sites of Mohenjodaro, Harappa,

Takshashila, Simhapur, Sidhudesh and Lahore.

The inscriptinal history and Jainism in Maharashtra starts with the Parle inscription of 1st Century A.D., which commences with "Namo Arihantanam". Kejhar, Pavanar, Nagpur, Bhandara, Ramtek, Akola, Karanja, Achalpur, Latur, Bhadrawati etc. are the main ancient Jain sites with archeological remians. Jaina caves are found at Ellora, Nasik, Dharasive, etc. besides, Pratishthanpur, Belgaon, Kolhapur, Ehol, Alaktakanagara, Kunthalgiri, Ardhapur, Kandhar, Karad, Mahimagiri, Vatapi and Meghuni have been main centres of jainism where huge and magnificent jaina idols and inscriptions are found in temples. Mrgesavarvarman's inscription (450-478 A.D.) states that a huge donation was made to Digambaras, Shwetambaras, Kurchakas and Yapanians. Belgaon and Kolhapur were found ruled over by Silaharas of Konkana who built huge Jaina temples, like Adataraditya, Satyavakya, Chandraprabha, Ratta etc. Vatapi, Ehol, Meghuli were also Jaina centres of this period when pulaksesi First, Kirtivarman and Ravikirti constructed Jaina temples.

Andhra Pradesh has been a stronghold of Jainism. Acharya Kundakunda (1st Centuary A.D.), the spiritual leader of the time hailed from village Kondakunda, situated on the border of Andhra Pradesh. King Vishnuvardhana of Chalukyas, Akalavarsa, Amoghavarsa and Krishnaraja of Rashtrakutas, Bhima, Ganga, Vijayaditya, Durgaraj etc. Of vengis, Tailapa, Vikaramaditya of Badami Chalukyas, Some kings of Velanatichoda period patronised Jainism by way of constructing temples, Vasadis and Vidyapeethas. Some of them, afterwards, were occupied by Virasaivaitas and Lingayatas, who have been great destroyers of Jaina monuments and the community as well.

Jainsim in Karnakata goes back to at least Bhadrabahu and Chandragupta Maurya, who migrated to south with twelve thousand disciples due to severe calamity and famine in the north. Jainism was its state religion for about seven hundred years during which hundreds of Jaina monuments were erected by the kings. Pujyapada, Prabhachandra, Jinasena, Gunanndi, Patrakesari,

Pushpadanta, Vidyananda, Anantvirya, etc. got full patronage of the dynasty. Of the kings, the name of Rachamalia Satyavakya may be specially mentioned under whose reign, Chamundaraya, his great minister erected the colossal statue of Gomateswara Bahubali, the unparalleled statue in the world. After the reign of Rashtrakutas, Jainism got a set back and Vasavas who came to power tried to destroy Jain religion and prosecuted many Jains. From Jaina architectural stand-point, the Karnataka possesses many famous ancient Jaina sites, where rich monuments are available.

Jainism entered Tamilnadu most probably from Kalinga in around 4th Century B.C. Visakhacharya proceeded to Chola and Pandya countries with the entire Munisangha. It can be supported by the caves containing beds carved out in the rock found in hills and mountains around the Pudukottai, Madura and Tinnevelly and rock-out sculptures and inscriptions in the hills of the north Arcot district which indicate the existence of Jainism in Tamilnadu in the 3rd Century B.C.Kanchi was one of the important seats of learning in south India. It was the capital of Pallavas, who were mostly Jains in early centuries. The inscriptions of Jinakanchi refer to some prominent Jianacharyas of the city, like Kundakunda, Samantabhadra, Jinachandra, Pujyapada, Akalanka, Anantavirya, Bhavanand, Mallisena etc. The north and south Arcot regions are very rich from the standpoint of Jaina achitecture. Sittanavasal, Nattamalai, Tenimalai, Bommanmalai, Malamala and Samanar Kudagu had been the Jaina centre since last two thousand years. Most of these places have rich paintings and sculptures of Sittanvasala tradition which may be compared with Ajanta and Sigirya. Some of the rock-out temples like Samanar Kudagu were converted into Vishnu temples.

Madura was the capital of Pandyas, who showed very favourable attitude towards Jainism. Its neighbouring hills. like Annaimalai, Nagamalai, Muttupatti, Eruvadi, etc. are very rich from Jaina sculptural and painting stand-point. Various Jaina epics were written in this period by prominent Jainacharyas like Pujyapada, Vajranandi, Aryanand and Patrakesari. Afterwards,

Jainism was patronised by Kadamba kings. Thus, the survey of Jianism in south India gives an apparent picutre of its position that it was popular during the period of Tirthanakara Mahavira or even earlier to him. The popularity got augmented gradually and Digambara sect became prominent there. During 11th Century A.D., Vaisnavism, Alawara and Lingayatas came into existence and stood against Jainism causing a serious blow to its propagation. Their devotees committed heavy atrocities on Jaina society, temples, sculptures and vasadis. The massacres went on the Jaina centres were converted into Saiva or Vaisanava temples. Jaina images and stupas have been found from many excavations in that region and these are preserved in museums at Lucknow and Patna. The crystallised forms of iconography were transferred to rocks on hills like Vaibhara hill, Udaigiri hills and Kalagumalai. The Jaina iconography was developed during the Gupta period in the 4th Century A.D.

Thus, it is abundantly clear that Jainism, one of the most ancient, animistic and indigenous religions has been contantly and unforgettably a part of history and culture. Its philosophy, ethics, dogmas, spiritual disciplines and practices are based on truth and non-violence with the nature of humanistic approach, inter-relgious dialogue and understanding which can be easily perceived through the extensive and perennial literature. These disciplines and practices are as applicable in today's context as ever in the past.

-44, Sardar Club Scheme, Jodhpur-342011

क्षमा-याचना

जिनवाणी के पाठकों एवं लेखकों से हमारा निरन्तर सम्पर्क रहता है। सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल एवं जिनवाणी परिवार की ओर से यदि आपके हृदय को पत्र व्यवहार आदि से ठेस पहुँची हो तो, हम निर्मल हृदय से क्षमायाचना करते हैं।

प्रकाशचन्द डागा
मन्त्री

डॉ. धर्मचन्द जैन
प्रधान सम्पादक, जिनवाणी

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर

क्रमशः(2)

महामंत्र णमोक्कारः स्वरूप एवं माहात्म्य

■श्री जशकरण डागा

मंत्रराज के पांच पदों में रंग.स्थापना-पाँचों पदों के प्रस्थापित रंग, उन पदों की विशेषताओं के प्रतीक हैं। यथा-प्रथम पद अरिहन्त के लिए 'श्वेत' रंग है। यह रंग राग.द्वेष रहित, शान्तिप्रदायक, निर्मल आत्माओं का प्रतीक है। द्वितीय पद-सिद्ध 'लाल' वर्ण का है। यह रंग परिपक्व अनाज की तरह परिपक्व विशुद्ध आत्माओं का जो पूर्ण परमात्म स्वरूप हो चुके है, का प्रतीक है। तृतीय पद- आचार्य 'पीला' है। यह रंग सूखे वृक्षवत् पाप रूप हरियाली को नष्ट करने का प्रतीक है। चतुर्थ पद-उपाध्याय 'नीला' है। यह रंग अल्प पाप रूप कलिमल शेष रहे भावित आत्माओं का प्रतीक है। पंचम पद-साधु 'काला' है। यह रंग उदासीन भाव का सूचक है तथा पाप कलिमल को धोने वाली साधनारत संयमी आत्माओं का प्रतीक है। इन रंगों की स्थापना आचार्यो द्वारा प्रतीकात्मक रूप में की गई है। आगमों में इन रंगों की स्थापना का वर्णन नही मिलता।

परमेष्ठी स्वरूप- महामंत्र णमोक्कार में समाहित पंच परमेष्ठी(अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय तथा साधु) का स्वरूप संक्षेप में क्रम से दिया जा रहा है।

प्रथम पद- णमो अरिहंताणं

''घणघाइकम्महणा,तिहुवणवइभव्वकमलमत्तंडा।
अरिहा अणंतनाणी,अणुवमसोक्खा जयंतु जए।।''समणसुत्तं सूत्र 7

अर्थात् चारों घाती कर्मो का सर्वथा क्षय कर तीन लोक में विद्यमान भव्य जीवों रूपी कमलों को विकसित करने में जो सूर्य समान है, अनंत ज्ञानी है और अनुपम सुखमय है, वे अरिहंत, जगत में जयवंत है।

''ललिआ सहाव-लट्ठा, समप्पइट्ठा अदोस-दुट्ठा गुणेहि जिट्ठा।
पसायसिट्ठा तवेण पुट्ठा, सिरीह इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा।।''पंचप्रतिक्रमण सूत्र

अर्थात् वे स्वरूप से सुन्दर, समभाव में स्थिर, दोष रहित, गुणों से अत्यन्त महान्, कृपा करने में उत्तम, तप के द्वारा संपुष्ट, लक्ष्मी से पूजित व ऋषियों से सेवित है।

विशेष-1.'अरहन्त' शब्द के पर्याय शब्द व अर्थ इस प्रकार है- (1) अरिहन्त-अरि+हन्त=कर्म रूप शत्रुओं को जिन्होंने नष्ट कर दिया है। (2) अरुहन्त-अ+रुह+अन्त=जो पुनः पैदा न हो (अरूह-न उगना व अंत रहित)।(3) अरहंत-

अरह+अंत= पूजनीय, योग्य, आसक्ति रहित पूर्ण अनासक्त।

2. प्रथम पद- अरहन्त या अरिहन्त- वर्तमान में दोनों ही शब्द प्रचलित हैं, जो सामान्य अपेक्षा से उचित हैं।

3. अरिहन्त देव, जीवनमुक्त दशा को प्राप्त अनंत चतुष्टय (अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत चारित्र व अनंत बलवीर्य रूप) के धारक होते हैं। वे अठारह दोष रहित व बारह गुण सहित होते हैं।

अठारह दोष-

"नहीं अज्ञान निद्रा मिथ्यातम, नहीं राग और द्वेष जहां।
नहीं अव्रत काम हास्यादि, छ नहीं पंच अंतरा वहां।।

1. अज्ञान 2. निद्रा 3. मिथ्यात्व 4. राग 5. द्वेष 6. अव्रत 7. काम 8. हास्य 9. रति 10. अरति 11. भय 12. शोक 13. जुगुप्सा 14. दानान्तराय 15. लाभान्तराय 16. भोगान्तराय 17. उपभोगान्तराय 18. वीर्यान्तराय।

बारह गुण-

1. अनंत ज्ञान 2. अनंत दर्शन 3. अनंत चारित्र (स्वस्वरूप में अनंत स्थिरता) 4. अनंत तप 5. अनंत सुख 6. क्षायिक समकित (निराकुल एवं विशुद्ध आत्म प्रतीति) 7. शुक्ल ध्यान (स्व स्वरूप का निर्विकल्प ध्यान) 8. अनंत दान लब्धि (अनंत प्राणियों पर अनंत अभय दान स्वरूप शुद्ध स्वच्छ भाव से परिणमन) 9. अनंत लाभ लब्धि (अव्याबाध आत्म-स्वरूप की प्राप्ति का अनंत लाभ) 10. अनंत भोग लब्धि(अनंत आत्मिक ऐश्वर्य का प्रतिक्षण भोग) 11. अनंत उपभोग लब्धि (आत्मा के परमानन्द की प्रवाह रूप में पुनः पुनः अनुभूति) 12. अनंतवीर्य लब्धि(जिसके आलम्बन से आत्मा की अनंत सामर्थ्य रूप शक्ति प्रकट होती है व जिसमें किंचित् न्यूनता या वियोग न हो)। उपर्युक्त बारह गुण सभी केवली भगवंतों में मिलते हैं।

4. अन्तराय कर्म के क्षय से दानादि पांच लब्धियां प्रगट होती हैं, जिससे अरिहन्त दानादि देने को सम्पूर्णतः समर्थ हैं, तथापि वे पूर्ण वीतराग होने से, पुद्गल द्रव्य रूप से, इन दानादि लब्धियों की प्रवृत्ति नहीं करते हैं। मुख्यतः ये लब्धियाँ भी क्षायिक भाव से(औदयिक भाव से नहीं)प्राप्त होने से शुद्ध आत्म स्वरूप होती हैं।

5. अरिहन्त दो प्रकार के होते हैं- 1. तीर्थंकर व 2. सामान्य केवली। तीर्थंकरों के बारह गुण इस प्रकार होते हैं- 1. अनंत ज्ञान 2. अनंत दर्शन 3. अनंत चारित्र

4. अनंत बलवीर्य 5. दिव्य ध्वनि 6. भामण्डल 7. स्फटिक सिंहासन 8. अशोक वृक्ष 9. कुसुम (अचित्त) वृष्टि 10. देव दुंदुभि 11. छत्र धरावे 12. चंवर बिजावे।

6. तीर्थकर व सामान्य केवली भगवन्तों में मुख्य अन्तर इस प्रकार है-

1. चार तीर्थ- साधु, साध्वी, श्रावक व श्राविका की स्थापना तीर्थकर ही करते हैं। उनकी वाणी आगम बन जाती है तथा उनका धर्मशासन चलता है।
2. समवशरण की रचना तथा अष्टप्रतिहार्य तीर्थकरों के ही होते हैं।
3. संसार के सर्वाधिक सत्ता, सम्पत्ति के धारक इन्द्र, चक्रवर्ती, बलदेव, वासुदेव आदि तथा विशिष्ट विद्वान, दार्शनिक आदि भी तीर्थकरों से प्रभावित होते हैं।
4. तीर्थकर उत्कृष्ट पुण्यशाली सर्वोत्तम महापुरुष होते हैं।
5. महाविदेह क्षेत्र में अधिकतम 160 व न्यूनतम 20 तीर्थकर सदैव रहते हैं। वर्तमान में अभी सीमंधर स्वामी आदि तीर्थकर बीस विहरमान के नाम से विद्यमान हैं।
6. तीर्थकरों व सामान्य केवली भगवंतों की आयुष्य क्रमशः जघन्य 52 वर्ष व 9 वर्ष (गर्भ सहित) तथा उत्कृष्ट 84 लाख पूर्व व 2 क्रोड़ पूर्व की होती है।
7. तीर्थकर अरहन्तों का स्वरूप दर्शाने वाली संक्षिप्त भाव स्तुति यहां दी जाती है-

"अरिगंजन अरिहन्त, जगत गुरु संत हैं।
केवल कमला कंत, महायशवन्त हैं।।
इन्द्र नरेन्द्र मुनीन्द्र, सुसेव करन्त हैं।
द्वादश गुण भगवंत सदा जयवन्त हैं।।

अरिहन्त भगवन्त के अनेक पर्यायवाची नाम है-

1. महादेव -

महारागो, महादोसो, महामोहो तहापरो।
कसाओ य हओ जेण, महादेवो स वुच्चई।।(सुभाषित)

अर्थात् जिसने महाराग, महाद्वेष, महामोह और कषाय का (सर्वथा) विनाश कर दिया है, उसे महादेव (अरिहन्त) कहते हैं।

2. विधाता- मोक्ष मार्ग के विधायक होने से।

3. त्रिपुरारि-मिथ्यात्व, कषाय व अज्ञान इन तीन अरि (शत्रुओं) का नाश कर देने से।

4. **त्रिनेत्र**- दो द्रव्य नेत्रों के अतिरिक्त तीसरा केवलज्ञान रूपी चक्षु प्रकट हो जाने से।

5. **शंकर**- त्रिभुवन के कल्याणक होने से।

6. **पुरुषोत्तम**- चक्रवर्ती और देवेन्द्र से पूजित लोक के सर्वोत्तम महापुरुष होने से।

7. **बुद्ध**- जिनके ज्ञान की अर्चना देवों ने की है, ऐसे अनुत्तर केवलज्ञान के बोध से सुशोभित होने से।

अन्य नाम 8. जिन 9. वीतराग 10. तीर्थंकर 11. केवलज्ञानी 12. सर्वज्ञ 13. सर्वदर्शी 14. भगवान 15. परमात्मा आदि। (क्रमशः)

-डागा सदन, संघपुरा मौहल्ला, टोंक (राज.)

महामंत्र की महिमा

सुश्री रिंकी जैन

तीन वर्ष पूर्व की घटना है, मेरी बारहवीं की राजस्थान बोर्ड, अजमेर की परीक्षाएँ चल रही थी। मेरा परीक्षा केन्द्र मेरे निवास से करीबन दस किलोमीटर दूर था। मैं अपने पापाजी के साथ उनके दो पहिया वाहन पर प्रातः सात बजे परीक्षा देने जाती थी। एक दिन परीक्षा देने जाते समय सी–स्कीम में सचिवालय के पीछे की सड़क पर पापा की गाड़ी बन्द हो गई। काफी प्रयास के बावजूद गाड़ी चालू नहीं हुई। हमारी दोनों की हालत बड़ी खराब हो रही थी। सुनसान जगह, दूर दूर तक कोई अन्य वाहन नजर नहीं आ रहा था। परीक्षा का समय होने को था। अन्त में मैंने मन ही मन महामंत्र नवकार का जाप प्रारंभ कर दिया । एक एक मिनट बहुत व्याकुल कर रहा था, किन्तु मनमन्दिर में महामंत्र का जाप अनवरत चल रहा था।

इसे चमत्कार ही कहूंगी कि दूसरे ही पल न जाने कहां से एक मोटर साइकिल स्वतः ही हमारे पास आकर रुकी, जिस पर दो नवयुवक सवार थे। मैं स्कूल यूनीफार्म में थी, अतः उन्होंने स्वयं आगे होकर पापाजी से पूछा, क्या इन्हें परीक्षा देने जाना है। जैसे ही पापाजी ने हाँ कहाँ, तुरन्त ही उस नवयुवक ने अपने साथी को हमारी बन्द गाड़ी के पास छोड़ा एवं मुझे तथा पापाजी को अपनी गाड़ी पर बिठाकर परीक्षा केन्द्र छोड़ दिया, जो वहा से करीब चार पांच किलोमीटर दूर होगा एवं पुनः पापाजी को अपनी बन्द पड़ी गाड़ी के स्थान पर छोड़कर चला गया। आज भी जब मुझे वे क्षण याद आते हैं, महामंत्र नवकार में मेरी आस्था प्रबल से प्रबलतर होती जाती है।

– सुपुत्री श्री बाबूलाल जी जैन
ई 40, रामनगर विस्तार, सोडाला, जयपुर (राज.)

महत्त्व त्याग का है

●*श्री कन्हैयालाल लोढ़ा*

जे य कंते पिए भोए, लद्धे विपिट्ठी कुव्वई।
साहीणे चयइ भोए, से हु चाइत्ति वुच्चई।।

अर्थात् जो मानव सुन्दर, रुचिकर व प्रिय भोग.सामग्री मिलने पर भी उस ओर अपनी पीठ कर देते हैं, उससे मुंह मोड़ लेते है तथा प्राप्त भोगों व भोग, सामग्री को त्याग देते हैं, वे ही वास्तव में त्यागी हैं।

उपर्युक्त गाथा में त्याग की महिमा बताई गई है। गाथा के गहन अर्थ को समझने के लिए मानव जीवन पर दृष्टिपात करना होगा। मानव जीवन में तीन स्थितियां दिखाई देती है-1.भोगमय जीवन 2.भोग रहित जीवन और 3.त्यागमय जीवन।

1.भोगमय जीवन

जीवन की तीन स्थितियों में प्रथम स्थिति भोगमय जीवन की है। इसमें मानव इन्द्रिय और मन के अनुकूल सुनने, देखने, सूंघने,स्वाद लेने आदि के प्राप्त पदार्थो का भोग कर सुखानुभव करता है। वह मानता है कि विषयों का भोग ही सुख है, भोग ही जीवन है, भोगों की प्राप्ति में ही जीवन की सार्थकता है।

2. भोगहीन जीवन

दूसरे प्रकार के मानव वे हैं जो विषय भोगों को सुखदायी तो मानते हैं परन्तु भोग्य पदार्थो का अभाव होने से या भोग्य पदार्थो की जानकारी नहीं होने से या इन्द्रियों की भोगने की शक्ति क्षीण होने से भोगों से बचे रहते है तथा पदार्थो को क्रय करने में या प्राप्त करने में असमर्थ होने से परवशता से भोगों की कामना भी नहीं करते हैं। वनवासी मनुष्य, निर्धन एवं अभावग्रस्त व्यक्ति आदि इसी श्रेणी में आते हैं। ये मनुष्य बहुत प्रकार के भोगों से बचे रहते हैं, परन्तु उन भोगों को बुरा या दु:खद नहीं मानकर सुखद मानते हैं।

3. त्यागमय जीवन

तीसरे प्रकार के मानव वे हैं जिन्हें भोग की सामग्री प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, परन्तु वे भोग दु:खद हैं, इस यथार्थता को जानकर भोगों का त्याग कर देते है।

उपर्युक्त तीन प्रकार के मानवों के जीवन को समझने के लिए हम बीज,

वृक्ष और फल के उदाहरण को ले सकते हैं। वृक्ष और फल का मूल बीज है। बीज को अनुकूल भूमि, जल(सिंचाई) और खाद(आहार) मिलने पर वह पनपता है, पौधा बनता है और उसके फल लगते हैं। वे फल पक कर अवश्य खिरते हैं, फिर वह पौधा निष्फल हो जाता है। इसी प्रकार विषय भोग में सुख है, यह मान्यता ही भोग की कामना उत्पत्ति का बीज है। प्रकृति या प्रयत्न की अनुकूलता रूप सिंचाई या खाद मिलने से कामना पनपती है और पौधा बनती है, फूलती है, फलती है। वे फल अवश्य खिरते हैं, अलग होते हैं। परिणाम में उस पौधे के लिए फल पाना निष्फल हो जाता है। दूसरे प्रकार की स्थिति यह है कि बीज को अनुकूल जल व खाद न मिलने से उगता ही नहीं है। तीसरे प्रकार की स्थिति यह है कि बीज दग्ध हो जाने से राख हो जाता है या निःसत्त्व हो जाता है, फिर वह उगने के योग्य नहीं रह जाता है।

ऊपर के उदाहरण में पहले प्रकार की स्थिति भोगी जीवों की है, जिन्हें प्रयत्न और प्रकृति (कर्मोदय) की अनुकूलता से भोग सामग्री मिलती है। जिसे पाकर वे फूले नहीं समाते व अपना जीवन सफल मानते हैं। परन्तु देखते ही देखते वे भोग भोगने में असमर्थ हो जाते हैं। उनको मिला भोगसुख निष्फल हो जाता है। विषय सुख के भोगी को दुःख भोगना ही पड़ता है। अतः भोग बुरे है।

दूसरे प्रकार की स्थिति उन मानवों की है जिनमें भोग सुख पाने की कामना या राग का बीज तो विद्यमान है, परन्तु उसे अनुकूल निमित्त नहीं मिलने से नहीं पनपता है। इससे उस बीज की शक्ति को कम समझ लेना भूल है। उस बीज में पौधा बनने की क्षमता में कोई कमी नहीं है। जैसे वट वृक्ष के राई के समान नन्हें बीज में अगणित वट वृक्ष उत्पन्न करने की क्षमता है, अप्रत्यक्ष रूप से उसमें असंख्य वट-वृक्ष विद्यमान हैं। इसी प्रकार जिस प्राणी की मान्यता में 'विषय भोग ही सुख है' यह बीज विद्यमान है, फिर भले ही वह विषय भोग की सामग्री के अभाव आदि किसी भी कारण से भोग नहीं भोगे, फिर भी वह वस्तुतः भोग में ही आबद्ध है, उसमें असंख्य भोगों की कामना विद्यमान है, केवल भोग सामग्री रूप अनुकूल निमित्तों के अभाव में प्रादुर्भाव नहीं हो रहा है। जैसे ही भोगानुकूल निमित्त सामग्री मिली कि भोग कामनाओं की फसल लहलहाने लगेगी। अतः भोग.सामग्री के अभाव में भोग न भोगने का महत्त्व नहीं है, वह त्याग भी नहीं है। फिर भोग न भोगने से नवीन कर्म संस्कारों का निर्माण नहीं होता है उतने ही

नवीन कर्म नहीं बंधते है, या कम बंधते हैं। इस दृष्टि से निमित्तों के अभाव में भी भोग न भोगना अच्छा ही है, बुरा नहीं। बुरा है भोग भोगना।

तीसरे प्रकार की स्थिति उन प्राणियों की है जिनका 'भोग में सुख है' इस मिथ्या मान्यता रूप बीज का विवेक से यथार्थ ज्ञान हो गया है और जिसको विषय सुख की निस्सारता का, व उससे होने वाले दु:खों का बोध हो गया है। उसका यह मिथ्या मान्यता (मिथ्यात्व) रूप संसार का बीज जलकर राख(क्षय) हो गया है या तप से भुनकर नि:सत्त्व हो गया है, वही त्याग कर सकता है।

वह जानता है कि मधुर संगीत.श्रवण, सुन्दर दृश्य.दर्शन, रुचिकर भोजन, अनुकूल स्पर्शन, सम्मान आदि के भोग से मिलने वाला सुख सदा समान नहीं रहता है। वह प्रतिक्षण क्षीण होता जाता है, क्षीण होते-होते अंत में पूर्ण क्षीण होकर नष्ट हो जाता है और नीरसता में बदल जाता है। नीरसता किसी को भी पसन्द नहीं है फलत: सुख.प्राप्ति के लिए नई कामना का जन्म होता है। उस कामना पूर्ति से उत्पन्न होने वाला सुख भी अन्त में नीरसता में परिवर्तित हो जाता है और फिर नई कामना का जन्म होता है। इस प्रकार कामना उत्पत्ति, पूर्ति एवं नीरसता का चक्र चलता ही रहता है और परिणाम में शून्य के अतिरिक्त कुछ नहीं मिलता है।

भोग की कामना.उत्पत्ति से लेकर जब तक पूर्ति न हो, तब तक विवशता, परवशता, अभाव व अशान्ति रूप दु:ख रहता ही है। यही नहीं भोग की पूर्ति में भी पराधीनता व वियोग के भय का दु:ख बना रहता है।

बचपन से अब तक हमने सुनने, देखने, खाने-पीने, सम्मान आदि के प्रतिदिन अनेक सुखों का भोग किया है। फिर भी सुख कुछ नहीं बढ़ा है। यदि सुख थोड़ा-थोड़ा भी प्रतिदिन बढ़ता तो अब तक सुख सरोवर बन जाता। परन्तु हम सबका अनुभव है कि सुख-भोग की सामग्री तो बहुत बढ़ी है, परन्तु सुख कुछ भी नहीं बढ़ा है, प्रत्युत् यह भी कहा जा सकता है कि हम बचपन में जितने सुखी थे उतने आज नहीं हैं, शांति और सुख घटा ही है। इससे यह भी परिणाम निकलता है कि भोगजन्य सुख कितना ही भोगा जाय, परिणाम शून्य ही रहता है, सुख बढ़ता नहीं है।

आज विज्ञान ने फुटपाथ पर सोने वाले साधारण व्यक्ति को भी रेडियो, सिनेमा, विद्युत् प्रकाश, टेलीविजन, टेरेलीन, ट्रेन, बस, बर्फ आदि खाने-पीने,

ओढ़ने-पहनने,देखने-सुनने, गमनागमन आदि इन्द्रिय भोगों की सुख.सामग्री इतनी और ऐसे उपलब्ध कर दी है जितनी और जैसी पहले अकबर, अशोक आदि सम्राटों को भी उपलब्ध नहीं थी। इतनी विपुल भोग की सामग्री उपलब्ध होने पर भी आज के साधारण मानव तो घोर दु:खी हैं ही, बड़े से बड़े सत्ताधारी, शक्तिधारी, सम्पत्तिधारी एवं शिक्षाविद् भी अशान्ति, द्वन्द्व, अभाव, तनाव, मनमुटाव आदि महादु:खों से ग्रस्त हैं। इससे भी यही फलित होता है कि भोग. जनित सुख व्यर्थ है।

भोग रोग है

भोग रोग है। भोग वासना ही मन में विकार पैदा करती है, लहरें पैदा करती है, चित्त को अशान्त-आकुल बनाती है। विकार का ही दूसरा नाम रोग है। इससे तन, मन, आत्मा सभी रुग्ण होते हैं। कारण कि भोग सुख के वशीभूत व्यक्ति आहार-विहार आदि में संयम नहीं रख पाता है, जिससे शरीर में रोगोत्पत्ति होती है। शरीर में जितने भी रोग हैं, उनमें से अधिकांश रोग असंयम के ही फल हैं। भोग.वासना से मन अशान्त, आकुल, तरंगित, विषम हो जाता है। वासना के विकार का विष मन को विषैला-रोगी बना देता है। अत: मन भी विकारी-रोगी बन जाता है तथा भोग रूप कामना या वासना की उत्पत्ति, अपूर्ति, पूर्ति आत्मा को पराधीन बना देती है, शरीर और संसार से संबंध स्थापित कर बन्धन में डाल देती है, राग-द्वेष उत्पन्न कर देती है जिससे आत्मा विकारी, दोषी व दु:खी बन जाता है। अत: विषय.वासना रूप भोग के त्याग में ही तन, मन, आत्मा की स्वस्थता एवं प्रसन्नता निहित है। वास्तविक स्वस्थ जीवन का अनुभव त्याग से ही संभव है। त्यागरहित भोगी जीवन रोगी जीवन है। रोगी जीवन, जीवन नहीं, जीवन की विडम्बना है।

त्यागी जीवन मुक्त जीवन

विषय सुख .संसार का बीज है। शरीर की उत्पत्ति विषय-भोग रूप बीज से ही होती है, यह नैसर्गिक नियम है। भोग के लिए ही शरीर और इन्द्रिय की आवश्यकता होती है। जिसे किसी प्रकार का भोग नहीं चाहिये, उसके लिए शरीर और इंद्रिय की प्राप्ति व्यर्थ है, बोझ है। प्रकृति उसे शरीर नहीं देती है। इसीलिए जो जीव पूर्ण भोग या राग रहित हो जाते हैं, वे अशरीरी हो जाते हैं, उन्हें फिर शरीर धारण नहीं करना पड़ता है।

उपसंहार

तात्पर्य यह है कि विषय-भोगमय जीवन व्यर्थ जीवन है, बुरा जीवन है, पशु जीवन है। कारण कि विषय भोग से मिलने वाला सुख क्षणिक है, नश्वर है, अत: सुखाभास है। इसका भोग शरीर, मन व आत्मा को विकारी, रोगी, अस्वस्थ बनाने वाला है, पराधीनता, असमर्थता, जड़ता, अभाव, तनाव, मनमुटाव आदि समस्त दु:खों का जनक है। इस यथार्थ ज्ञान का आदर कर जो विषय.भोग व उपलब्ध विषय.भोग की सामग्री व सुख का त्याग करता है, उसे न भोगने व उस पर अपना अधिकार न रखने का दृढ़ संकल्प रूप व्रत धारण करता है, वही सच्चा त्यागी है, उसी का जीवन सार्थक है, सफल है।

ए-9, साधना भवन, महावीर उद्यान पथ, बजाज नगर, जयपुर

प्रेरक संस्मरण

तख्ती पर नाम

नितेश नागोता 'जैन'

बात एक गांव की है, जहाँ जन सहयोग से सार्वजनिक चिकित्सालय का निर्माण करवाया जा रहा था। इस हेतु लोगों से धन एकत्रित किया जा रहा था। निर्माण समिति ने निर्णय किया कि जो भी दानदाता पांच हजार रुपये एक मुश्त देगा उसका नाम संगमरमर की तख्ती पर लिखवाकर चिकित्सालय में लगाया जायेगा। समिति के सदस्यगण नगर सेठ श्री गोविन्द भाई केशो भाई सरावगी के यहां पर गये और उक्त पावन कार्य के लिए चंदे का आग्रह किया।

नगर सेठ श्री गोविन्दभाई केशोभाई सरावगी ने पांच हजार में साठ रुपये कम का चेक काट कर समिति सदस्यों को प्रदान किया।

सेठ की उदारता को देखकर समिति के एक सदस्य ने कहा– "सेठ साहब, यदि आप साठ रूपये और दे दें तो आपके नाम की तख्ती चिकित्सालय में लग जायेगी।"

सेठ ने तुरन्त उत्तर दिया–"भैया, प्रकृति ने मुझे जो कुछ दिया है वह लोक सेवा के लिए है। नाम की तख्ती लगवाने के लिये नहीं। और फिर दान सहयोग में भला नाम कैसा? आखिर यह झूठी दिलासा और प्रदर्शन किसके लिए?"

सेठ सा. की सारगर्भित और मर्मकारी बात सुनकर सभी समिति सदस्यगण भौंचक्के रह गये और उन्होंने भी सेठ जी के जीवन से निःस्वार्थ सेवा की शिक्षा ग्रहण की। वस्तुतः समाज में ऐसे समर्पित भाव से अनाम दान दाताओं और सेवियों के पुरुषार्थ से प्राणिमात्र का हित और कल्याण होने का मार्ग प्रशस्त होता है।

–175, जैन बोर्डिंग हाउस, भवानीमण्डी (राज.)

उत्तराध्ययनसूत्र-तेतीसवाँ अध्ययन

प्रो. चांदमल कर्णावट

प्रस्तुत अध्ययन का नाम कर्मप्रकृति है। इस अध्ययन की 25 गाथाओं में कर्मबन्ध, कर्म के मूल भेदों और उत्तर प्रकृतियों, कर्मबन्ध के स्वरूप, कर्मो की स्थिति तथा कर्मबंध के कारणों का विवेचन किया गया है।

कर्मबन्ध एवं कर्म प्रकार- अध्ययन के प्रारम्भ में 3 गाथाओं में शास्त्रकार ने कहा है कि जिन कर्मो से जीव बंधा हुआ है एवं फलस्वरूप संसार में जन्म मरण करता है, उन्हीं कर्मो के बारे में इस अध्ययन में प्रतिपादन किया जायेगा।

मिथ्यात्व, अविरति, प्रमाद, कषाय और योग के निमित्त से जिन्हें जीव करता है, वे कर्म कहलाते हैं। ये ज्ञानावरणीयादि 8 हैं।

आठों कर्मों की उत्तर प्रकृतियाँ- आठों कर्मो की उत्तर प्रकृतियों का उल्लेख गाथा 4 से 15 तक संक्षेप में किया गया है। ज्ञानावरणीय की आभिनिबोधिक या मतिज्ञानावरणीय, श्रुतज्ञानावरणीय आदि 5, दर्शनावरणीय की निद्रादि 5 एवं चक्षुदर्शनादि 4 कुल 9, वेदनीय की साता-असातावेदनीय 2, मोहनीय की दर्शनमोहनीय, चारित्रमोहनीय आदि 28, आयु की नरकादि 4, नाम कर्म की शुभ एवं अशुभ 2, गोत्र कर्म की उच्च-नीच गोत्र 2 तथा अन्तराय कर्म की दानान्तराय आदि 5 उत्तर प्रकृतियां बताई गई हैं। शास्त्रकार ने उल्लेख किया है कि इन सबके पुनः बहुत से भेद हैं।

मोहनीय कर्म- ज्ञानावरणीय आदि आठों कर्मो में मोहनीय कर्म सबसे प्रबल है। मदिरापायी व्यक्ति के सदृश मोहनशे में उन्मत्त बना आत्मा अपने स्वरूप को विस्मृत कर अनात्म पदार्थो में आसक्त बन जाता है। मोहदशा में कषाय एवं योग के निमित्त से अनेक पापों का सेवन कर अपने को भारी बनाकर निम्न जाति का अधिकारी बनता है। इसी कारण मोह कर्म को कर्मो का राजा माना गया है। साधक को कषाय और योग पर नियंत्रण करके मोह को जीतने का अभ्यास करना चाहिए।

कर्मों का प्रदेशाग्र (द्रव्य), क्षेत्र, काल और भाव-गाथा 16 से 24 तक कर्मो के द्रव्य, क्षेत्रादि का वर्णन किया गया है। प्रदेशाग्र का अर्थ कर्म परमाणुओं के परिमाण से है। सभी कर्मो के एक समय में एकत्र परमाणु अभव्य जीवों से

अनन्तगुणा अधिक, किन्तु सिद्धों से अनंतगुणा न्यून या सिद्धों के अनंतवें भाग होते है।

क्षेत्र- सभी जीव छह दिशाओं में रहे हुए कर्मवर्गणा के पुद्गलों को सम्यक् प्रकार से ग्रहण करते है, प्रति समय ग्रहण करते है। जितने आकाश क्षेत्र में आत्मप्रदेश अवगाहित करके स्थित रहते है, उतने क्षेत्र की अपेक्षा से सभी दिशाओं से कर्म परमाणुओं का संचय किया जाता है। **कर्मबन्ध**,-कषाय-संयोग या रागद्वेष के भावों से आकृष्ट कर्म परमाणु ज्ञानावरणीय आदि कर्मो के रूप में परिणत हो जाते है। वे समस्त आत्म-प्रदेशों के साथ क्षीरनीरवत् परस्पर आबद्ध होकर प्रकृति, स्थिति आदि प्रकार से बंध जाते है।

काल-गाथा 18 से 23 तक प्रत्येक कर्म की जघन्य एवं उत्कृष्ट स्थिति का उल्लेख किया गया है। ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय तथा अंतराय कर्मो की उत्कृष्ट स्थिति 30 सागरोपम की तथा जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त की बताई गयी है। आयुकर्म की जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट स्थिति 33 सागरोपम की, मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति 70 कोटाकोटि (करोड़ को करोड़ से गुणित) सागरोपम की तथा जघन्य अंतमुहूर्त की बताई गई है। नाम तथा गोत्र कर्मो की स्थिति जघन्य अंतर्मुहूर्त एवं उत्कृष्ट 20 कोड़ाकोड़ी सागर की बताई गई है।

भाव या अनुभाग-(कर्मो के रस विशेष) जीव के रागद्वेषादि या कषाय भावों के कारण कर्मो की तीव्र, मध्यम, मंद आदि फल प्रदान करने की शक्ति या रस को अनुभाग बन्ध कहते है। यही कर्म का भाव या अनुभाग कहलाता है।

साधक का कर्त्तव्य- जैन धर्म.दर्शन में कर्म को आधारभूत महत्त्व दिया गया है। यह संपूर्ण जगत् कर्मो की ही रचना है। चेतन आत्मा शुभाशुभ कर्म करके ही अपना उत्थान पतन करता है। यहां ईश्वर की मान्यता होते हुए भी उसे नियामक (कर्ता हर्तादि) नहीं माना गया है। कर्म स्वयं आत्मा के संयोग से शुभाशुभ फल देने में समर्थ होते है, कर्ममुक्त ईश्वर नहीं। अपने को बंधन में डालने और मुक्त करने में आत्मा पूर्ण स्वतंत्र और सक्षम है। अत: साधक को चाहिए कि वह कर्मस्वरूप को समझ कर कर्मो के निरोध रूप संवर और कर्म क्षय रूप निर्जरा करने में प्रयत्नशील बने।

-35, अहिंसापुरी, उदयपुर (राज.)

भगवान महावीर : 101 तथ्य

श्री राजेश जैन 'देवकर'

28. वैश्यायन नामक ऋषि तपसाधना कर रहा था। गोशालक व्यर्थ ही उससे जा भिड़ा– 'तुम कैसे तपस्वी हो? तुम्हारा शरीर तो जुओं का घर है।' ढोंगी पाखंडी आदि कटु शब्द कहने लगा, जिससे ऋषि क्रोध से आग बबूला हो गया। उसने अपने अंगारों जैसे नेत्र से गौशालक पर तपाग्नि छोड़ी। दौड़ा गौशालक–"प्रभु मुझे बचाओ।" करुणासिंधु महावीर ने अपनी शीतल शांत अमृत दृष्टि से तैजस अग्नि को पराभूत कर दिया। गोशालक को बचा लिया और तापस को भी क्षमा कर दिया।
29. अनार्य क्षेत्र में ध्यानस्थ महावीर को लोग गुप्तचर/चोर/ढोंगी समझकर पीटते/शिकारी कुत्ते छोड़ते और घोर अपमान करते। उनके नग्न शरीर को छेद डालते जबकि पूर्व परिचित लोग उन्हें सम्मानपूर्वक भोजनादि के लिए आमंत्रित करते पर महावीर कभी रुष्ट/उद्वेलित या प्रफुल्लित नहीं हुए। समता का सहारा उन्होंने कभी छोड़ा नहीं।
30. लक्ष्य प्राप्त करने के लिए वे सतत संकल्पबद्ध तथा सुमेरु पर्वत की भांति अचल व अडिग रहे। आहार/आश्रय में उन्होंने कभी लाभालाभ/ मानापमान नहीं देखा। जैसे मिला जो मिला ग्रहण कर लिया। जहां गये वहां ध्यान प्रारम्भ कर दिया। ध्यान और मौन, समता और संयम ही कर्मक्षय के उनके प्रमुख साधन थे।
31. महावीर का पहला चातुर्मास संन्यासियों के आश्रम में हुआ। दुर्योग से उस वर्ष वहाँ भयानक अकाल पड़ गया। अकाल की स्थिति होने से भूखी गायें आश्रम की ओर आने लगी। झोंपड़ी के सूखे घास फूस खाने लगी। संन्यासी झोंपड़ी की रक्षा के लिये गायों को डंडे से मारकर भगाने लगे। पर महावीर तो सदा ध्यानस्थ रहते, झोंपड़ी को गायों ने तहस–नहस कर डाला। कुलपति ने महावीर को समझाना चाहा– "पक्षी भी अपनी घोसलों की रक्षा करते हैं। फिर आप तो क्षत्रिय राजकुमार है"। महावीर ने सोचा– मैंने तो देह की ममता ही त्याग दी है, फिर आश्रम... और उन्होंने विहार कर दिया।
32. आश्रम से विहार करते ही उन्होंने पांच प्रतिज्ञाए की– "अप्रीतिकर स्थान में कभी नहीं ठहरूँगा, सदा मौन रहूंगा, ध्यानस्थ रहूंगा, हाथ में ही भोजन करूंगा, गृहस्थ/असंयमियों की कभी विनय/प्रशंसा नहीं करूंगा।"
33. प्रव्रज्या के पूर्व सरस सुगंधित स्निग्ध द्रव्यों का उबटन उनके शरीर पर हुआ था, जिसकी महक से भौंरे उन्हें सौरभ का पिंड मानकर मंडराते और तीक्ष्ण डंक मारते। इससे प्रभु को असह्य वेदना होती, घाव भी हो गये, पर वे सदैव आत्म–संलीनता और समाधि भाव में लीन रहे।
34. अस्थिक ग्राम के यक्षायतन में महावीर ध्यानस्थ थे। तभी शूलपाणि यक्ष ने क्रुद्धा होकर ध्यानयोगी महावीर को सर्प/बिच्छू/सिंह/पिशाच आदि के रूप

में भयावह कष्ट एवं लोमहर्षक उपसर्ग दिया, पर महावीर ने उसे समता से सहा एवं ध्यान से डिगे नहीं। महावीर के समक्ष अंततः वह हार गया और गांव वालों को भी मुक्ति मिली यक्ष के त्रास से।

35. ध्यानस्थ महावीर की आकर्षक मुखच्छवि, शीत–उष्ण में उनकी समता और साधना से ग्रामीण श्रद्धानत होने लगे। उनकी निस्पृहता से जनता उनके दर्शनार्थ सागर के समान उमड़ने लगी। यह देख वहां आजीविका कमाने वाले ज्योतिषी भयभीत हो गये। उन्हें लगा कि अब उनकी पोल खुलेगी और रोजी रोटी छूट जायेगी। साहस करके उन्होंने एकांत में महावीर से निवेदन किया–"देवार्य! आप तो साधु हैं, आप कहीं भी साधना कर सकते हैं, पर आपके यहां रहने से हमारी रोजी छिन रही है।" महावीर सब कुछ समझ गये। भोली जनता को मिथ्याचारियों से बचाये या अच्छंदकों की जीविका की रक्षा करें? उन्होंने सोचा–'एक दिन तो पूरे विश्व का अंधविश्वास मिटेगा...मैं इनकी आजीविका में अभी बाधक क्यों बनूँ।' फिर महावीर ने पूर्व में प्रतिज्ञा की थी कि अप्रीतिकर स्थान में नहीं ठहरूंगा। अतः परहित चिंतक, परदुःखकातर महावीर ने विहार कर दिया।

36. दृष्टिविष चंडकौशिक सर्प के विष–प्रहारों के बाद भी उसे महावीर ने प्रतिबोध दिया। क्रोध के भयावह परिणामों से आगाह कराते हुए उसे मुक्ति का सरल पथ दिखाया। बुज्झ! बुज्झ! बुज्झ!(समझ) के संक्षिप्त उद्‌बोधन ने सर्प का जीवन ही बदल दिया। वह अहिंसक बन गया और सद्‌गति को प्राप्त हुआ।

37. लोग नाव में बैठकर गंगा पार हो रहे थे। नाव के चलते ही अपशकुन होने से लोग आंशकित हुए, किंतु खेमिल निमित्तज्ञ ने सभी को धैर्य बंधाया– "अवश्य अशुभ शकुन है, किन्तु इन महात्मा (महावीर) की पुण्याई हमारी रक्षा करेगी।" तभी अचानक भयानक तूफान उठा, नाव डगमगाने लगी, हाहाकार मच गया। संगम नामक देव ने पूर्व वैर से प्रेरित होकर ऐसा उत्पात किया था, किन्तु भक्त देवों ने उसके दुष्कृत्य को विफल कर दिया। महावीर के महावीरत्व का परिचय पा लिया लोगों ने।

38. पुष्य नामक नैमित्तिक ने उत्तम चरण चिह्नों को देख अनुमान लगाया कि कोई विपद्‌ग्रस्त चक्रवर्ती नंगे पैर यहां घूम रहे हैं। अगर अभी उन्हें सहायता पहुँचाऊँगा तो मुझे कुछ लाभ अवश्य मिलेगा। चरण चिह्नों के सहारे वह ध्यानस्थ महावीर तक पहुंच गया, किंतु भिक्षु! एकाकी! नग्न! देख वह निराश हो गया। उसे लगा कि उसका ज्ञान थोथा है, तभी आकाशवाणी हुई कि ये विशिष्ट लक्षणों से युक्त धर्मचक्रवर्ती हैं। तुम्हारा ज्ञान मिथ्या नहीं है, किन्तु तुम इन अलौकिक पुरुष को पहचान नहीं रहे हो।

(क्रमशः2)

–श्री देव आनन्द जैन गुरुकुल, वर्द्धमान नगर, राजनांदगांव(म.प्र.)

दुर्लभ मानव जीवन का उपयोग

■ डॉ. मंजुला बम्ब

मनुष्य का जीवन सबसे उत्कृष्ट जीवन है। यह आत्मा को अत्यन्त विशुद्ध बनाकर सिद्ध, बुद्ध, मुक्त बन जाने में सहायक है। विचारणीय यह है कि मनुष्य अपना जीवन किस ढंग से बिताए? क्या सोचे? क्या खाए पिए ? क्या कार्य करें? यदि यह विद्या आ गयी तो सब कुछ आ गया। अगर यह जीवनविद्या नहीं आयी, तो दूसरी सब विद्याएँ बेकार है, वे जीवन के लिए भारभूत है, दिमाग पर बोझ है।

आज का विद्यार्थी सहित्य, कला, शिल्प, विज्ञान, दर्शन शास्त्र, अर्थ शास्त्र, राजनीतिशास्त्र, वकालात, इंजीनियरी, डाक्टरी आदि लौकिक विद्याओं में पारंगत होकर आजीविका, पद और प्रतिष्ठा भी प्राप्त करता है, परन्तु यह तथ्य विस्मृत ही बना रहता है कि जीवन जीने की कला या विद्या भी सीखनी आवश्यक है। स्कूली शिक्षा के साथ-साथ सबसे बड़ी आवश्यकता है, जीवन को सार्थक करने वाली उस जीवन विद्या की, जो अनेक विचित्रताओं से भरे ऊबड़-खाबड़ जीवन पथ पर मनुष्य के चरण बढाने में सहायक है। संसार के अधिकांश महापुरुषों का अक्षर ज्ञान आज के अनेक उच्च शिक्षा सम्पन्न एम.ए., पी.एच.डी डिग्रीधारी लोगों से कम था, लेकिन जीवनविद्या का पारस था उनके पास। इसलिए जिस क्षेत्र के ज्ञान से वे जीवन विद्या के पारस को छुआ देते उसी क्षेत्र का उनका ज्ञान सम्यग् ज्ञान बन जाता।

मानव जीवन एक बहुमूल्य मोटर के समान है। इस जीवन रूपी मोटर को चलाने के लिए दूसरे किसी ड्राइवर को रखने से काम नहीं चलता, इसे चलाने के लिए तो स्वयं को ड्राइवर बनना पड़ता है। सर्वप्रथम इस जीवन रूपी गाड़ी को भलीभांति परखने की जरूरत है कि वह गाड़ी कहीं टूटी फूटी या बिगड़ी हुयी तो नहीं है कि रास्ते में ही धोखा दे दे? यह जीवन गाड़ी ऐसी तो नहीं है कि डीजल या पेट्रोल की तरह केवल अच्छा पौष्टिक भोजन, बढ़िया कपड़े, गहने और भी न जाने क्या-क्या शृंगार प्रसाधन के साधन वगैरह पदार्थ वह अपने शरीर में डाले ही डाले जाए? या उस जीवन गाड़ी को तप, त्याग इन्द्रिय संयम, सेवा या परोपकार के कार्य करके बदले में थोड़ा सात्त्विक आहार एवं आवश्यक अनिवार्य वस्तु देकर चलाया जाए। उसके पश्चात् यह देखना है कि हमें जीवन

रूपी गाड़ी को विधिपूर्वक चलाना आता है या नहीं? यदि इस बात के प्रति कोई व्यक्ति लापरवाह रहता है तो उसे लाभ के बदले हानि ही अधिक उठानी पड़ती है। जैसे अनाड़ी आदमी के हाथ में मोटर दे दी जाए तो वह मोटर को भी हानि पहुंचायेगा, स्वयं को भी। इसी प्रकार अपना जीवन भी किसी अनाडी आदमी के हाथों में सौंप दिया जाए, कुगुरु को अपनी जीवन रूपी नैया सौंप दी जाए तो अधिकतर नुकसान उठाने की संभावना रहेगी। एक कवि के शब्दो में-

जीवन का क्या अर्थ यहां है, क्यों कंचन सा तन पाया है?
क्या तुम इसको समझ सके हो, क्यों नर भूतल पर आया है?

परन्तु इस देवदुर्लभ मानव-जीवन का इतना सुन्दर मूल्यांकन किये जाने और उसके यथार्थ उपयोग के संबंध में मार्गदर्शन दिये जाने पर भी मनुष्य जब अर्थपरायण, कामपरायण, धर्मपरायण, कषायपरायण, व्यसनपरायण, विषयपरायण आदि विभिन्न स्तर के जीवनों को अपनी आंखों से इस दुनियां में देखता है तो वह चकाचौंध में पड़ जाता है और कुछ भी निर्णय नहीं कर पाता है कि इनमें से कौन सा जीवन प्रशस्त है? कौन सा जीवन जीने से यहां भी सुखशांति मिलेगी और अगले जन्म में भी। मनुष्य जन्म पाकर भी वह उसे व्यर्थ खो देता है।

मनुष्य अपनी विवेक बुद्धि को तिलांजलि देकर जीवन को कमाने-खाने, मौज उड़ाने और अपने परिवार की मोहमाया में फंसकर बिता देता है। जीवन का सदुपयोग कैसे किया जाए? वह इससे अनभिज्ञ रह जाता है। ज्ञानी पुरुष जीवन जीने की कला सीखकर अपने ज्ञान, दर्शन और चारित्र बल से अपना जीवन उच्च कोटि का बनाकर जीवन का विकास कर लेते हैं। इसलिए विवेक एवं ज्ञान को अपनाकर जीवन का विकास करने का लक्ष्य बनाना चाहिए।

- "हेम मन्जुल", 3-रामसिंह रोड़,
हॉटल मेरू पैलेस के पास,टोंक रोड़, जयपुर- 302004

सेवा

अगर हमारे जीवन में क्रियात्मक रूप से सेवा आ जाय तो न ममता रह सकती है, न संग्रह रह सकता है। जहाँ ममता और संग्रह नहीं है वहाँ संघर्ष हो ही नहीं सकता। जितने संघर्ष होते हैं वें होते हैं सग्रह में, ममता में। इसलिये मिले हुए का सदुपयोग करो। आज सेवा का जो क्रियात्मक रूप है, वह दूषित हो गया है। सेवा के क्रियात्मक रूप में भी अधिकार–लालसा ज्यों की त्यों विद्यमान है। क्रियात्मक रूप जो सेवा है, उसी का नाम कर्त्तव्यपरायणता है।

नारी के प्रति हीनभाव क्यों?

सुश्री सपना संचालाल जी धाड़ीवाल

कहने को मनुष्य ने आज कितनी भी उन्नति कर ली हो, किन्तु वह आज भी मानसिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ है। लड़की के प्रति माता-पिता का व्यवहार भी वैसा नहीं होता जैसा लड़के के प्रति होता है। लड़की के जन्म से ही शुरू हो जाती है उसकी बदकिस्मती की कहानी। लड़की हुई है, यह सुनकर तो मानो परिवार वालों की सारी उम्मीदों पर पानी फिर जाता है कि, काश लड़का हुआ होता तो कितना अच्छा होता।

लेकिन क्या करें, "गले में पड़ा ढोल तो बजाना ही पड़ता है" यही हाल लड़की का होता है। उसे एक मुसीबत की भांति पाला जाता है। उसके सामने ही लड़को को ज्यादा प्यार दिया जाता है। फलतः लड़की के मन में हीन भावना के अंकुर फूटते है। हर लड़की अपने मन में सुंदर सपने संजोये सब कुछ त्यागकर अपने ससुराल में "माँ" समान सास, 'बहिन' समान ननंद, देवर या जेठ समान भाई एवं "पिता" समान श्वसुर की कल्पना करती है, परन्तु बहुत कम लड़कियाँ इतनी खुशकिस्मत होती है कि वे ऐसा प्राप्त कर सकें। शेष लड़कियों का तो जो हाल होता है वह आप सबसे छिपा नहीं है। अरे नारी ही नारी की शत्रु होती है। सोचा है आपने, सास एवं ननंद एक नारी होने के बावजूद भी अपनी बहू का दर्द नहीं समझती। उसे मारा-पीटा जाता है और जला दिया जाता है। ऐसा घिनौना पाप करते वक्त क्या आपको अपनी बेटियों का ख्याल नहीं आता? यदि आपके साथ में ऐसा हुआ तो आप पर क्या गुजरेगी? आप यह क्यों नही समझते कि आपकी बहू ही आपके घर की इज्जत है। अगर घर में आपकी बहू खुश रहेगी तो बच्चे एवं परिवार खुशहाल रह सकेंगे। कौन ऐसा अभागा है जो प्यार पाना नहीं चाहता? यदि आप बहू से प्रेमपूर्वक व्यवहार करें तो आज परिस्थितियों के कारण बदनाम सास-बहू का रिश्ता माँ-बेटी का रिश्ता कहलाने लगेगा।

आज बेशक नारी को पुरुष के समान अधिकार मिल गये है, वह पुरुष के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर चल रही है। यह वही है जिसे हम अपने पांव की जूती समझते हैं। क्या नारी का मूल्य एक जूती के समान है?

अबला जीवन हाय तेरी यही कहानी
आँचल में दूध और आंखों में पानी।

न तड़पने की इजाजत है ना फरियाद की
फूट-फूट कर मर जाऊँ, यही मर्जी मेरे सय्याद की।।

इतनी उन्नति कर लेने के पश्चात् भी हमारे दकियानूसी विचार अभी तक नहीं बदले हैं। सी.ए., एम.बी.बी.एस., एल.एल.बी. या अन्य विषयों में सफलता हासिल कर लेने का तब तक कोई फायदा नहीं जब तक हम पूर्ण रूप से अच्छाई एवं बुराई में फर्क नहीं ढूंढ पाते।

मै पूछना चाहती हूँ कि हर मुसीबत सिर्फ नारी ही क्यों उठाए? क्या गुनाह किया है उसने? शायद यही न कि वह एक लड़की है? हर परिस्थिति में बुरी नारी ही क्यों है? मारने पीटने एवं शोषण का शिकार नारी ही क्यों है? अपमान के घूँट केवल नारी ही क्यों पीये? क्यों आखिर क्यों? हममें से ही कुछ लड़कियाँ ये सब दुःख इसलिये झेल लेती हैं कि उनकी किस्मत में यह सब लिखा है, परन्तु यह सब गलत है। मनुष्य अपना भविष्य अपने आप बनाता है, उसे संवारता है। हाथ पर हाथ धरे रखकर बैठने से कुछ न होगा, अब समय आ गया है कि हम सब जागें, और एक नया परिवर्तन लाएँ। मेरा इशारा किसी आंदोलन या लड़ाई की तरफ नहीं है। आप यह न समझें कि मै एक लड़की होने के नाते लड़की का पक्ष ले रही हूँ और नर जाति पर सारी तोहमतें लगा रही हूँ। ऐसा नहीं बल्कि मै तो आप सभी से प्रार्थना करती हूँ कि अब समय बदल गया है। इसलिये नारी को पांव की जूती समझने की बजाय उसे सुख दुःख की भागिदारिणी समझा जाये। उसे उतना ही मान दिया जाए जितना इस समाज में एक पुरुष को दिया जाता है। क्योंकि इस पुरुष को जन्म देनेवाली नारी ही है।

-पाचोरा (महा.)

मुक्तक

गतिशील करो चरणों को मंजिल पास नहीं है।
काल चक्र गतिमान किसी का दास नहीं है।।
जीवन की हर सांस सार्थक कर डालो 'तुग'।
सांसों पर पल भर का भी विश्वास नहीं है।।

संकलन- विरेन्द्र जैन, स्वाध्याय संघ, जोधपुर

जन्म और मृत्यु से परे

● *श्री दिलीप धींग 'जैन'*

कोई फूल मुर्झाने के लिए
नहीं खिलता
खिलता है इसलिए
मुरझा जाता है
सूर्य अस्त होने के लिए
नहीं उगता, लेकिन
उगता है, इसलिए
अस्त हो जाता है
कोई प्राणी मरने के लिए
नहीं जनमता
किन्तु जन्म लेता है
इसलिए
मर जाता है
तो क्या मूल्य
ऐसे खिलने का
ऐसे उदय होने का
और ऐसे जन्म लेने का ?
जो बिल्कुल
स्थायी, स्थिर, शाश्वत नहीं
इसलिए कुछ लोग
जन्म और मरण के बीच
जो जीवन है उसे
पल्लवित–पुष्पित कर
बना देते हैं सुरभित उपवन
फैलाते सत्कार्यों–सद्‌गुणों की सुगंध
दिग्–दिगन्त
और करते ऐसी जीवन साधना
जो होती है
जन्म और मृत्यु से परे
जहाँ
काल भी डरे और ठहरे।

–बम्बोरा–313706

कंदमूल का त्याग

''महाराज साहब! आपके द्वारा बारबार की गई प्रेरणा के बावजूद जो पराक्रम मैं नहीं कर पाया, वह एक मामूली निमित्त को पाकर मैंने कर दिया।''- 28 बरस का परिचित युवक सामने खड़ा है। उसे प्रवचन.श्रवण में अद्‌भुत रुचि है। सम्पत्ति के क्षेत्र में वह अच्छा खासा उदार है। उसकी प्रभु भक्ति दाद देने लायक है।

''क्या पराक्रम?''

''कंदमूल त्याग का''

''कर दिया?''

''हाँ''

''किसकी प्रेरणा काम कर गई?''

''किसी की नहीं''

''तो?''

''आप कल्पना भी नहीं कर सकेंगे ऐसा एक प्रसंग घटित हुआ। मैंने एम.एस.सी. पास किया। फिर किसी अच्छी फैक्ट्री में नौकरी पाने का प्रयत्न शुरू किया। चूँकि मैंने एम.एस.सी. प्रथम श्रेणी में पास की थी, इसलिये नौकरी मिलने में मुझे कोई संदेह नहीं था। पर मुझे नौकरी अच्छी फैक्ट्री में चाहिये थी और वह भी अच्छी पगार वाली। इसलिये बराबर तलाश में था। तभी अचानक एक दिन पेपर में एक फैक्ट्री की ओर से प्रकाशित विज्ञापन मेरे पढ़ने में आया। उस फैक्ट्री को मेरे जैसे ही युवक की जरूरत थी। उसमें छपा पता मैंने अपनी डायरी में नोट कर लिया और नियत तारीख और समय पर उस फैक्ट्री में इन्टरव्यू देने पहुंच गया। नौकरी पाने के इच्छुक उम्मीदवारों की लाइन लम्बी थी। फिर भी मुझे कोई डर नहीं लगा, क्योंकि पढ़ाई की दृष्टि से मै योग्यता में बहुत आगे था और इसका मुझे अहसास था।नौकरी के लिये चुन लिये जाने के सबंध में मुझे पूरा भरोसा और विश्वास था। मै भी लाइन में लग गया। मेरा नम्बर आया और मै इन्टरव्यू लेने वाले सुपरवाइजर के सामने जा पहुंचा। अपने हाथ में रखे हुए योग्यता से सम्बन्धित सारे कागजात मैंने उसके हाथ में दे दिये। उसने उन कागजातों पर नजर दौड़ाई और फिर मेरी और देखा। मेरे नाम में जैन देखकर उसने पूछा:-

''तुम जैन हो?''

''हाँ''

''कंदमूल खाते हो?''

''मुझे उनका त्याग करने जैसा नहीं लगा।''

''उसने मेरा यह जवाब सुनकर, क्षणभर की भी देर किये बगैर मेरी योग्यता सम्बन्धी कागज मेरे हाथ में पकड़ा दिये और कहा- ''तुम जा सकते हो।''

'' पर कारण?''

''कारण यह कि तुम अपने धर्म के प्रति निष्ठावान नहीं हो। तुम्हें जानकर आश्चर्य होगा कि मै स्वयं मुस्लिम हूँ। कंदमूल खाता हूँ। फिर भी कुरान के प्रति वफादार हूँ। इस फैक्ट्री में मैंने ऐसे हिन्दुओं को नौकरी पर रखा है, जो गीता के प्रति निष्ठावान हैं, मैंने ऐसे सिक्खों को भी इस फैक्ट्री में जगह दी है जो गुरुग्रंथ साहब के प्रति निष्ठावान हैं। संक्षेप में, मेरी यह दृढ मान्यता है कि जो भी व्यक्ति अपने धर्म के प्रति निष्ठावान होता है वह किसी अन्य (धर्म) के प्रति निष्ठावान न हो, ऐसा संभव नहीं है। तुम कंदमूल खाते हो, पर तुम्हें उनका त्याग करने जैसा भी नहीं लगा, यह बात यह सूचित करती है कि तुम्हें अपने जैन धर्म के प्रति जैसी निष्ठा होनी चाहिये वैसी नहीं है। तुम्हारी शैक्षणिक योग्यता बहुत अच्छी है इसमें दो मत नहीं है, पर धार्मिक योग्यता जितनी चाहिये उतनी तुमने अभी तक हासिल नहीं की है। इसलिये इस फैक्ट्री में तुम्हें प्रवेश नहीं दिया जा सकता। तुम जा सकते हो।''

महाराज साहब! एक मुस्लिम सुपरवाइजर के इन शब्दों ने मुझे झकझोर दिया। फैक्ट्री के परिसर से बाहर निकलकर मैंने तत्काल जीवनभर कंदमूल त्यागने का नियम ले लिया।

-'मुम्बई तने लाख लाख नमस्कार छे' पुस्तक से साभार!
हिन्दी अनुवाद-नन्दावल्लभ लोहनी 'नन्दनभाई' आई.ए. एस.

भूल-सुधार

जुलाई 2001 की जिनवाणी के पृष्ठ 56 पर छपे समाचारों में यह उल्लेख किया गया था कि स्कूल की बालिकाएँ झण्डे एवं बैनर लेकर जय–जयकार करती हुई साथ चली, किन्तु ऐसा धुलिया में घटित नहीं हुआ था। यह समाचारप्रदाता एवं सम्पादक की असावधानी ही समझी जाए।–**सम्पादक**

कड़ी मेहनत, पक्का इरादा, दृढ़ संकल्प

संकलनकर्ता: नवरतन डागा

कुछ भी नहीं असम्भव जग में
सब संभव हो सकता है।
कार्य हेतु यदि कमर बांध लो,
तो सब कुछ हो सकता है।।1।।

जीवन है नदिया की धारा
जब चाहो मुड़ सकती है।
नरक लोक से, स्वर्ग लोक से,
जब चाहो जुड़ सकती है।।2।।

बन्धन बन्धन क्या करते हो
बन्धन मन के बन्धन हैं।
साहस करो उठो झटका दो,
बन्धन क्षण के बन्धन हैं।।3।।

बीत गया गत, बीत गया वह
अब उसकी चर्चा छोड़ो।
आज कर्म करो निष्ठा से,
कल के मधु सपने जोड़ो।।4।।

तुम्हें स्वयं ही स्वर्णिम उज्ज्वल
निज इतिहास बनाना है।
करो सदा सत्कर्म विहंसते,
कर्म योग अपनाना है।।5।।

मन के हारे हार हुई है
मन के जीते जीत सदा।
सावधान मन हार न जाए,
मन से मानव बना सदा।।6।।

तू सूरज है, पगले! फिर क्यों
अन्धकार से डरता है?
तू तो अपनी एक किरण से
जग प्रदीप्त कर सकता है।।7।।

अन्तर्मन में सद्भावों की
पावन गंगा जब बहती।
पाप पंक की कलुषित रेखा,
नहीं एक क्षण को रहती।।8।।

धर्म हृदय की दिव्य ज्योति है
सावधान बुझने ना पाए।
काम,क्रोध,मद, लोभ, अहं के,
अंधकार में डूब न जाए।।9।।

जाति धर्म के क्षुद्र अहं पर
लड़ना केवल पशुता है।
जहां नहीं माधुर्य भाव हो,
वहाँ कहाँ मानवता है।।10।।

मंगल ही मंगल पाता है
जलते नित्य दीप से दीप।
जो जगती के दीप बनेंगे,
उनके नहीं बुझेंगे दीप।।11।।

धर्म न बाहर की सज्जा में
जयकारों में आडम्बर में।
वह तो अन्दर अन्दर गहरे,
भावों के अविनाशी स्वर में।।12।।

"मैं" भी टूटे, "तू" भी टूटे
एक मात्र सब हम ही हम हों।
"एगे आया" की ध्वनि गूंजे,
एम मात्र सब सम ही सम हो।।13।।

यह भी अच्छा वह भी अच्छा
अच्छा अच्छा सब मिल जाए।
हर मानव की यही तमन्ना,
किन्तु प्राप्ति का भर्म न पाए।।14।।

अच्छा पाना है तो पहले
खुद को अच्छा क्यों न बना लें।
जो जैसा है उसको वैसा,
मिलता यह निज मन्त्र बना लें।।15।।

परिवर्तन से क्या घबराना
परिवर्तन ही जीवन है।
धूप छांव के उलट फेर में
हम सबका शक्ति परीक्षण है।।16।।

सत्य सत्य है एक मुखी है
उसके दो मुख कभी ना होते।
दंभ एक ही वह रावण है उसके
दस क्या सत मुख होते।।17।।

एक जाति हो एक राष्ट्र हो
एक धर्म हो धरती पर।
मानवता की अमर ज्योति सब
ओर आगे जन जन घर घर।।18।।

–सचिव, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
141, शुभम फार्मस्, पाल बालाजी के पास, जोधपुर

आओ वैराग्य में मन रमायें

■श्री नेमीचन्द जैन

वर्तमान मनुष्य जीवन के बीते हुए वर्षो की तरफ हम एक दृष्टि डालें। एक दिन जन्म हुआ, बड़े हुए, जवानी बीती, बुढ़ापा आया। रुक्ष-स्निग्ध, भक्ष्य-अभक्ष्य पदार्थ साधारण से लेकर विविध पकवान तक इस शरीर को खिलाये, उष्ण.शीतल पेय पदार्थ पेट में उँडेले। साधारण से लेकर बहुमूल्य वस्त्र आभूषण शरीर पर लादे। झोंपड़ी से लेकर हवेली और आलीशान बंगलों में रहे। 18 पापों का सेवन कर सम्पत्ति अर्जित की, प्रभुता प्राप्त की, लेकिन कितना लाभ हुआ? जरा समीक्षा करें। चिन्ताएँ बढ़ी, विषमताएँ बढ़ी, लोभ बढ़ा, शरीर कमजोर हुआ, रोग बढ़ा, संतोष घटा, मस्ती घटी, समता घटी। अब शरीर मृत्यु की ओर अग्रसर है। अरे आत्मन्! अपना भला बुरा सोच! बीती ताहि विसार दे, आगे की सुधि ले! संभल! महीने में कम से कम एक पौषध युक्त उपवास, एक आयम्बिल, एक एकाशन (हमेशा एकाशन हो तो कितना अच्छा)प्रारंभ कर। प्रातः सूर्योदय पूर्व दो घंटे और सोने से पूर्व दो घंटे शुभ ध्यान में रम। इससे समता बढ़ेगी, आरोग्य बढ़ेगा, मस्ती बढ़ेगी।

अरे जीव भववन विषै, तेरा कौन सहाय।
जिसके कारण पच रहा, वह भी तेरा नांय।।

अरब खरब का द्रव्य है, उदय अस्त का राज।
जयमल प्रभु भक्ति बिना, सभी नरक को साज।।

बड़े-बड़े जोधा खड़े, नित्य बजावत गाल।
मज्झ महल सूं ले चल्यो, ऐसो काल विकराल।।

कबीरा ओछो जीवणो, मांड्यो लंबो मंडाण।
पाड़ौसी में बीत गई, सो अपनी में जाण।।

करोड़ वर्ष की आयु को, पाया था भरपूर।
मरती बिरिया कह गये, रह गये काम अधूर।।

कबीरा काया कूकरी, करे भजन में भंग।
ठंडा टुकड़ा डाल के, करो भजन निश्शंक।।

कबीरा काया काच की, जाय पलक में टूट।
जब तक ठबक न लगे, लीजे लावो लूट।।

कटुक वचन सर क्या करे, हो जा तूं पाषाण।
तेरा कुछ बिगड़े नहीं, उसका होत अपमान।।

आवत गाली एक है, उलटत होय अनेक।
जा मुख से ना कहे, रहे एक की एक।।

धर्म गिणीजे वस्तु रो असली मूल स्वभाव।
ज्यों शीतलता सहज गुण प्राणी रो प्रगटाय।।

एक दिन ऐसा आयेगा कोई काहु का नांय।
घर की नारी क्या कहो, तन की नाड़ी नांय।।

अहो समदृष्टि जीवड़ा, करे कुटुम्ब प्रतिपाल।
अन्तर्घट न्यारो रहे, ज्यूं धाय खिलावे बाल।।

चक्रवर्ती की सम्पदा, इन्द्र सरीखा भोग।
काक बींट सम लखत है, सम्यग् दृष्टि लोग।।

कम खाना कम बोलना, कम सोना कम डोल।
एता गुण जिण पुरुष में, पुरुष वो अनमोल।।

खाटा मीठा चरपरा, नित नया भोजन खाय।
वे ब्रह्मचारी नांनका, किसी खाड़ में जाय।।

नर नारायण रूप है, नारी रमा समान।
कल जुग में कुण करे, वांकी खरी पिछान।।

मल माटी रा गूंगला, कदियन भंवरा होय।
कादा मायं कलीजता दिया जमारो खोय।।

बहु बीती थोड़ी रही, नारायण अब तो चेत।
काल चिरैया चुग रहा, निश दिन आयु खेत।।

गृहस्थी केरा टुकड़ा, लाम्बा लाम्बा दांत।
भजन करे तो ऊबरे, नहीं तो काढ़े आंत।।

जीवन उन्हीं का धन्य है, परहित में कुछ कर गये।
वरना बिताई जिन्दगी, मौत आई मर गये।।

-प्रधानाचार्य, राज. सीनियर सैकेण्डरी स्कूल, अरटियाकलां, जोधपुर

जैन धर्म का मौलिक इतिहास भाग-२ की परीक्षा में भाग लीजिए

शास्त्रकारों ने **'नाणं नरस्स सारो'** कहकर ज्ञान को मनुष्य जीवन का सार बताया है। हमारा जीवन सद्ज्ञान के आलोक में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर बने इस दृष्टि से रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन ट्रस्ट, जलगांव की ओर से हर वर्ष विविध परीक्षाओं का आयोजन किया जाता है। चार खंडों में प्रकाशित जैन धर्म का मौलिक इतिहास आध्यात्मिकता के गौरव शिखर आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा. की अद्वितीय और अपूर्व देन है। आचार्य श्री ने जैन संस्कृति के हस्तलिखित ग्रंथागारों और ज्ञान भण्डारों से विपुल ऐतिहासिक सामग्री का चयन कर इस महत् अनुष्ठान को पूरा कर जैन संस्कृति के विकास में एक कीर्तिमान स्थापित किया है। गत वर्ष इसके पहले भाग की परीक्षा हुई थी, जिसमें 2500 परीक्षार्थी सम्मिलित हुए थे।

अब जैन धर्म का मौलिक/इतिहास भाग–2 परीक्षा 16 जून 2002 को आयोजित की जा रही है। जिसके आवेदन पत्र स्वीकारने की अंतिम तिथि 31 मार्च 2002 है। (इसमें प्रथम भाग के प्रश्नपत्र के समान ही सम्पूर्ण पुस्तक पर प्रश्न पूछे जायेंगे।) परीक्षा का प्रौढ तथा युवा ऐसे 2 भागो में विभाजन किया गया है। 25 वर्ष तथा उससे कम उम्र वाले युवा एवं उससे अधिक उम्र वाले प्रौढ माने जायेंगे। 100 में से 100 अंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थी को रू. 21000/– का अनुपम पुरस्कार दिया जाएगा। परीक्षा में प्रथम पुरस्कार रू. 11000/–, द्वितीय रू. 9000/–, तृतीय रू. 7000/– का रहेगा तथा 75 प्रतिशत अंक या उससे अधिक अंक प्राप्त करने वाले परीक्षार्थी को विशेष पुरस्कार व सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को आकर्षक पुरस्कार दिये जायेंगे। परीक्षक का निर्णय सर्वमान्य होगा। परीक्षा के समय पुस्तक रखने की छूट रहेगी, इसके अतिरिक्त किसी भी प्रकार के नोट्स आदि रखने की छूट नहीं रहेगी। एक पुस्तक पर एक ही व्यक्ति को परीक्षा देने की अनुमति रहेगी। पुस्तक की कीमत रू. 250/– है लेकिन जब तक यह परीक्षा रहेगी तब तक इसमें रियायत कर रू. 175/– रखा गया है। जहां से कम से कम 25 परीक्षार्थियों के आवेदन पत्र प्राप्त होंगे, वहां पर केन्द्र बनाया जायेगा।

इतिहास की परीक्षा के लाभ–

1. हमारे गौरवशाली अतीत की जानकारी होती है।
2. सैकड़ों महापुरुषों के जीवन चरित्र का परिचय मिलता है।
3. हमारी परम्परा की विशुद्धता का ज्ञान होता है।
4. पूर्वाचार्यों के त्याग व संघसेवा की जानकारी होती है।
5. इतिहास की प्रांजल भाषा को पढ़ने से हमारी व्याख्यानशैली व लेखनशैली में सुधार होता है।
6. पूज्य आचार्यश्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा वर्षों तक की गई खोजबीन, सूक्ष्म निरीक्षण व पुराने ग्रन्थ भण्डारों के अवलोकन में किये गये अथक

परिश्रम की अनुभूति होती है।

हमारे स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य इस महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय करने वाले सभी परीक्षार्थियों को सुविधा हो, तथा सभी का परीक्षा में सम्मिलित होने हेतु उत्साह बढ़े इस दृष्टि से हमने 32 प्रश्नों की एक तालिका परीक्षा के पूर्व ही अगस्त माह की जिनवाणी पत्रिका द्वारा प्रकाशित की है, जिसमें से परीक्षा में 70 अंको के 10 प्रश्न पूछे जायेंगे। शेष 30 अंकों के प्रश्न समय पर ही बताये जायेंगे।

मैं चाहता हूँ कि अधिक से अधिक संख्या में श्रावक–श्राविकाएं इस परीक्षा में भाग लें, इसलिये मुझे यह निवेदन पत्र लिखने की आवश्यकता महसूस हुई। मेरा आप सभी से नम्र अनुरोध है कि परीक्षा के फार्म भरकर समय के पूर्व भिजवावें। आशा है आप इस पत्र को पढ़कर परीक्षा की तैयारी में जुट जायेंगे।

पुस्तक प्राप्ति स्थान–1. श्री रतनलाल सी. बाफना ज्वैलर्स, 'नयनतारा सुभाष चौक, जलगांव– 425001 (महा.), फोन नं. 0257–225903, 223903 2. जैन इतिहास समिति, लाल भवन, चौड़ा रास्ता, जयपुर– 302004 (राज.)

– रतनलाल सी. बाफना

आवेदन-पत्र का प्रारूप

आवेदक का नाम.....

पिता / पति का नाम.....

आयु (1 नवम्बर 2001 को)..... जन्म दिनांक.....

पत्र व्यवहार का स्थायी पता मय पिन कोड व फोन नं. सहित–

.....

.....

परीक्षा केन्द्र का नाम व पता जहां आप परीक्षा देना चाहते हैं:–

.....

.....

स्थानीय संघ, अध्यक्ष का नाम व पूरा पता

.....

.....

स्थानीय धार्मिक कार्यकर्ता का नाम व पूरा पता

.....

.....

आवेदन पत्र स्वीकारने की अंतिम तिथि– 31.8.2001

दिनांक..... हस्ताक्षर आवेदक

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

***The Jaina world of Non-living**: Dr. N.L. Jain, **Publisher- 1-** Parshvanath Vidyapeeth, I.T.I. Road, Karaundi, Varanasi-221005 **2-** Pradyuman Zaveri, 5829 Broad will Drive, Plano Tx, 75093 U.S.A., **Pages**- about 300, **Price**-Rs 400, $36-00, £ 22-00 **Year** 2001*

तत्त्वार्थसूत्र पर भट्ट अकलंक विरचित तत्त्वार्थराजवार्तिक (तत्त्वार्थवार्तिक) का हिन्दी अनुवाद के साथ प्रकाशन भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली से वर्षों पूर्व हुआ था। उसका नया संस्करण भी प्राप्त है। डॉ. एन.एल. जैन तत्त्वार्थवार्तिक के एक-एक अध्याय को लेकर अंग्रेजी अनुवाद एवं टिप्पण प्रस्तुत कर रहे हैं। प्रस्तुत समीक्ष्य कृति से पूर्व उन्होंने तत्त्वार्थवार्तिक के आठवें अध्याय के आधार पर Jaina Karmology एवं द्वितीय अध्याय के आधार पर Biology in Jaina Treatise on Reals कृतियाँ प्रस्तुत की हैं। डॉ. जैन ने सबमें एक जैसी शैली अपनाते हुए तत्त्वार्थवार्तिक का तो अनुवाद किया ही है, किन्तु स्वयं की ओर से पूरक टिप्पण (Supplementary notes) भी दिए हैं। पूरक टिप्पण तत्त्वार्थवार्तिक को समझने में सहायक हैं। डॉ. जैन ने आगे-पीछे के सम्बद्ध सूत्रों एवं विवरण से भी अपने पूरक टिप्पणों को योजित किया है। तत्त्वार्थवार्तिक का पंचम अध्याय The Jaina world of Nonliving के नाम से प्रस्तुत किया है। जैन दर्शन में निरूपित धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल और काल का विवेचन इस अध्याय में हुआ है। डॉ. जैन का अंग्रेजी अनुवाद स्वकीय टिप्पणों के कारण अधिक उपयोगी बन गया है। डॉ. जैन विज्ञान के प्राध्यापक रहे, अतः उन्होंने आधुनिक विज्ञान से भी जैन मान्यता की तुलना की है। पूरक टिप्पण बहुत विस्तृत एवं विचारपूर्ण हैं।डॉ. जैन की इस कृति का निश्चित ही स्वागत होगा।

***वर्द्धमान पंचांग**- पं. महेशकुमार जैन, **प्रकाशक**-संस्कृत ज्योतिष कम्प्यूटर एकेडमी, सर्वार्थसिद्धि, 3171 ई, सुदामा नगर, इन्दौर- 452001, **पृष्ठ** 80, **मूल्य**- 25 रुपये*

विक्रम संवत् 2058 एवं सन् 2001-2002 के लिए जैनदर्शन शास्त्री पं. महेशकुमार जैन ने विस्तृत पंचांग तैयार किया है। पंचांग में कुण्डली निर्माण की विधि एवं अनेक स्थानों के अक्षांश तथा देशान्तर भी दिए गए है। पंचांग अपने आप में पूर्ण प्रतीत होता है।

समाज-दर्शन

धूलिया चातुर्मास में जागृति के प्रयास

महाराष्ट्र की धर्मधरा धूलिया में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म. सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 10 के चातुर्मास से जिनशासन की महती प्रभावना हो रही है। आचार्यप्रवर के व्याख्यानों से धर्माराधना का शुद्धस्वरूप प्रकट हुआ है। ओसवाल समाज में व्याप्त सामाजिक कुरूढ़ियों के मूलोच्छेदन हेतु भी जागृति आई है। बालक–बालिकाओं में धार्मिक ज्ञान की वृद्धि हेतु धूलिया शहर एवं उपनगरों में 13 धार्मिक पाठशालाएं प्रारम्भ हुई हैं। बालक–बालिकाओं में संस्कार निर्माण हेतु भी सजगता आई है। एतदर्थ दो बाल संस्कार निर्माण शिविर भी आयोजित हुए, जिनमें लगभग 400 बालक– बालिकाओं ने भाग लिया।

पर्वाधिराज पर्युषण में 50 वर्षों में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में सामायिक एवं पौषधव्रत की साधना एवं आराधना देखी गई। सम्वत्सरी महापर्व के दिन पूरी तरह व्यवसाय बन्द रहे। 40 वर्षों से निकलने वाला जुलूस भी इस बार नहीं निकला, एवं दयाव्रत–पौषधव्रत का आराधन किया गया। पर्वाधिराज पर्युषण के दिनों में पुरुषों एवं महिलाओं में रात–दिन संवर की आराधना करते हुए दया–पौषधव्रत की नवरंगी 50 वर्षों के बाद इस रूप में पहली बार सम्पन्न हुई। अष्ट दिवसीय साधना हेतु बालोतरा, जयपुर, सैलाना, नागौर, अहमदाबाद, चेन्नई, रतलाम एवं महाराष्ट्र प्रान्त के अनेक भक्तगण उपस्थित हुए। उत्साह एवं उल्लासमय वातावरण में धर्माराधन हुआ। धूलिया की सुश्राविका श्रीमती विमला देवी जी चोरड़िया ने 22 दिवसीय तप किया। सैंधवा निवासी सुश्री दिव्या बुरड़ ने 25 उपवास किए। चातुर्मास काल में 31,22,15,12,9,8,7,6,5,4 दिवसीय तप, तेले, बेले, उपवास, पौषध, दयाव्रत, पचरंगी, नवरंगी(24 घण्टे की) का आराधन हुआ।

धूलिया में यद्यपि जैन घरों की अच्छी संख्या हैं, तथापि जागृति की महती आवश्यकता है। आचार्यप्रवर ने समाज में व्याप्त कुरूढ़ियों पर प्रहार करते हुए प्रेरणा की कि वैवाहिक समारोहों में पुरुष एवं स्त्रियों में से किसी का भी नाच न हो, पूर्ण शराबबंदी हो, आतिशबाजी का प्रयोग नहीं हो, पाणिग्रहण संस्कार रात्रि में नहीं हो, सामूहिक भोजों का आयोजन रात्रि में नहीं हो, सामूहिक भोजो में जमीकंद का प्रयोग नहीं हो, फूलों के मण्डप नहीं बनाये जायें, भोजन में असीमित भोज्य वस्तुएँ (आईटम) न हों। धूलिया का सकल जैन समाज आमसभा में इन बिन्दुओं पर निर्णय करने हेतु प्रयासरत है।

जूठन नहीं छोड़ने की प्रेरणा करते हुए आचार्य श्री ने फरमाया कि एक व्यक्ति द्वारा एक कौर भी जूठा डालने की स्थिति में देश में 4 करोड़ व्यक्तियों के भूखा रहने का प्रसंग बन सकता है, और जूठा नहीं डालने पर भारत की एक अरब की आबादी में 4 करोड़ व्यक्तियों की क्षुधा शान्त हो सकती है। आचार्य श्री की इस

प्रेरणा से व्याख्यान में उपस्थित लगभग सभी भाई–बहिनों ने भोजन में जूठन नहीं डालने की प्रतिज्ञा की।

पीपाड़ में ज्ञानाराधन एवं धर्माराधन का ठाट

पीपाड़–तपस्वी श्री बसन्तमुनिजी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा. एवं सेवाभावी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. के चातुर्मास में जबर्दस्त धार्मिक जागृति का वातावरण चल रहा है। सन्तों के स्वास्थ्य में समाधि है। प्रार्थना, प्रवचन एवं प्रतिक्रमण में अच्छी उपस्थिति रहती है। श्री गौतममुनि जी म.सा. के प्रवचनों का अच्छा प्रभाव है। छोटे बच्चों हेतु चातुर्मासिक धार्मिक शिक्षण शिविर चल रहा है। 8 से 12 वर्ष की उम्र के कई बच्चे प्रतिक्रमण सीख रहे हैं। अब तक लगभग 50 अठाई तप, दो मासखमण तप एवं एक सिद्धि तप हो गए हैं। छोटी–मोटी तपस्याएँ चलती रहती हैं। पर्युषण में दया–संवर एवं उपवास–पौषध की अच्छी धर्माराधना हुई। सम्वत्सरी एवं पर्युषण के प्रारम्भ के दो दिनों में प्रतिदिन 250–300 दया–पौषध हुए। भाद्रपद शुक्ला 13 को पूज्य जयमल जी म.सा. की 294वीं जन्म जयंती पर 294 दयाव्रत हुए, जो अपने आप में एक इतिहास है। पीपाड़वासी उत्साह एवं उमंग से अतिथियों की सेवा में भी संलग्न हैं। अक्टूबर में 5 दिवसीय स्वाध्याय शिविर सम्भावित है।

साध्वी-मण्डल के चातुर्मासों में अच्छा धर्माराधन

जोधपुर– पावटा स्थानक में साध्वीप्रमुखा प्रवर्तिनी महासती श्री लाडकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में, घोड़ों का चौक स्थानक में सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासनप्रभाविका विदुषी महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. के सान्निध्य में तथा पर्युषण पर्वाराधन के समय नेहरु पार्क में महासती श्री शान्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में अच्छा धर्माराधन हुआ। तपस्याओं में 51 दिवसीय, 31 दिवसीय, 15 दिवसीय, आठ दिवसीय अनेक तप हुए। पौषध, उपवास, दया, संवर आदि की खूब आराधना हुई। प्रवचनों में सर्वत्र ही अच्छी संख्या में उपस्थिति रही। श्रावक–श्राविकाओं ने उत्साह से धर्माराधन करते हुए अनेक व्रत-नियम अंगीकार किये। श्री जैन रत्न युवक परिषद् का अच्छा योगदान रहा।

किशनगढ़– शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शांतिकंवर जी म.सा., महासती श्री इन्दुबाला जी म.सा. आदि ठाणा 5 के चातुर्मास में धर्मचक्र, पंचरंगी, सतरंगी, दया, उपवास, पौषध का उत्साह से आराधन हुआ है। एकाशन का मासखमण एवं 45 आयम्बिल तप हुए हैं। प्रतिदिन एक आयम्बिल और अष्टमी चतुर्दशी को सामायिकों की पचरंगी होती है। प्रत्येक रविवार को अलग–अलग विषयों पर बालकों एवं महिलाओं में प्रतियोगिता का आयोजन होता है। कुछ ऐसे भाई–बहनों ने भी सामायिक एवं दयाव्रत किए, जिन्होंने पहले कभी नहीं किए। प्रवचन में अच्छी उपस्थिति रहती है।– **पूजा लोढ़ा**

धनोप–व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 5 के सान्निध्य में धर्माराधन एवं तपाराधन का ठाट लगा हुआ है। महासती श्री परागप्रभाजी म.सा. के 22 दिवसीय तपस्या सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गई है। 15,11, 8, 5 दिवसीय तपस्याएँ भी हुई हैं। सतियों के स्वास्थ्य में समाधि है। निकटवर्ती एवं दूरवर्ती ग्राम–नगरों के श्रद्धालु महासती जी के प्रवचनों का लाभ ले रहे हैं।

–धर्मीचन्द पालड़ेचा

मसूदा–व्याख्यात्री महासती श्री निशल्यवती जी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में चातुर्मास बहुत ही अच्छा चल रहा है। धर्म–ध्यान का ठाट लगा हुआ है। पर्युषण पर्व पर प्रवचन में उपस्थिति प्रशंसनीय रही। महासती श्री श्रुतिप्रभा जी म.सा. ने अंतगड का वाचन किया, महासती श्री मतिप्रभा जी म.सा. एवं महासती श्री निशल्यवती जी म.सा. ने रोचक एवं प्रभावशाली शैली में प्रवचन फरमाया। 29 जून से आयम्बिल तप तथा नमस्कार मन्त्र का जाप निरन्तर चल रहा है। तपस्याएँ बिना किसी आडम्बर के हो रही हैं। उपवास, बेला, तेला, पचोला, छः, अठाई, ग्यारह, पचरंगी, धर्मचक्र, सतरंगी, नवरंगी आदि तपस्याएँ चल रही हैं। 66 तेले हुए हैं। 4 पचरंगी हो चुकी है। तीन एकाशन के मासखमण एवं दया के मासखमण 6 हुए हैं। 8 एकान्तर तप चल रहे है।

सैन्धवा–महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा., महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में 8 मासखमण पूर्ण हो चुके है। पूज्य महासती श्री उदित प्रभा जी म.सा. के अतिरिक्त श्री शेलैष भाई गांधी, सौ. पवनदेवी प्रकाशचन्द जी सुराणा, सौ. किरण गौतमचन्द जी सुराणा, कु. दिव्या गोकुलचन्द जी बुरड़, सौ. कल्पना सुगनचन्द जी संकलेचा, सौ. स्मितादेवी नरेन्द्र कुमार जी ओस्तवाल, श्री संतोष कुमार जी शाह के द्वारा दीर्घकालीन तप सम्पन्न हुए।16, 11, 8, 9, 5, 4, 3 आदि की अनेक तपस्याएँ हुई। बेले–बेले पारणा, एकान्तर उपवास, एकाशन के मासखमण, आयम्बिल मासखमण आदि अनेकविध तप का आराधन हुआ। तपस्याएँ अभी भी निरन्तर चल रही हैं। पर्युषण पर्वाराधन में नमस्कार मंत्र के अखण्ड जाप, पचरंगी तप, शास्त्र वाचन एवं ज्ञान–ध्यान का ठाट रहा। चातुर्मास के प्रारम्भ से ही आयम्बिल तप की शृंखला चल रही है। प्रत्येक रविवार को बालकों का शिक्षण शिविर, धार्मिक प्रतियोगिताएँ, प्रश्नमंच का आयोजन होता है। अनेक विद्याभिलाषियों द्वारा सामायिक, प्रतिक्रमण, 25 बोल, 67 बोल, दशवैकालिक सूत्र, उत्तराध्ययन सूत्र का अभ्यास किया जा रहा है।– **प्रेमचन्द सुराणा**

जयपुर में श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा शिविर

श्री जैन रत्न युवक परिषद्, जयपुर के तत्त्वावधान में 16 मई से 15 जून 2001 तक बालक–बालिकाओं का धार्मिक शिक्षण शिविर आयोजित किया गया, जिसमें शहर एवं उपनगरों के लगभग 300 बालक–बालिकाओं ने भाग लेकर ज्ञानार्जन किया। शिविर का समापन एवं पारितोषिक वितरण समारोह 24 जून

2001 को सुबोध पब्लिक स्कूल, रामबाग सर्किल के सभागार में आयोजित किया गया। श्री वी.के. हंसुका (महानिदेशक, राजस्थान पुलिस, जयपुर) मुख्य अतिथि थे। श्री रमेशचन्द जी जैन (उपसचिव मुख्यमंत्री, सचिवालय, जयपुर) विशिष्ट अतिथि थे। श्री विनयचन्द जी नवलखा (उपाध्यक्ष, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ) ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 6 जनवरी 2002 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की कक्षा पहली से दसवीं तक की आगामी परीक्षा 6 जनवरी 2002, रविवार को दोपहर 12 से 3 बजे तक विभिन्न परीक्षा केन्द्रों पर आयोजित होगी। परीक्षा हेतु आवेदन-पत्र व सम्बन्धित कक्षा की पुस्तकें प्रधान कार्यालय से प्राप्त की जा सकती है। आवेदन पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय में जमा कराने की अन्तिम तिथि 30 नवम्बर 2001 है। आवेदन पत्र स्पष्ट एवं पूर्णरूपेण भरे होने चाहिए। एक फोटो संलग्न करना अनिवार्य है। अपूर्ण आवेदन स्वीकार्य नहीं होंगे।

बीस से अधिक परीक्षार्थी होने पर नया परीक्षा केन्द्र खोलने की अनुमति प्रदान की जा सकती है। पिछली कक्षा की पुस्तक में से 10 प्रतिशत अंक के प्रश्न वे भी सूत्र, तत्त्व एवं सामान्य विभाग में से तथा प्रश्नपत्र के भाग 'अ' में पूछे जायेंगे।

अधिक जानकारी के लिये निम्न पते पर सम्पर्क करें–**विमला मेहता, संयोजक/नवरतन डागा, सचिव, अ. भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर– 342001 (राज.) फोन नं. 641445, 435637**

जैनविद्या एवं प्राकृत (पालि, संस्कृत, अपभ्रंश सहित) विषय पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम

सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग के तत्त्वावधान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के सौजन्य से 22 अक्टूबर से 11 नवम्बर 2001 तक जैनविद्या एवं प्राकृत(पालि, संस्कृत, अपभ्रंश सहित) विषय पर उदयपुर में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (रिफ्रेशर कोर्स) आयोजित है। इसमें देश के सभी भागों से जैनविद्या, प्राकृत, पालि, संस्कृत एवं अपभ्रंश के प्राध्यापक गण भाग ले सकते हैं। इच्छुक प्राध्यापक पाठ्यक्रम के निदेशक प्रो. प्रेमसुमन जैन, विभागाध्यक्ष जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान) से सम्पर्क कर निर्धारित प्रपत्र एवं विवरणिका मंगवा सकते हैं। राजस्थान में इस विषय पर यह पुनश्चर्या पाठ्यक्रम सर्वप्रथम उदयपुर में प्रारम्भ किया जा रहा है। आवेदन पत्र प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि 30 सितम्बर 2001 है। –**प्रो. प्रेमसुमन जैन, निदेशक**

काचीगुड़ा में आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की परीक्षाएँ

29 जुलाई 2001 को पूनमचन्द गांधी जैन स्थानक, काचीगुड़ा में महासती श्री प्रकाशकुंवर जी म.सा. के मंगलपाठ से श्री आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी संघ ने अ.भा.

श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की परीक्षाओं का आयोजन किया। 1 से 8 कक्षाओं की परीक्षा में 150 परीक्षार्थियों ने भाग लिया। आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी संघ की ओर से सभी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया गया।– **कमलेश बोहरा**

मांस निर्यात रोकने हेतु ११० सांसदों के हस्ताक्षर

जबलपुर– जीव हत्या रोकने, पशुओं को बचाने एवं पर्यावरण की रक्षार्थ मांस निर्यात रोकने के लिए देश के विभिन्न दलों के 110 सांसदों ने प्रतिज्ञा पत्र भरकर आचार्य श्री विद्यासागर जी को प्रेषित किए हैं। अ.भा. मांस निर्यात विरोध आन्दोलन के राष्ट्रीय संयोजक त्रिलोक जैन के द्वारा चलाये जा रहे आंदोलन को देश के प्रमुख सांसदों ने अपना समर्थन दिया है। सांसदों के कुछ नाम इस प्रकार हैं– करिया मुण्डा, विजय मल्होत्रा, साहिबसिंह वर्मा, मदनलाल खुराना, प्रहलाद पटेल, कैलाश जोशी, उमा भारती, गिरिजा व्यास, प्रफुल्ल कुमार माहेश्वरी, जय श्री बैनर्जी, रामनरेश त्रिपाठी, फग्गन सिंह कुलस्ते, विनोद खन्ना, अजय चौटाला, कीर्ति आजाद, लक्ष्मीनारायण पांडेय, रामकृष्ण कुशमारिया आदि। इनमें कुछ राज्यसमा के सदस्य हैं तो कुछ लोकसभा के।

मूक पशुओं के प्रति जीव दया में जहां लोगों की भावनाओं में अभिवृद्धि हुई है वहीं अब बात पूरी प्रखरता से देश की संसद में उठाने के लिए देश के सांसदों ने प्रतिज्ञा की है। निश्चित तौर पर जनप्रतिनिधियों का यह प्रयास अहिंसा की दिशा में महत्त्वपूर्ण कदम है।

पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम २००२

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी द्वारा संचालित अपभ्रंश साहित्य अकादमी द्वारा 'पत्राचार अपभ्रंश सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम' का दसवां सत्र 1 जनवरी 2002 से आरम्भ किया जा रहा है। इसमें हिन्दी एवं प्रान्तीय भाषा विभागों के साथ–साथ अन्य सभी विभागों के अध्यापक, शोधार्थी, अध्ययनरत छात्र एवं संस्थानों में कार्यरत विद्वान् सम्मिलित हो सकेगें। नियमावली एवं आवेदन.पत्र दिनांक 30 सितम्बर 2001 तक अकादमी कार्यालय– दिगम्बर जैन नसियां भट्टारकजी, सवाईरामसिंह रोड़, जयपुर–302004 से प्राप्त करें। कार्यालय में आवेदन पत्र पहुंचने की तारीख 15 अक्टूबर 2001 तक है।– **डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक अपभ्रंश साहित्य अकादमी**

पत्राचार जैन धर्म-दर्शन एवं संस्कृति सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम २००२

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्री महावीर जी द्वारा संचालित जैन विद्या संस्थान, भट्टारकजी की नसियां, सवाईरामसिंह रोड़, जयपुर–4 द्वारा निर्धारित उपर्युक्त पाठ्यक्रम भारत स्थित उन अध्ययनार्थियों के लिए होगा जिन्होंने किसी भी विश्वविद्यालय से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की है। इसका माध्यम हिन्दी भाषा होगा। पाठ्यक्रम का सत्र 1 जनवरी 2002 से 31 दिसम्बर 2002 तक रहेगा।

निर्धारित आवेदन.पत्र जयपुर कार्यालय से मंगवाकर 30 अक्टूबर 2001 तक भेजें।– **डॉ. कमलचन्द सोगाणी, संयोजक**

पोरवाल क्षेत्र में ५६ दिवसीय तप का कीर्तिमान

अलीगढ़(टोंक)– सुश्रावक श्री राजमल जी जैन ने 75 वर्ष की वय में 56 दिवसीय तिविहार त्याग के साथ अनशन तप किया है। उन्होंने 2 जुलाई 2001 को तप प्रारम्भ किया, जिसका पूर 26 अगस्त 2001 को अलीगढ़–रामपुरा में ही मधुर व्याख्यानी महासती श्री बसन्तकंवरजी महाराज आदि ठाणा के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। तपस्वी श्री राजमल जी ने इससे पूर्व दो मासखमण एवं एक बार 27 दिवसीय तप किया है। अठाई तप, एकान्तर अनशन, एकान्तर बेला एवं तेला तप भी वे करते रहते हैं। पूर के दिन पोरवाल क्षेत्र के विभिन्न ग्राम–नगरों से सहस्राधिक साधर्मी उपस्थित हुए।–**धर्मेन्द्र कुमार जैन**

संक्षिप्त समाचार

अलवर– श्रमण संघ के उपप्रवर्तक श्री विनयमुनि जी 'वागीश' आदि ठाणा 4 के सान्निध्य में 12 अगस्त को उपाध्याय श्री कन्हैयालाल जी म.सा. 'कमल' का स्मरण कर गुणानुवाद किया गया। श्री कमलचन्द जी मुणोत एवं श्री ताराचन्द जी पालावत ने सजोड़े शीलव्रत अंगीकार किया। लगभग 250 एकाशन तप हुए।

–राजेन्द्र संचेती, मंत्री

नोखा चाँदावता–महासती उमरावकंवर जी म.सा. 'अर्चना' का 80वाँ जन्मदिवस 11 अगस्त 2001 को नोखा चांदावता में तप–त्यागपूर्वक मनाया गया। इस दिन को चिरस्मरणीय रखने हेतु संघमंत्री श्री आर. पदमचन्द जी चोरड़िया ने दो योजनाओं की घोषणा की। प्रथम में आर्या अर्चना उमराव फाउण्डेशन का गठन किया गया, जिसके अन्तर्गत उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र–छात्राओं को ऋण छात्रवृत्ति दी जाएगी। इसके लिए 4.50 लाख रूपये की राशि एकत्रित हुई। दूसरी योजना के अन्तर्गत नोखा में नेत्र शिविर की भांति ई.एन.टी. शिविर लगाया जायेगा।श्री जयमल जैन जयन्ती के अवसर पर 30 अगस्त 2001 को विशाल कार्यक्रम हुआ। महासती डॉ. हेमप्रभा जी की पुस्तक 'जैन स्तोत्रसाहित्य का समीक्षात्मक अध्ययन' का लोकार्पण भी किया गया।

गंगाशहर,भीनासर–जैन जवाहर विद्यापीठ के प्रांगण में मुमुक्षु प्रक्षिण शिविर के तेरहवें दिन श्री अबीरचन्दजी सेठिया की भावना के अनुसार मुमुक्षु शिक्षण प्रशिक्षण ट्रस्ट की स्थापना की गई। इस ट्रस्ट का प्रारम्भ 2 लाख 51 हजार रुपये से हुआ है। मुमुक्षु प्रशिक्षण शिविर 14 दिन चला, जिसमें 28 मुमुक्षु भाई.बहनों ने भाग लिया। शिविर में अनुशासन, विनय, विवेक पर बल देते हुए समीक्षण ध्यान, योगासन, प्राणायाम आदि के साथ संस्कृत, प्राकृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी का आवश्यक ज्ञान कराया गया। मुमुक्षुओं ने प्रतिवर्ष इस प्रकार के शिविरों की आवश्यकता बतायी।

जयपुर– इण्टरनेशनल जैन एण्ड वैश्य ऑर्गेनाइजेशन नामक संस्था ने दिल्ली,

हरियाणा एवं उत्तरप्रदेश में पहचान बनाने के बाद अब राजस्थान में भी अपना कार्य प्रारम्भ किया है। संस्था 10 सूत्री कार्यक्रम लेकर चल रही है। इसके विवाह सूचना केन्द्र से लेकर जीवदया प्रकोष्ठ तक के समाज संबंधी अनेक केन्द्र हैं। रोजगार, चिकित्सा, शिक्षा, महिला उत्थान आदि के भी कार्यक्रम हैं। यह संगठन दिगम्बर, श्वेताम्बर, स्थानकवासी, तेरहपंथ आदि सभी सम्प्रदायों से सम्बद्ध है। जस्टिस पानाचन्द जैन संस्था के अध्यक्ष है।– **पदमचन्द जैन, महासचिव**

जयपुर–26 अगस्त 2001 को श्री पद्मावती पोरवाल जैन समिति, जयपुर के तत्त्वावधान में सुबोध पब्लिक स्कूल के प्रांगण में सामूहिक क्षमापना समारोह एवं प्रीतिभोज का आयोजन रखा गया। समारोह की अध्यक्षता श्री हरकचन्द जी जैन, बिलोता वालों ने की। इस अवसर पर तपस्वीजनों एवं प्रतिभाशाली छात्र–छात्राओं का बहुमान किया गया। समारोह में विभिन्न प्रतियोगिताएँ आयोजित कर विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। –**राजेन्द्र जैन, 'राजा' मन्त्री**

भवानीमण्डी– अखिल भारतीय अहिंसा प्रचार समिति के समर्पित संचालक युवारत्न श्री नितेश जी नागोता 'जैन' एवं संयोजक कालूलाल जी सालेचा व कार्यकर्ता श्री अरविन्द जी पिछोलिया के सक्रिय प्रयासों व स्थानीय श्रीसंघ के अर्थसहयोग से पर्वाधिराज पर्युषण के आठों दिन भवानीमण्डी, पचपहाड़, भैंसोदामंडी के समस्त कसाईखाने, मांसाहारी होटलें पूर्णतः बंद रही, जिसके तहत सैकड़ों जीवों को जीवनदान मिलने का मार्ग प्रशस्त हुआ है। मांस व्यापार करने वाले 24 महानुभावों को क्षमापना दिवस पर उनके अहिंसात्मक सहयोग के लिए सम्मानित किया गया और इस अवसर पर जीवन पर्यन्त के लिए मांस.मदिरा का त्याग करने वाले श्री मकसूद मंसूरी, गफार मंसूरी, भाई विरेन्द्र और फूलचन्द मेघवाल को सम्मानित किया गया।–**राजेन्द्र प्रसाद जैन, एडवोकेट**

बधाई

जोधपुर– श्री अंकित जैन (रेड़) सुपुत्र श्री महावीर-उषा जी जैन एवं सुपौत्र श्री इन्द्रमल–गुमानकंवर जी रेड द्वारा सन् 2001 की सीनियर सैकेण्डरी परीक्षा में राजस्थान में छठा स्थान प्राप्त किया गया। अखिल भारतीय श्री जैनरत्न युवक परिषद् ने भी श्री अंकित जैन को शिक्षा के क्षेत्र में उच्च उपलब्धि के लिये सम्मानित किया है।

बैंगलोर–श्री बी. रमेश कुमार जी गादिया (जैन) सुपुत्र श्री भीकमचन्द जी गादिया को 'मध्यकालीन हिन्दी साहित्य पर जैन दर्शन का प्रभाव' विषय पर बैंगलोर विश्वविद्यालय ने पी.एच.डी. उपाधि प्रदान की है। मूलतः उत्तर भारतीय को बैंगलोर में यह प्रथम डाक्टरेक्ट उपाधि प्राप्त हुई है।

अहमदनगर– कुमारी स्नेहल मदनलाल जी गांधी ने सी.ए. फाउण्डेशन की परीक्षा में भारत में 25 वाँ स्थान प्राप्त किया है। कुमारी स्नेहल को धीरूभाई अम्बानी

फाउण्डेशन द्वारा छात्रवृत्ति प्राप्त हो रही है। वह धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों को रुचिपूर्वक सम्पन्न करती है।

श्रद्धांजलि

जोधपुर– समर्पित गुरुभक्त वीरपिता श्री भंवरलाल जी सुराणा का स्वर्गवास हो गया। आप पर्वाधिराज पर्युषण के समय धर्माराधना हेतु महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. के चातुर्मास में मसूदा पधारे हुए थे। वहां पर ही अचानक स्वास्थ्य में प्रतिकूलता आने पर आपको जोधपुर लाया गया। औषधोपचार एवं सेवा–सुश्रूषा के पश्चात् भी आपका आयुष्य पूर्ण हो गया। संघ-सेवा और समाज-सेवा में आपका योगदान कभी भुलाया नहीं जा सकेगा। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. एवं सन्त-सतीवृन्द के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा-भक्ति थी। आपकी सुपुत्री सुश्री निर्मला जी रत्नवंश में व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा. के नाम से जिनशासन की सेवा कर रही है। सामायिक, स्वाध्याय एवं व्रत-नियमों में वीरपिता की सदा से अच्छी रुचि रही। सरलता, सादगी, सहिष्णुता, स्पष्टवादिता जैसे सद्गुणों के कारण संघ–समाज में आपकी विशिष्ट पहचान थी। आप सच्चे अर्थों में संघहितैषी एवं संघसेवी श्रावक थे। आप अपने पीछे श्रीपालचन्द जी, स्वरूपचन्द जी एवं रतनचन्द जी सुराणा का भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जोधपुर–सुश्राविका श्रीमती प्रेमकंवर जी भण्डारी धर्मपत्नी भण्डारी श्री सरदारचन्द जी जैन (प्रमुख स्वाध्यायी श्रावक) का 27 अगस्त 2001 को 63 वर्ष की उम्र में देहावसान हो गया। आप श्रद्धानिष्ठ, सरल स्वभावी, सहिष्णु एवं परिवार में सबको साथ लेकर चलने वाली सदाचारी श्राविका थी। सामायिक, स्वाध्याय एवं व्रत-व्याख्यानों का यथासमय आराधन करती थी। अस्वस्थता के दिनों में भी नवकारसी तप करने के प्रति सजग थी। रत्नवंश के सन्त-सतियों के प्रति आपकी अगाध आस्था एवं श्रद्धाभक्ति थी। उठावणे के दिन 29 अगस्त को आपके पति एवं सुज्ञ श्रावक भण्डारी श्री सरदारचन्द जी जैन ने उपस्थित हुए सभी लोगों को सम्बोधित करते हुए दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की एवं अभ्यागतों का आभार व्यक्त किया। आपने पागों का दस्तूर एवं महिलाओं का उठावणा उसी दिन दो बजे रखने की सूचना दी। श्री भण्डारी सा. ने घोषणा की "जब मेरा स्वर्गवास हो तो अग्निसंस्कार होने के पश्चात् कोई रीतिरिवाज नहीं रखा जावे।" धैर्य एवं सद्ज्ञान के प्रतीक भण्डारी सा. ने सभी आगतों को 'चत्तारि मंगलं' के पाठ से मांगलिक सुनाई। दिवंगत श्राविका तीन पुत्रों श्री अजीतचन्द जी, श्री आदेश्वरचन्द जी एवं श्री अभिनन्दन जी तथा तीन पुत्रियों सरला जी, कमला जी, चन्दनबाला जी

(अलका जी) एवं पौत्र.पौत्रियों सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

जोधपुर– श्रद्धानिष्ठ गुरुभक्त श्री हुक्मीचन्द जी चौपड़ा सुपुत्र स्व. श्री हीरालाल

जी चौपड़ा का 25 अगस्त 2001 को हृदयगति रुक जाने से 60 वर्ष की आयु में आकस्मिक देहावसान हो गया। आप स्वस्थ अवस्था में बात करते–करते चिरनिद्रा में सो गए। राजकीय सेवा में सम्मानित एवं ईमानदार सहायक लेखाधिकारी के पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् आपने स्वयं को संघ सेवा एवं धर्माराधन में समर्पित कर दिया। नियमित सामायिक एवं स्वाध्याय के साथ प्रतिक्रमण एवं व्रत–नियमों के प्रति भी आप सजग थे। व्यवहार की सरलता, वाणी की मधुरता और मन की निष्कपटता के कारण आप सबके प्रिय थे। पावटा स्थानक में आप अग्रणी कार्यकर्ता एवं धर्मसाधना में दूसरों को भी आगे बढ़ाने वाले श्रावक रत्न थे। आपकी धार्मिक जानकारी भी अच्छी थी। ओघा–पूंजनी बांधने में भी आप कुशल थे एवं आवश्यकता पड़ने पर तत्पर रहते थे। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय प्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त.सतियों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा भक्ति थी।आप अपने पीछे पत्नी, दो पुत्र एवं पुत्री छोड़कर गए हैं।

अहमदाबाद– श्री उगमराज जी मेहता का 13 जुलाई 2001 को स्वर्गवास हो गया। आप दृढधर्मी एवं तत्त्वज्ञ सुश्रावक थे। नियमित रूपसे सामायिक एवं स्वाध्याय के साथ व्रत–नियम किया करते थे।

चेन्नई– श्री आनन्दमल जी कांकरिया का 10 मई 2001 को हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। आपने तेले, अठाई, आयम्बिल ओली आदि तप किए थे। आप अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

जयपुर– जयपुर के जैन समाज के स्तम्भ, समाजसेवी, विश्वप्रसिद्ध जौहरी,

धर्मनिष्ठ चिन्तक स्व. बाबू सा. श्री श्रीचन्दजी गोलेच्छा की धर्मपत्नी **श्रीमती कंचनदेवी जी गोलेछा** का 14 अगस्त 2001 को आकस्मिक देहावसान हो गया। आप सरलहृदया, ममतामयी एवं धार्मिक संस्कारों से ओतप्रोत आदर्श सुश्राविका थी। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी आप दृढ़ता एवं धैर्य रखकर चलने वाली श्राविका थी। आपने अपने जीवनकाल में पुत्रों एवं पति का वियोग देखा। आप किशनगढ़ के प्रतिष्ठित जामड़ परिवार के स्व. श्री मिलापचन्द जी जामड़ की सुपुत्री थी। आपकी पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म. सा. एवं सन्त–सती मण्डल के प्रति अगाध आस्था एवं भक्ति थी। आप प्रतिवर्ष स्व. बाबू सा. के साथ पूज्य आचार्यप्रवर के चरणों में उपस्थित होकर धर्माराधना का लाभ लिया करती थी। आप अपने पीछे धार्मिक संस्कारों से युक्त सुयोग्य सुपौत्रों सहित भरापूरा संस्कारशील परिवार छोड़ कर गई हैं।

मदनगंज-किशनगढ़– श्री विनोद कुमार जी मोदी सुपौत्र श्री बहादुरमल जी मोदी

एवं सुपुत्र श्री अमरचन्द जी मोदी का 32 वर्ष की वय में दिनांक 19 अगस्त 2001 को बस दुर्घटना में आकस्मिक निधन हो गया। आप होनहार युवक थे। युवावस्था में उनके निधन से परिवार पर वज्रपात हुआ है। मोदी परिवार रत्नवंश के प्रति समर्पित हैं। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा. एवं सन्त–सतीवृद की सेवा में पूरा परिवार हमेशा तत्पर रहता हैं।

जोधपुर– श्रीमती गुमानकंवर जी धर्मपत्नी श्री इन्द्रमल जी जैन रेड़ का 60 वर्ष की

वय में 7 जुलाई 2001 को स्वर्गवास हो गया।आप श्रद्धानिष्ठ एवं धर्मपरायण श्राविका थी। प्रतिदन सामायिक, स्वाध्याय, व्रत. प्रत्याख्यान आदि करती थी। आपने अठाई, तेला आदि अनेकविध तपस्याएँ की थी। 4 वर्ष पूर्व थांवला में आपने उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. से आजीवन शीलव्रत अंगीकार कर लिया था। आप सरलस्वभावी, सहिष्णु एवं श्रमशील थी। रत्नवंश के आचार्यों, उपाध्यायप्रवर एवं सन्त-सतियों के प्रति आपकी अगाध श्रद्धा–भक्ति थी। आप अपने पीछे पुत्र-पौत्रों का भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं।

ब्यावर–गुरुभक्त सुश्रावक श्री मीठालाल जी गोलेच्छा का 2 सितम्बर 2001 को

संथारापूर्वक स्वर्गवास हो गया। संत-सतियों के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण एवं सत्संग सेवा के रसिक श्री गोलेच्छा साहब सामायिक-स्वाध्याय और व्रत-प्रत्याख्यानों के आराधन में सक्रिय रहते थे। ब्यावर की ओर संत-सतीवृन्द के विहार की ज्यों ही सूचना प्राप्त होती आप भक्ति-भावना से विहार-सेवा में तत्पर होने वाले अग्रणी श्रावक थे। अपने पैतृक गांव गिरी की ओर से विनती प्रस्तुत कर वे संत-सतियों का उधर विहार के लिये मानस बना देते थे। आपकी वात्सल्य भावना अनुकरणीय थी। गांव में आने वाला गुरुभ्राता आपके आतिथ्य सत्कार में आत्मीयता का अनुभव करता था। श्रमणोचित्त औषधोपचार में भी आपकी सहज सेवाएँ रहती थी। आप कुछ समय से अस्वस्थ चल रहे थे। आप अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अतिरिक्त महामंत्री श्री हस्तीमल जी गोलेच्छा के अग्रज भ्राता थे।

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते है।

जोधपुर की धरा पर गरिमामय श्रावक सम्मेलन सम्पन्न

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ का द्विदिवसीय श्रावक-सम्मेलन 8 एवं 9 सितम्बर 2001 को जोधपुर की पावनधरा पर सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। सम्मेलन एवं वार्षिक अधिवेशन के कार्यक्रम स्काउट्स एवं गाईड हैडक्वार्टर के प्रांगण में रखे गए। प्रवचन एवं भोजन के कार्यक्रम ओसवाल कम्यूनिटी सेन्टर में सम्पन्न हुए। सम्मेलन के प्रमुख कार्यक्रम थेः–

1. **प्रवचन**– दोनों दिन प्रातःकाल 8.30 से 10.00 बजे तक शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा., महासती श्री शांतिप्रभा जी म.सा. एवं महासती श्री सुश्रीप्रभा जी म.सा. का प्रवचन।
2. **उद्घाटन सत्र**– 8 सितम्बर को प्रातः उद्घाटन सत्र में संघाध्यक्ष का उद्घाटन भाषण, वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री पी.एम. चोरड़िया की रत्नत्रय पर विचाराभिव्यक्ति, संघ महामन्त्री द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुति, सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मन्त्री द्वारा प्रतिवेदन प्रस्तुति। स्वर्णिम अतीत एवं उज्ज्वल श्रावक परम्परा पर श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना, सदस्य शासन सेवा समिति द्वारा उद्बोधन।
3. **खुलामंच**– 8 सितम्बर को अपराह्न 3.00 बजे से खुला मंच कार्यक्रम। इसमें संघ–सदस्यों, क्षेत्रीय प्रधानों एवं शाखा प्रतिनिधियों द्वारा विचार प्रस्तुति। युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल जी बोहरा, श्राविका मण्डल की कार्याध्यक्ष श्रीमती विजया जी मल्हारा आदि के द्वारा विचाराभिव्यक्ति। संघाध्यक्ष महोदय द्वारा उद्बोधन।
4. **सम्मान समारोह**– 8 सितम्बर को सायं 7.30 बजे से मेडिकल कॉलेज के सभागार में सम्मान समारोह। इसके अन्तर्गत आचार्य हस्ती स्मृति सम्मान, युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा-सम्मान एवं विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान प्रदत्त। 45 वर्ष से कम उम्र में शीलव्रत ग्रहण करने वाले दम्पतियों, पांच या पांच से अधिक मासखमण तप या वर्षीतप करने वाले तपस्वियों एवं गुणीजनों का अभिनन्दन। उत्तराध्ययन सूत्र की परीक्षा के पुरस्कारों एवं अ.भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् के विभिन्न पुरस्कारों का वितरण। संघ के गौरव स्तम्भ रहे दिवंगत सुश्रावकों का स्मृति बहुमान।
5. **वीर परिवार सम्मान एवं समापन सत्र**– 9 सितम्बर को प्रातः 10 बजे से आयोजित कार्यक्रम में सन्त–सतियों के माता–पिता अथवा परिवारजनों का सम्मान। रत्नवंश की आचार्य परम्परा एवं उसकी यशोगाथा पर शासनसेवा समिति के सदस्य श्री विमलचन्द जी डागा द्वारा विचाराभिव्यक्ति।

विस्तृत-विवरण

प्रवचन—दिनांक 8 एवं 9 सितम्बर को प्रातः 8—30 बजे ओसवाल कम्युनिटी सेन्टर पर प्रवचन का आयोजन रखा गया। शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म. सा. ने जोधपुर सहित देशभर से आए श्रावक—श्राविकाओं को संघ—सेवा में समर्पित रहने का आह्वान किया और संघ के पदाधिकारियों से अपेक्षा रखी कि वे संघ के प्रत्येक सदस्य के प्रति संवेदनशील रहने का प्रयास करें।

उद्घाटन सत्र

स्काउट्स एण्ड गाइड हैडक्वार्टर्स के विशाल प्रांगण में अत्यन्त उत्साह के साथ सम्मेलन एवं वार्षिक अधिवेशन के प्रथम सत्र का शुभारम्भ हुआ। संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत, संघ संरक्षकगण, संघाध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना, मण्डल अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, संघ कार्याध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, संघ महामन्त्री श्री अरुण जी मेहता, स्वागताध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, आयोजन समिति के संयोजक श्री नरपतराज जी चौपड़ा, श्राविका मण्डल अध्यक्ष श्रीमती विमला जी मेहता, युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल जी बोहरा को मंच पर आमन्त्रित किया गया।

बालक प्रफुल्ल गिड़िया ने नमस्कार महामंत्र की सस्वर प्रस्तुति की। श्रीमती विमला कोटड़िया,श्रीमती शान्ता कर्नावट एवं उनकी पार्टी ने समवेत स्वर में देव—गुरु स्तुति में "ओ मंत्र बड़ो नवकार वारि जाऊं मंत्र ने" गीत के माध्यम से स्तुति की।

मंचासीन पदाधिकारियों का माल्यार्पण से भावभीना स्वागत किया गया। स्वागताध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत ने सूर्यनगरी—जोधपुर में पधारे सभी महानुभावों का हृदय से स्वागत किया।

संघाध्यक्ष माननीय श्री रतनलाल जी बाफना ने अधिवेशन का शुभारम्भ करते हुए संघ के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि चतुर्विध संघ की आधारशिला आज्ञा-आराधन है। संघ के विकास के लिए समर्पण पर बल देते हुए बाफना साहब ने सेवा देने वाले श्रावक-श्राविकाओं का आह्वान किया कि वे स्वयं होकर आगे आयें। वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री पी. एम. चोरड़िया, चेन्नई ने सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र की व्याख्या करते हुए ज्ञान-दर्शन-चारित्र की आराधना में हर श्रावक के कदम निरन्तर आगे बढ़ने की आवश्यकता बतायी। युवारत्न श्री कमलेश जी चौपड़ा,बालोतरा ने स्वरचित गीत "म्हाने हस्ती रो घडियोड़ो हीरा चोखो लागे" के माध्यम से कुशलवंश पट्टावली सुमधुर स्वर में प्रस्तुत की।

संघ महामंत्री श्री अरुण जी मेहता ने प्रतिवेदन के माध्यम से संघ की गतिविधियां प्रस्तुत की तथा नन्दीसूत्र में वर्णित संघ की महिमा बतलायी। उन्होंने विद्या—विनय—विवेक वृद्धि पर और आज्ञा पालन पर बल देते हुए कहा कि जैसे वीतराग आज्ञा प्रमाण है वैसे ही संघनायक और संघाध्यक्ष की आज्ञा सहर्ष शिरोधार्य होनी चाहिये। यह संघ की प्रगति के लिए आवश्यक है।

श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने संघ के गौरव–स्तम्भ 13 श्रावकों के यशस्वी जीवन एवं उनके विशिष्ट कार्यों का सांगोपांग उल्लेख करते हुए सम्मेलन में पधारे श्रावक–श्राविकाओं से अपेक्षा रखी कि हम–सब अपने स्वर्णिम अतीत को ध्यान में लेकर उस आदर्श की ओर निरन्तर आगे बढ़ें।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री प्रकाशचन्द जी डागा ने मण्डल की विविध प्रवृत्तियों में सदस्यों के सकारात्मक सहयोग से कार्यक्रमों की सफल क्रियान्विति एवं प्रगति का संकेत किया। स्वाध्यायियों द्वारा पर्वाराधन, जिनवाणी के प्रसार में युवक संघ की भूमिका एवं साहित्य प्रकाशन में उल्लेखनीय प्रगति की झांकी प्रतिवेदन के मुख्य बिन्दु रहे।

संघ संरक्षक-मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत ने संघ को सक्रिय, सक्षम एवं स्वावलम्बी बनाने हेतु संघ के आबाल–वृद्ध सभी सदस्यों से अपेक्षा रखी कि वे संघ–सेवा में तन–मन–धन से और समर्पित भावना से जुड़ें तथा दूसरे गुरुभ्राताओं को जोड़ें। मुणोत साहब ने कहा कि दृढ़ता हमारी आस्था का परिचायक है जबकि कट्टरता हमें विवेकहीन बनाती है, इसलिए हम दृढ़ता का परिचय दें, पर कट्टरता को जीवन में स्थान न दें। संघ में हजारों लोग होते हैं, अतः एक–दूसरे के साथ मतभेद हो सकते हैं। हमारे मतभेद दूर हों इसका प्रयास करते हुए हमें यह जरूर ध्यान रखना चाहिये कि एक दूसरे के मतभेद की संघ को सजा न मिले। यदि कोई गुरुभ्राता मतभेद के कारण संघ से विमुख हो जाता है तो वह संघ के लिए ठीक नहीं है। संघ संरक्षक-मण्डल के संयोजक ने आचरण से अपनी पहचान बनाने का आह्वान किया।

प्रथम सत्र की समाप्ति के पश्चात् सम्मेलन में पधारे लगभग 2500 श्रावक–श्राविकाओं ने ओसवाल कम्युनिटी सेन्टर व ओसवाल छात्रावास में बने विशाल पाण्डाल में भोजन किया।

खुला मंच

मध्याह्न 2.30 बजे खुले मंच कार्यक्रम में संघाध्यक्ष, संघ कार्याध्यक्ष, संघ महामंत्री के अतिरिक्त सभी क्षेत्रीय प्रधान, स्थानीय शाखाओं के अध्यक्ष मंच पर विराजमान थे, जिनका माल्यार्पण से स्वागत किया गया।

इस कार्यक्रम में युवक परिषद्, श्राविका मण्डल आदि संस्थाओं के प्रमुख पदाधिकारियों, क्षेत्रीय प्रधानों, शाखा प्रमुखों एवं संघ–सदस्यों ने खुले रूप में अपनी बात कही। कुछ प्रश्न भी रखे। सर्वप्रथम युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री अनिल जी बोहरा ने युवारत्नों के राष्ट्रीय कार्यक्रमों का प्रगति–विवरण प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस वर्ष युवक परिषद् ने जिनवाणी सदस्य बनाने का राष्ट्रीय अभियान शुरु किया है और हम जिनवाणी की प्रसार संख्या शीघ्र ही 10 हजार कर देंगे।

श्राविका मण्डल की ओर से कार्याध्यक्ष श्रीमती विजया जी मल्हारा ने अपने प्रभावशाली उद्‌बोधन में कहा कि नारी, नारी का शोषण न करे। उन्होंने बालक–बालिकाओं के लिए धर्माचार्य–धर्मगुरुओं की सन्निधि के लाभ भी बताये।

संस्कारों में गिरावट के कारणों का उल्लेख करते हुए श्रीमती मल्हारा ने कहा कि बच्चा हॉस्पिटल में जन्म लेता है, हॉस्टल में पढ़ता है और होटल में खाता है तो संस्कारों का निर्माण कैसे संभव है। एक बहिन सौ शिक्षकों के बराबर काम कर सकती है इस प्रेरणा के साथ उन्होंने अपनी बात समाप्त की।

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की संयोजिका श्रीमती विमला जी मेहता ने कहा कि धार्मिक शिक्षण को व्यापक बनाने के उद्देश्य से शिक्षण बोर्ड का गठन किया गया और मुझे यह कहते हुए प्रसन्नता है कि अनेक नए क्षेत्रों में हम पहुंच सके हैं। प्रथम परीक्षा में 1900 तथा दूसरी बार करीब 4800 फार्म आए हैं। आप सब धार्मिक ज्ञान का महत्त्व जानते हैं इसलिए अधिक–से–अधिक लोगों को प्रेरणा कर शिक्षण बोर्ड को व्यापक बनायें।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल ने उपस्थित सदस्यों से आह्वान किया कि आप सब गुरुभक्त हैं, संघ–सेवा में आपकी रुचि और भावना है इसलिए हमें सम्मेलन के माध्यम से आत्म अवलोकन करना है। आप हम क्या कर रहे हैं, क्या करना है, इस पर यदि हमारा सम्यक् चिन्तन चलता है तो हम सम्मेलन को सफल कह सकते हैं।

शासन सेवा समिति के सदस्य श्री सुमेरसिंह जी बोथरा ने उपस्थित जन समुदाय को संघ की गरिमा बताते हुए कहा कि जैन समाज में हमारा संघ छोटा होते हुए भी उसकी खुशबू है। संघ के प्रत्येक सदस्य को संघ–सेवा में तत्पर रहने की प्रेरणा करते बोथरा साहब ने कहा कि हम अपने आचार–विचार–व्यवहार से पहिचाने जाते हैं और हमें अपनी पहिचान पर गर्व है।

चन्द वक्ताओं को समय देकर मंच की ओर से सूचना की गई कि आप अपने सुझाव संक्षेप में जहां है वहीं से दें, माइक आप तक पहुंच जायेगा। इसके अन्तर्गत सर्व श्री विजयमल जी मेहता, श्री पुण्यवानचन्द जी ओस्तवाल, श्री पूनमचन्द जी पारख श्रीमती मंजू जी कोठारी, जयपुर, युवारत्न श्री मनीष जी ललवाणी, जलगांव, श्री पारस जी जैन, सवाई माधोपुर, श्री महिपत जी चौपड़ा, श्रीमती सुनिता जी जैन, पाली, श्री गुलाबसिंह जी दरड़ा पूर्व भारतीय प्रशासनिक अधिकारी , श्री पदमचन्द जी वीरवाल जैन जयपुर, श्री धनपत जी सेठिया–जोधपुर, श्री प्रसन्नचन्द जी बाघमार, श्री जिनेन्द्र कुमार जी जैन, दिल्ली, श्री सुरेशचन्द जी कोठारी, जयपुर ने अपने विचार प्रकट किये, सुझाव एवं प्रश्न रखे। श्री नरेन्द्र जी हीरावत ने घोषणा की कि युवक परिषद् गजेन्द्र निधि को 81000/– के 50 सदस्य बनाकर सहयोग करेगा।

श्री सुमेरसिंह जी बोथरा के आह्वान पर अनेक सदस्यों ने गजेन्द्र निधि के आधार-स्तम्भ सदस्य बनने की घोषणा की।

संघाध्यक्ष माननीय श्री रतनलाल जी बाफना ने सदस्यों के सकारात्मक सुझावों पर प्रसन्नता व्यक्त की और प्रत्येक प्रश्नकर्त्ता को सम्यक् समाधान दिया।

सम्मेलन में सर्वसम्मति से प्रस्ताव स्वीकार किया गया कि राज्य सरकार ने

सर्किट हाउसों में मांसाहार पर रोक लगाई है, एतदर्थ राज्य सरकार को धन्यवाद ज्ञापित किया जाए। एक अन्य प्रस्ताव में नए बूचड़खाने नहीं खोलने हेतु राज्य सरकार को ज्ञापन देने का निर्णय रहा।

सम्मान-समारोह

एस. एन. मेडिकल कॉलेज, शास्त्रीनगर के खचाखच भरे सभागार में 8 सितम्बर को सायं 7.30 बजे सम्मान समारोह नमस्कारमन्त्र, देवस्तुति एवं स्वागत गान से प्रारम्भ हुआ।

गजेन्द्रनिधि ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री नवरत्नमल जी कोठारी, मुम्बई ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि थे राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति माननीय न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया। विशिष्ट अतिथि के रूप में श्री पी. एस. मूथा, औरंगाबाद, श्री के.एन. भण्डारी, मुम्बई पधारे। संघाध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना, संघ संरक्षक-मण्डल के संयोजक श्री मोफतराज जी मुणोत, स्वागताध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, मण्डल अध्यक्ष श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, संघ कार्याध्यक्ष श्री कैलाशचन्द जी हीरावत, संघ महामन्त्री श्री अरूण जी मेहता, मण्डल मन्त्री श्री प्रकाशचन्द जी डागा भी मंच पर आसीन हुए।

मंचासीन महानुभावों का माल्यार्पण से स्वागत किया गया और अतिथियों को जोधपुर का प्रसिद्ध चूंदड़ी साफा पहनाकर उनका बहुमान किया गया। स्वागताध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत ने स्वागत भाषण प्रस्तुत किया।

शासन सेवा समिति के सदस्य श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने गुणी अभिनन्दन की पृष्ठ भूमि पर प्रकाश डाला।

संघ-सेवियों को सम्मान–विशिष्ट संघ–सेवी संघ संरक्षक श्री नथमल जी हीरावत, श्री पूनमचन्द जी बड़ेर, श्री श्रीकृष्णमल जी लोढ़ा, श्री कनकमल जी चोरड़िया और श्री सायरचन्द जी कांकरिया को उनकी उल्लेखनीय संघ-सेवा का परिचय देते हुए उन्हें रजतपट्टिका से सम्मानित किया गया।

हस्तीस्मृति एवं अन्य सम्मान–सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल द्वारा प्रदत्त आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान 2001 जिनवाणी के प्रधान सम्पादक और जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के सह–आचार्य डॉ. धर्मचन्द जैन को प्रदान किया गया। सम्मान में शाल, प्रशस्ति पत्र एवं 21,000 रुपये का चैक दिया गया। मण्डल की ओर से प्रदत्त युवा प्रतिभा शोध-साधना-सेवा सम्मान 2001 जीवदया, प्राणीरक्षा और अहिंसा के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने वाले श्री मानेन्द्र जी ओस्तवाल, जोधपुर को प्रशस्ति पत्र, शाल एवं 11 हजार की राशि के चैक के साथ प्रदान किया गया। वर्ष 2000 का उक्त सम्मान श्री सुमतिचन्द जी मेहता और वर्ष 1999 का सम्मान श्री कांतिलाल जी बाफना को दिया गया। श्री कांतिलाल जी बाफना ने सम्मान राशि में अपनी ओर से 1 लाख रूपये मिलाकर 1,11,000 भोपालगढ गोशाला के लिए देने की घोषणा की। मण्डल द्वारा प्रदत्त विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान जयपुर के

वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री हीराचन्द जी हीरावत को प्रशस्ति पत्र, शॉल एवं 21 हजार की राशि के साथ प्रदान किया गया। उनकी अनुपस्थिति में यह सम्मान उनके लघुभ्राता श्री हरीचन्द जी हीरावत ने स्वीकार किया। उन्होंने अपने भ्राता का संदेश पढ़कर सुनाया तथा 25 हजार रुपये मण्डल को भेंट करने की घोषणा की। वर्ष 1998 का विशिष्ट स्वाध्यायी सम्मान सवाईमाधोपुर के श्री रामदयाल जी जैन को प्रदान किया गया।

इस अवसर पर आचार्य हस्ती स्मृति-सम्मान से सम्मानित डॉ. धर्मचन्द जी ने अपने वक्तव्य में सत्कार–पुरस्कार को परीषह निरूपित करते हुए कहा कि सम्मान से अहं आ सकता है और अभिमान पतन की ओर ले जाता है। संघ की भावना का समादर करना चाहिये, इस दृष्टि से मैंने सम्मान स्वीकार किया है। डॉ. जैन ने आचार्य भगवन्त के यशस्वी जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि उस महापुरुष की प्रेरणा से मेरे जीवन का निर्माण हुआ है और मैं आध्यात्मिक क्षेत्र में आगे बढ़ने को तत्पर हुआ हूँ। आचार्य श्री हस्ती एवं जैन धर्म-दर्शन के वैशिष्ट्य पर डॉ. जैन साहब ने अपने विचार रखे।

शीलव्रतियों का सम्मान–शीलव्रत का पालन अत्यन्त दुष्कर कहा गया है। यह तपों में श्रेष्ठ माना गया है–'तवेसु वा उत्तमं बंभचेरं'। इस बार श्रावक-सम्मेलन के अवसर पर 45 वर्ष या उससे कम आयु में शीलव्रत के खंद करने वाले दम्पतियों में श्रीमती व श्री डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत, जोधपुर, श्रीमती व श्री प्रभुदयाल जी जैन, सवाईमाधोपुर, श्रीमती व श्री शांतिलाल जी जैन, चोरू, श्रीमती व श्री जयसिंह जी तातेड़, मदनगंज, श्रीमती व श्री सुरेश जी बाफणा, नासिक, श्रीमती व श्री विरेन्द्र जी चौहान, नीमच, श्रीमती व श्री पारसमल जी डोसी, पाली, श्रीमती व श्री अनिल जी चोरड़िया, पाली और श्रीमती व श्री भीकमचन्द जी मेहता, जोधपुर को रजत पट्टिका पर अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

तपस्वी सम्मान–जिन साधकों ने पांच या पांच से अधिक मासखमण व वर्षीतप किए उन्हें अभिनन्दन पत्र प्रदान किए गये। तप साधकों के नाम इस प्रकार हैः–

श्री नवतरनजी लूंकड़, जयपुर, श्रीमती चंचलदेवी मांगीलाल जी कुम्भट, जोधपुर, श्रीमती उषाबाई गौतमचन्द जी सुराणा, जयपुर, श्रीमती लीलादेवी कटारिया को पांच या पांच से अधिक मासखमण करने हेतु तथा श्रीमती भंवरीबाई गजराज जी मेहता, चेन्नई, श्रीमती मनभरदेवी ढाबरिया, अजमेर, श्री पारसमल जी ढाबरिया, अजमेर, श्रीमती छोटीबाई सिंघवी, जोधपुर, श्रीमती मांगीदेवी लूणकरण जी चोरड़िया, भोपालगढ़, श्रीमती कमलादेवी भंवरलाल जी पींचा, भोपालगढ़ और श्रीमती अचरजदेवी चोरड़िया, बैंगलोर को पांच या पांच से अधिक वर्षीतप करने हेतु सम्मानित किया गया।

दया–संवर साधना के अन्तर्गत माह में दस दयाव्रत करने वाले सुश्रावक श्री लादुराम जी डोसी को अभिनन्दन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया।

बहुविध सेवा-सम्मान–बहुविध संघ–सेवियों एवं समाज सेवियों में श्रीमती

सरदारबाई जी मुणोत, अजमेर, श्रीमती सोहनकंवर जी भण्डारी, कोलकाता, श्री मख्खूरमल जी गांग, जोधपुर, श्री माणकचन्द जी संचेती, जोधपुर, श्री पारसमल जी छाजेड़, जोधपुर, श्री मूलचन्द जी जैन, हिण्डौन, श्री सोभागमल जी जैन, अलीगढ़, श्री चंचलमल जी चोरड़िया, जोधपुर, श्री सोनराज जी बाघमार, कोसाना एवं श्री सम्पतराज जी बाफना, जोधपुर को सम्मानित किया गया।

युवक परिषद् के पुरस्कार/सम्मान—अ. भा. श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा सर्वश्रेष्ठ शाखा के रूप में चेन्नई, धार्मिक शिक्षण कार्यक्रम में जयपुर, स्वधर्मी-वात्सल्य-समाजसेवा में जलगांव, सामायिक-स्वाध्याय में जोधपुर एवं चतुर्विध संघसेवा में पीपाड़ शाखा को सम्मानित किया गया। व्यक्तिगत स्तर पर निम्न महानुभावों को स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया गया—

शिक्षा— युवारत्न श्री अंकित रेड़

समाजसेवा—1.युवारत्न श्री प्रदीप गांग, उपसचेतक नगर निगम, जोधपुर
2.युवारत्न श्री धनेन्द्र चौधरी, पार्षद नगर परिषद्, पीपाड़
3.युवारत्न श्री सुरेश जैन, कुस्तला, सरपंच

संयम— राजेन्द्र रांका, अजमेर (12 व्रत धारण करने पर)

संत-सती सेवा—1.युवारत्न श्री अभयकुमार डागा, जयपुर
2.युवारत्न श्री मनीष जी लोढ़ा(लघु), जोधपुर
3.युवारत्न श्री राजेन्द्र कान्तिलाल जी चौधरी, धुलिया

उत्तराध्ययनसूत्र परीक्षा पुरस्कार—उत्तराध्ययन सूत्र परीक्षा पुरस्कार के लिए प्रथम पुरस्कार श्रीमती विमला जी मेहता, जोधपुर को, द्वितीय पुरस्कार श्री राकेश जी जैन, सुमेरगंजमण्डी को एवं तृतीय पुरस्कार श्रीमती लीला जी सालेचा, जलगांव को स्मृति चिह्न के साथ क्रमशः 5000 रुपये, 4000 रुपये, 3000 रुपये की राशि के साथ प्रदान किया गया। उक्त पुरस्कार रतनलाल सी. बाफना फाउण्डेशन जलगांव की ओर से दिये गये।

संघ के दिवंगत गौरव स्तम्भों की प्रशस्ति—सम्मेलन में संघ के गौरव-स्तम्भ दिवंगत सुश्रावकों की सेवाओं का स्मरण किया गया तथा संघ-सेवा में उनके विशिष्ट योगदान के लिए परिवारजनों को प्रशस्ति-पत्र प्रदान किये गये। संघ गौरव स्तम्भ सुश्रावकों में सर्वश्री श्रीचन्द जी गोलेच्छा, जयपुर, श्री इन्दरचन्द जी हीरावत, जयपुर, श्री शंकरलाल जी ललवाणी, जलगांव, श्रीमती शरदचन्द्रिका जी मुणोत, मुम्बई, श्री पदमंचन्दजी हीरावत, जयपुर, श्री ब्रह्मचन्द जी भंडारी, जोधपुर, डॉ. नरेन्द्र जी भानावत, जयपुर, श्रीमती इन्दरकंवर जी जोधपुर, श्री नृसिंहमल जी मेहता, जोधपुर, श्री हुक्मीचन्द जी जैन, जोधपुर, श्री कुन्दनमल जी भंसाली, जोधपुर, श्री चम्पालाल जी डूंगरवाल, बैंगलोर, श्री मोतीलाल जी सांखला, बैंगलोर, श्री सुकनराज जी पगारिया, बैंगलोर, श्री माणकलाल जी डोसी, पाली, श्री नथमल जी पगारिया, पाली, श्री भीकमचन्द जी भंसाली, पाली, श्री चम्पालाल जी धारीवाल, पाली, श्री खींवराज जी चौपड़ा, बालोतरा, श्री सुगनमल जी भंडारी, निमाज, श्रीमती चांदबाई

जी कुम्भट, चेन्नई, श्री पारसमल जी सुराणा, नागौर, श्री रतनलाल जी बोथरा, भोपालगढ़, श्री घीसूलाल जी बाघमार, कोसाना, श्री मोतीलाल जी सेठिया, होलनांथा, श्रीमती गलखीबाई जी ढढ्ढा, जयपुर, श्री सौभागमल जी डागा, जोधपुर, श्री सम्पतराज जी मेहता, जोधपुर, श्री माणकमल जी मेहता, जोधपुर व श्री पारसमल जी रेड़, जोधपुर की सेवाओं का स्मरण कर उनके परिवारजनों को सम्मान-पत्र प्रदान किए गए।

समारोह के मुख्य अतिथि माननीय न्यायमूर्ति श्री प्रकाशचन्द जी टाटिया ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि योग्य एवं गुणीजनों का सम्मान दूसरे के लिए प्रेरणा का कार्य करता है। सचमुच, ऐसे लोगों का सम्मान प्रेरणादायी होता है। न्यायाधिपति महोदय ने सेवा धर्म की साधना में समर्पित होने की प्रेरणा की।

समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री पी.एस. मूथा एवं श्री के.एन. भण्डारी ने भी सम्मान समारोह में अपने विचार रखे। समारोह के अध्यक्ष श्री नवरत्नमल जी कोठारी ने अपने आशीर्वचन में कहा कि सम्मान से संघ का गौरव बढ़ता है और अच्छे काम करने की भावना बलवती होती है। अपने दादा श्री केसरीमल जी कोठारी के विशिष्ट कार्यों की झांकी रखते हुए उन्होंने कहा कि तीन–तीन पीढ़ियाँ हो जाने पर भी हमारी भावना में वही समर्पण रहा हुआ है। सम्मान भावी पीढ़ी को प्रेरणा देगा और जोधपुर का यह समारोह स्मरणीय रहेगा।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के मंत्री श्री प्रकाशचन्द जी डागा ने धन्यवाद ज्ञापित किया ।

समापन सत्र

रविवार दिनांक 9 सितम्बर को समापन सत्र का शुभारंभ प्रवचन के पश्चात् 10 बजे स्काउट्स एण्ड गाइड हैडक्वार्टर्स में प्रारम्भ हुआ। अतिथियों एवं पदाधिकारियों को मंचासीन कर कार्यक्रम का प्रारम्भ मंगलाचरण से किया गया।

स्वागताध्यक्ष डॉ. सम्पतसिंह जी भाण्डावत ने मुख्य अतिथि माननीय न्यायाधिपति श्री राजेश जी बालिया सहित मंचासीन विराजित महानुभावों का हार्दिक स्वागत किया। मुख्य अतिथि का संघाध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना ने साफा पहनाकर बहुमान किया।

कार्यक्रम में श्री विमलचन्द जी डागा ने परम्परा के मूलपुरुष से लेकर अब तक की आचार्य परम्परा की यशकीर्ति के अनेक प्रेरक प्रसंग रखकर संघ सदस्यों को आह्‌वान किया कि हम उनके आदर्शों से प्रेरणा लें।

शरदचन्द्रिका मुणोत वात्सल्य निधि–स्वधर्मी वात्सल्य हेतु संघ द्वारा 'शरदचन्द्रिका मुणोत वात्सल्यनिधि' के नाम से एक ट्रस्ट की घोषणा संघाध्यक्ष महोदय ने की तो समूचा पांडाल हर्ष हर्ष–जय-जय के नारों से गुंजित हो उठा। संघाध्यक्ष महोदय ने मुणोत परिवार की ओर से इस निधि में 21,00,000 रुपये का अर्थ सहयोग करने की घोषणा की तो हर्ष-हर्ष–जय-जय के समवेत स्वरों से

समुपस्थित सभी भाई-बहिनों द्वारा अनुमोदना कर हर्ष व्यक्त किया गया। इसी क्रम में स्वयं संघाध्यक्ष महोदय श्री रतनलाल जी बाफना, सर्व श्री पारसचन्द जी हीरावत, डॉ. सम्पसिंह जी भाण्डावत, श्री पूरणराज जी अब्बानी, श्री उग्रसिंह श्री सुमेरसिंह जी बोथरा, श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, श्री सरदारसिंह जी कर्नावट, श्री एस. आर. मेहता सुपुत्र श्री भभूतराज जी मेहता द्वारा इस वात्सल्यनिधि में सहयोग की घोषणा की गई।

वीर परिवार सम्मान

वे माता-पिता एवं परिवार वीर एवं धन्य हैं, जो अपने प्रियजन को संयम अंगीकार करने हेतु आज्ञा देते हैं। इसी भाव को लक्ष्य में रखकर समारोह के अन्तर्गत 67 वीर माता-पिता अथवा वीर परिवार के सदस्यों का स्वागत–अभिनन्दन किया गया। आचार्यप्रवर के सांसारिक परिजनों में से श्रीमती व श्री प्रेमचन्द जी गांधी ने और उपाध्यायप्रवर के सांसारिक भ्राता श्री भोपालचन्द जी सेठिया एवं मातुश्री श्रीमती छोटाबाई जी ने मुख्यातिथि न्यायाधिपति श्री बालिया साहब से सम्मान ग्रहण किया। एक–एक कर संत–मुनिराजों के परिवारजनों ने एवं तदनन्तर महासतियां जी महाराज के परिवारजनों ने सम्मान ग्रहण किया। अधिकांश सन्त-सतियों के सांसारिक परिजन उपस्थित थे। कतिपय दिवंगत सन्त-सतियों के परिजन भी उपस्थित थे, उन्हें भी इस अवसर पर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के बीच तमिलनाडु के क्षेत्रीय प्रधान श्री जवाहरलाल जी बाघमार ने भजन के माध्यम से अपनी भावना व्यक्त की।

मुख्य अतिथि माननीय बालिया साहब ने अपने हृदयोद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि आज का दिन मेरे लिए सौभाग्यशाली है, मुझे वीर परिवार के वीर सदस्यों का अभिनन्दन करने का सहज सुयोग मिला। धन्य हैं वे माता–पिता जिन्होंने धर्माचार्यों के श्रीचरणों में अपने सबसे प्रियजन को सर्वजनहितार्थ समर्पित किया। उन्होंने कहा कि आज संघ, समाज, देश, विश्व मूल्यों के संक्रमण के दौर से गुजर रहा है, ऐसे समय में साधु–साध्वियों का मार्गदर्शन उपयोगी होता है।

स्वागतमंत्री श्री सुमेरनाथ जी मोदी ने द्विदिवसीय सम्मेलन में पधारने पर सभी का आभार व्यक्त किया। संघ महामंत्री श्री अरुण जी मेहता ने श्रावक सम्मेलन में सहयोग करने वाले सभी महानुभावों का व स्थानीय संघ का सुन्दर वात्सल्य सेवा के लिए धन्यवाद ज्ञापित किया।

समापन सत्र के पश्चात् हजारों भाई-बहिनों ने ओसवाल कम्युनिटी सेन्टर और ओसवाल छात्रावास में भोजन किया। परस्पर प्रेम का दृश्य छात्रावास में ही नहीं, भोजन कक्ष में भी दिखाई दे रहा था।

सभी कार्यक्रमों में मंच संचालन श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफणा, श्री संदीप जी भाण्डावत एवं डॉ. सुरेश जी मेहता ने किया।

–अरुण मेहता, महामन्त्री,
अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, जोधपुर

साभार–प्राप्ति–स्वीकार

500/-रूपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

5963 श्री कैलाश जी भंसाली, बैंगलोर
5964 श्री फूलचन्द जी जैन, पाखर चौड़ाकि, दौसा (राज.)

300/- रूपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

5836 श्री राजकुमार जी हस्तीमल जी लोढ़ा, अजमेर (राज.)
5837 श्री श्रीपाल जी मेहता, जोधपुर (राज.)
5838 मैसर्स अनिल ट्रेडिंग कम्पनी, जोधपुर (राज.)
5839 श्री जैन श्रावक संघ, वेणोक, जोधपुर (राज.)
5840 डॉ. एस. सी. जैन, कोटा (राज.)
5841 श्री पीरचंद जी विनोदकुमार जी चोरड़िया,जोधपुर (राज.)
5842 श्री सुदेश रूटिया, जोधपुर (राज.)
5843 श्री गोपालराज जी अब्बानी, जोधपुर (राज.)
5844 श्री निखिल जी निर्मल जी कांकरिया, जोधपुर (राज.)
5845 श्री सुनील कुमार जी शांतिलाल जी ओस्तवाल, जोधपुर (राज.)
5846 श्री पुखराज जी जैन, दिल्ली
5847 श्री प्रसन्नराज जी जैन, अहमदाबाद (गुजरात)
5848 श्री राजेश जी पूनमचंद जी राखेचा, सूरत (गुजरात)
5849 श्री तुलसी जी केसरीमल जी बोथरा, ब्यावर (राज.)
5850 श्री सरदारमल जी भूरामल जी पारख, ब्यावर (राज.)
5851 श्री राजेन्द्र कुमार जी उम्मेदमल जी भण्डारी, ब्यावर (राज.)
5852 श्री भंवरलाल जी गुलाबचन्द जी सुराणा, ब्यावर (राज.)
5853 श्री प्रकाशमल जी समर्थमल जी भाण्डावत, ब्यावर (राज.)
5854 श्रीमती ललिता जी हंसराज जी जैन, पदावत, ब्यावर (राज.)
5855 श्री मोतीलाल जी चांदमल जी खाबिया, ब्यावर(राज.)
5856 श्रीमती मदनकंवर जी बाबूलाल जी मकाणा, हाजीवास, पाली (राज.)
5857 श्री सम्पतराज जी चन्दनमल जी मकाणा, सिकन्द्राबाद (आन्ध्रप्रदेश)
5858 श्री लक्ष्मीचन्द जी नोरतनमल जी भंसाली, ब्यावर (राज.)
5859 श्री कालीचरण जी होतूलाल जी जैन, बाड़मेर (राज.)
5860 श्री प्रकाश जी माणकमल जी लोढ़ा, जोधपुर (राज.)
5861 श्री विरेन्द्रराज जी देवराज जी बोथरा, जोधपुर (राज.)
5862 श्री जितेन्द्र जी सम्पतराज जी कटारिया, जोधपुर (राज.)
5863 श्री पुखराज जी जोगीलाल जी कोठारी, जोधपुर (राज.)
5864 श्री कैलाशचन्द जी दुगड़लाल जी कांकरिया, जोधपुर (राज.)
5865 श्री सुकनराज जी सिमरथराज जी गोड़ी, जोधपुर (राज.)
5866 श्री लक्ष्मीचन्द जी मिश्रीमल जी साण्ड, जोधपुर (राज.)
5867 श्री रमेशचन्द जी जैन, जयपुर (राज.)
5868 सौ. ज्योतिबाई धर्मपत्नी श्री विजयकुमार जी गादिया, भुसावल (महा.)
5869 सौ. किरण जी धर्मपत्नी श्री प्रकाशचन्द जी कोठारी, बोंदवड़ (महा.)

5870 श्री जीतमल जी बोथरा, जयपुर (राज.)
5871 सौ. सीमा जी श्री सुदर्शनजी चोरड़िया, अमरावती (महा.)
5872 श्री नौरतनमल जी पारसमल जी जैन, जयपुर (राज.)
5873 शाह श्री चम्पालाल जी गौतमचन्द जी जीरावला, जोधपुर (राज.)
5874 श्री पारसमल जी कोठारी, जोधपुर (राज.)
5875 श्री श्यामलाल जी मुन्दड़ा, जोधपुर(राज.)
5876 श्री शान्तिलाल जी दीपक कुमार जी बुरड़, भटिण्डा (पंजाब)
5877 श्री विशाल जी धनपतचंद जी मेहता, जोधपुर (राज.)
5878 श्री सोहनलाल जी मुल्तानमल जी बांठिया, जोधपुर (राज.)
5879 श्री मनोहरचन्द जी सुखराज जी बाघमार, हुबली (कर्नाटक)
5880 श्री कांतिलाल जी शामजी मोता, मुम्बई (महा.)
5881 श्री विकास कुमार जी खींची, भोपाल (म.प्र.)
5882 श्री अशोक जी जवरीमल जी सुराणा, जोधपुर (राज.)
5883 श्री जयकुमार जी बोथरा, अलीगढ़ (उ.प्र.)
5884 श्री सुरेन्द्रसिंह जी संग्रामसिंह जी मेहता, जयपुर (राज.)
5885 श्री दौलत जी माणकमल जी भण्डारी, जयपुर (राज.)
5886 ज्ञानवती शोभालाल धाकड़ चेरीटेबल ट्रस्ट, जयपुर (राज.)
5887 श्री नरेश जी रामबिलास जी जैन, जयपुर (राज.)
5888 श्री सत्यम जी सिद्धार्थ जी संचेती, जोधपुर (राज.)
5889 श्री. बी. एस. कोठारी, उदयपुर (राज.)
5890 श्री कुमुद कुमार जी लहरीलाल जी शाह, मुम्बई (महा.)
5891 श्री नरेन्द्र कुमार जी तेजकरण जी कोठारी, उदयपुर (राज.)
5892 श्री पुरुषोत्तम जी चुन्नीलाल जी बाफना, गोकाक, बेलगाम (कर्नाटक)
5893 श्री सोहनलाल जी जवाहरलाल जी कोठारी, केलसी (महा.)
5894 श्री रोशनलाल जी जेठमल जी पीतलिया, गंगापुर, भीलवाड़ा (राज.)
5895 श्री गोपाल जी अमरसिह जी धाकड़, चित्तौड़गढ़ (राज.)
5896 श्री पुखराज जी हीरालाल जी कोठारी, न्यू मुम्बई (महा.)
5897 श्री निर्मल जी सम्पतलाल जी कुम्भट, मुम्बई (महा.)
5898 श्री ताराचन्द जी कनकमल जी जैन, मुम्बई (महा.)
5899 श्री मांगीलाल जी साहेबचन्द जी जैन, मुम्बई (महा.)
5900 श्री विनोद जी पुष्पराज जी पितलिया, भायन्दर–ईस्ट, ठाणे (महा.)
5901 श्री अजय जी प्रेमचन्द जी हीरावत, मुम्बई (महा.)
5902 श्री प्रसन्नमल जी सिरहमल जी मुथा, भायन्दर पूर्व, ठाणे (महा.)
5903 श्री नरेशकुमार जी नाथूसिंह जी चोरड़िया, भायन्दर पूर्व, ठाणे (महा.)
5904 श्री एस. एस. जौहरी, मुम्बई (महा.)
5905 श्री नेमीचन्द जी चौथमल जी गोलेच्छा, भायन्दर वेस्ट, ठाणे (महा.)
5906 श्री प्रवीण कुमार जी चम्पालाल जी गोलेच्छा, मुम्बई (महा.)
5907 श्री राजीवकुमार जी अजय कुमार जी सुंकलेचा, मुम्बई (महा.)
5908 श्री राजेन्द्र कुमार जी रूपसिंह जी मेहता, भायन्दर ईस्ट, ठाणे (महा.)

5909 श्री ज्ञानचन्द जी जवरीलाल जी पारलेचा, भायन्दर ईस्ट, ठाणे (महा.)
5910 श्री ललितकुमार जी भंवरलाल जी कुम्भट, मुम्बई (महा.)
5911 श्री मुकेश कुमार जी भंवरलाल जी जैन, मुम्बई (महा.)
5912 श्री मोफतराज जी गुदड़चन्द जी मुणोत, भायन्दर वेस्ट, ठाणे (महा.)
5913 श्री मदनराज जी प्रेमराज जी जैन, मुम्बई (महा.)
5914 श्री रतनलाल जी चन्दनमल जी बोथरा, मुम्बई (महा.)
5915 श्री रमेश बी. जी बालूभाई जी शाह, मुम्बई (महा.)
5916 श्री चौथमल जी केशरमल जी जैन (मुणोत), मुम्बई (महा.)
5917 मैसर्स फूटरमल जी हेमराज जी जैन, मुम्बई (महा.)
5918 श्री कंवरलाल जी नेमीचन्द जी बाफना, अछोली, दुर्ग (छत्तीसगढ़)
5919 श्री सुरेन्द्र जी साजनराज जी कोठारी, केलसी (महा.)
5920 श्री गौतमचन्द जी प्रेमचन्द जी ~~नाहर, मुम्बई~~ (महा.)
5921 श्री आशिष के. जी कान्तिलाल एच. जी शाह, मुम्बई (महा.)
5922 श्री देवेन्द्र कुमार जी हरिचन्द जी डागा, भायन्दर ईस्ट, ठाणे (महा.)
5923 श्री राजेन्द्र सिंह जी तेजराज जी कोठारी, अजमेर (राज.)
5924 श्री रोहित के. जी कन्हैयालाल एन. जी जोगानी, मुम्बई (महा.)
5925 श्री कुशाल जी केशरीचन्द जी गोलेच्छा, मुम्बई (महा.)
5926 श्री मनोज जी शिखरचन्द जी कोचर, मुम्बई (महा.)
5927 श्री प्रकाश जी घीसीलाल जी सुखलेचा, मुम्बई (महा.)
5928 श्री पवन जी तेजकरण जी भण्डारी, मुम्बई (महा.)
5929 श्री संजयसिंह जी सुरेन्द्रसिंह जी फाफू, मुम्बई (महा.)
5930 श्री राजकुमार जी विशम्भरदयाल जी जैन, हिण्डौन सिटी (राज.)
5931 श्री ताराचन्द जी कस्तूरचन्द जी जैन, हिण्डौन सिटी (राज.)
5932 श्री अजयकुमार जी प्रेमचन्द जी जैन, हिण्डौन सिटी (राज.)
5933 श्री कृष्ण जी सुमेरचन्द जी जैन (पटवारी), हिण्डौन सिटी (राज.)
5934 श्री दामोदरलाल जी टीकमचन्द जी जैन (सरपंच), हिण्डौन सिटी (राज.)
5935 श्री ओमशरण जी विनोदकुमार जी गर्ग, हिण्डौनसिटी (राज.)
5936 श्री अशोक कुमार जी माणकचन्द जी जैन, हिण्डौन सिटी (राज.)
5937 श्री प्रवीण कुमार जी घासीलाल जी जैन, हिण्डौन सिटी (राज.)
5938 श्री नरेशचन्द जी हजारीलाल जी जैन, हिण्डौन सिटी (राज.)
5939 श्री अभयकुमार जी स्वरूपचन्द जी जैन, ढहरा (राज.)
5940 श्रीमती संगीला जी सुरेश जी समदड़िया, पीपाड़ शहर (राज.)
5941 श्रीमती दिलीप जी उगमराज जी भण्डारी, पीपाड़ शहर (राज.)
5942 श्रीमती पारसदेवी जी रतनलाल जी कवाड़, पीपाड़ शहर, जोधपुर (राज.)
5943 श्रीमती गुड्डीदेवी जी शान्तिलाल जी चौपड़ा, बुचेटी, जोधपुर (राज.)
5944 श्री नरेन्द्र जी चैनरूप जी बाफना, चैन्नई (तमि.)
5945 श्रीमती समुदेवी जी बरड़िया, पीपाड़ (राज.)
5946 श्रीमती त्रिशला देवी जी मुणोत, पीपाड़ शहर(राज.)
5947 श्री सिंहराज जी जैन,पीपाड़ शहर (राज.)

5948 श्री निहालचन्द जी जीवराज जी जैन, पीपाड़ शहर (राज.)
5949 श्री प्रसन्नराज जी खेमराज जी कांकरिया, चेन्नई (तमि.)
5950 श्री अखेचन्द जी सुशील कुमार जी जैन, डेह (राज.)
5951 श्रीमती चन्द्रकान्ता जी अमृतलाल जी गांधी, पीपाड़ शहर (राज.)
5952 श्री हेमन्त जी भंवरलाल जी भण्डारी, ब्यावर (राज.)
5953 श्रीमती साधना जी राजेन्द्र जी मूथा, पीपाड़शहर (राज.)
5954 श्री नेमीचन्द जी ओस्तवाल, गोटन (राज.)
5955 श्रीमती कंचनदेवी जी गुदड़चन्द जी मुणोत, पीपाड़शहर (राज.)
5956 श्री शांतिलाल जी सुगनचन्द जी भांगड़ा, पीपाड़शहर (राज.)
5957 श्री पूनम जी मनसुख जी कोठारी, पीपाड़शहर (राज.)
5958 श्रीमती कमला जी राजेन्द्र जी कोठारी, पीपाड़शहर (राज.)
5959 सुश्री स्नेहलता जी नवरतनमल जी गादिया, पीपाड़शहर (राज.)
5960 श्री संदीप जी नरेन्द्रराज जी धारीवाल, गुड़गांव (हरियाणा)
5961 श्री राकेशकुमार जी श्री बाबूलाल जी जैन, सवईमाधोपुर (राज.)
5962 श्री ज्ञानचन्द जी जैन, सवाईमाधोपुर (राज.)
5963 श्री शांतिलाल जी जैन, मुम्बई (महा.)

5000/- जिनवाणी पत्रिका की स्तम्भ-सदस्यता हेतु

97 श्री के. सोहनलाल जी ओस्तवाल, चेन्नई (तमि.)

जिनवाणी को साभार प्राप्त

5000/– श्री श्याम जी मोदी, हैदराबाद, स्व. श्रीमती ज्ञानकंवर जी मोदी धर्मपत्नी स्व. न्यायाधिपति श्री सोहननाथ जी मोदी की पुण्यतिथि पर उनके सुपुत्र श्री सुरेशनाथ सा व श्यामनाथ सा की तरफ से सप्रेम भेंट।

2100/– श्री पंकज जी, पीयूष जी गोलेच्छा, जयपुर, श्रीमती कंचनदेवी जी गोलेच्छा धर्मपत्नी स्व. श्री श्रीचन्द जी गोलेच्छा की पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

1101/– श्रीमती किरण देवी जी सुराणा, जोधपुर। अपने पति श्री भंवरलाल जी सुराणा की पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/– श्री मांगीलाल जी घीसूलाल जी गणधर चौपड़ा, बाड़मेर, पूज्य पिताजी स्व. श्रीमान बाँडमल जी सिरेमल जी गणधर चौपड़ा की छठी पुण्य तिथि पर भेंट।

1100/– श्री मनमोहनराज जी दिलखुशराज जी मेहता, पीपाड़ शहर, श्रीमान माणकचन्द जी मूथा की पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

1000/.– श्री रमेश जी दुगड़, चेन्नई, जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

701/- श्री रिखबचन्द जी, जीतमल जी, राजाबाबू जी बोथरा, जयपुर, पूज्य पिताश्री श्रीमान् भंवरलाल जी बोथरा की पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

501/– श्री चांदमल जी बोथरा, जयपुर, आयुष्यमान् पवन बोथरा एवं सौ. अलका के शुभ विवाह के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

501/– श्री जवरीलाल जी प्रकाशचन्द जी लुणिया, पल्लीपट्ट, आचार्यप्रवर के दर्शनों की खुशी में सप्रेम भेंट।

500/– श्री सुभाषचन्द जी सिंघवी, बैंगलोर, जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

500/– महिपाल जी दिलीप जी भण्डारी, चेन्नई, महासती श्री सायरकंवर जी म.सा., शासन प्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनों के उपलक्ष्य में।

300/– श्री अनोपचन्द जी जैन, चेन्नई, जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

251/– श्री किस्तूरचन्द जी सिंघवी, कोलकाता, अपने पौत्र मोहित सिंघवी पुत्र मधु–राजेन्द्रचन्द्र जी सिंघवी के मालवीय रीजनल इंजीनियरिंग कॉलेज, जयपुर में प्रवेश के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

250/– भंडारी सरदारचन्दजी, ,अजीतचंदजी, आदेश्वरचंदजी, अभिनन्दनजी जैन, जोधपुर। श्रीमती प्रेमकंवर जी भण्डारी (धर्मपत्नी भण्डारी श्री सरदारचन्द जी) का 27 अगस्त 2001 को स्वर्गवास होने जाने पर उनकी स्मृति में।

250/– श्री अमरचन्द जी मोदी, मदनगंज, अपने सुपुत्र श्री विनोद कुमार जी मोदी का 32 वर्ष की वय में दिनांक 19.8.2001 को आकस्मिक निधन हाने की पुण्य स्मृति में।

201/– श्री देवेन्द्र कुमार जी बडेर, दिल्ली, जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

201/– श्री एस.एस. जैन संघ, पल्लीपट्ट, पर्युषण पर्व सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

151/– डॉ. धर्मचन्द जी ऋषभचन्द जी जैन, अलीगढ(टोंक), अपने ताऊजी श्री राजमल जी जैन की 56 दिवसीय तपस्या 26.8.2001 को सफलतापूर्वक सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

101/– श्री जगदीशप्रसाद जी जैन, सुमेरगंजमण्डी, श्री मथुरालाल जी जैन(अणगौरा वाले) की पुण्य स्मृति में भेंट।

101/– श्री बाबूलाल जी, त्रिलोकचन्द जी, महेन्द्र कुमार जी जैन (रामपुरावाले) सवाईमाधोपुर, पूजनीय माता जी की पुण्य स्मृति में जिनवाणी को भेंट।

100/– श्री महावीरचन्द जी, मनोहरलाल जी नाहर, चेन्नई, श्रीमती राजकुमारी धर्मपत्नी श्री महावीरचन्द जी नाहर एवं श्रीमती अन्जू देवी जी धर्मपत्नी श्री मनोहरलाल जी नाहर पुत्रवधू स्व. श्री तपस्वीचन्द जी नाहर (कोसाणा वाले) के अठाई की तपस्या के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

100/– श्रीमती कमला एवं देवेन्द्र नाथ जी मोदी, जोधपुर, अपने सुपुत्र श्री लोकेन्द्र जी मोदी के जन्मोत्सव पर सप्रेम भेंट।

100/– श्री रिखबराज जी पारख, जोधपुर। आचार्यप्रवर श्री रामलाल जी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी महासती श्री वसुमती जी म.सा. की सुशिष्या श्री निशांत श्री जी म.सा. के 31 की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

100/– श्री तेजमल जी लोढ़ा, धनोप, महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. आदि ठाणा 6 के धनोप चातुर्मास में अपनी पुत्रवधू श्रीमती लीला जी लोढ़ा के 18 की तपस्या के उपलक्ष्य में साभार सप्रेम भेंट।

51/– श्री भीकमचन्द जी डॉ. बी. रमेशकुमार जी गादिया, बैंगलोर, श्रीमती आशादेवी जी धर्मपत्नी डॉ. बी. रमेश कुमार जी गादिया द्वारा इस वर्ष के चातुर्मास में 51 दिवसीय अखण्ड एकासना तपाराधना करने के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

साहित्य प्रकाशन हेतु साभार-प्राप्त

4000/– श्री के. आनन्दराजजी, श्री के. सोहनलालजी, श्री के. प्रकाशचन्दजी व श्री के. गौतमचन्दजी ओस्तवाल,चेन्नई मण्डल के साहित्य प्रकाशनार्थ सप्रेम भेंट।

2000/– श्री रमेश जी दुगड़, चेन्नई, मण्डल के साहित्य प्रकाशनार्थ सप्रेम भेंट।

300/– श्री अनोपचन्द जी जैन, चेन्नई, मण्डल के साहित्य प्रकाशनार्थ सप्रेम भेंट।

गजेन्द्र निधि से साभार-प्राप्त

2,00,000/–गजेन्द्र निधि ट्रस्ट मुम्बई से सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को सहायतार्थ।

स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

20000/–श्री आनन्दराज जी, सोहनलाल जी, प्रकाशचन्द जी व श्री कमल जी ओस्तवाल, चेन्नई, स्वाध्याय संघ के संरक्षक बनने के उपलक्ष्य में स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट।

5000/– श्री राधेश्याम जी जैन, सवाईमाधोपुर, स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट।

2000/– श्री रमेश जी दुगड़, चेन्नई, स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट।

1100/– श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन प्रगति संघ, जोबनेर द्वारा स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट।

1100/– श्री महेशकुमार जी विपुलकुमारजी मेहता, चेन्नई, पूज्य दादीसा श्रीमती कुसुमदेवी मेहता के स्वर्णजयंती एवं सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा., शासनप्रभाविका महातसी श्री मैनासुन्दरी जी म.सा. आदि ठाणा के दर्शनों के उपलक्ष्य में।

1000/– श्री महेशकुमार जी विपुल कुमार जी मेहता,चेन्नई, महासती शान्ताकंवर जी म.सा. के 9 की तपस्या के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

1000/– श्री कल्याणमल प्रकाशमल चोरड़िया ट्रस्ट, चेन्नई, स्वाध्याय संघ, जोधपुर की संवर्द्धक सदस्यता का वर्ष 2000 का शुल्क।

501/– श्री रिखबचन्द जी, जीतमल जी, राजाबाबू जी बोथरा, जयपुर, पूज्य पिताजी श्रीमान भंवरलाल जी बोथरा का 15.7.2001 को स्वर्गारोहण होने पर स्वाध्याय संघ को भेंट।

500/– श्रीमती मोहनकौर जी जैन, जोधपुर, स्वाध्याय संघ की सहयोगी सदस्यता।

300/– श्री अनोपचन्द जी जैन, चेन्नई, स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट।

250/– भंडारी सरदारचंदसा, अजीतचंदसा, आदेश्वरचंदसा, अभिनन्दनसा जैन, जोधपुर, श्रीमती प्रेमकंवर जी भंडारी (धर्मपत्नी भंडारी साहब श्री सरदारचंदसा जैन) का दिनांक 27 अगस्त 2001 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी स्मृति में स्वाध्याय संघ को भेंट।

250/– श्री रामेश्वरप्रसाद जी जैन, हिण्डौन सिटी, स्वाध्याय संघ को सप्रेम भेंट

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल को साभार-प्राप्त

501/– श्री रिखबचन्द जी, जीतमल जी, राजाबाबू जी बोथरा, जयपुर पूज्य पिताजी श्रीमान् भंवरलाल जी बोथरा का 15.7.2001 को स्वर्गारोहण होने पर सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर को भेंट।

पाठक-पत्र

मैं जिनवाणी पत्रिका का नियमित पठन करता हूँ। आध्यात्मिक दृष्टि से पत्रिका की उपयोगिता निस्संदेह सराहनीय है। अपने उद्देश्य की पूर्ति में सफलता के कारण इस पत्रिका को श्रेष्ठता की श्रेणी में प्रतिष्ठित किया जा सकता है।

पत्रिका में आपका सम्पादकीय भी मैं नियमित रूप से पढ़ता हूँ। आपका सम्पादकीय हमेशा बड़ा ही प्रभावी एवं प्रेरणास्पद रहता है, जिसकी मैं मुक्त कंठ से प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता। जुलाई 2001 की पत्रिका में आपका सम्पादकीय पढ़ा। 'धर्म प्रचार हो-स्वप्रचार नहीं' शीर्षक के अन्तर्गत विषय को जिस सरलता, सहजता, स्पष्टता एवं भावों की मार्मिकता के साथ लिपिबद्ध किया है वह पाठकों के अंतःस्थल को अपनी सम्पूर्ण आर्द्रता के साथ छू जाती है।

'विचार, आचार एवं प्रचार का उत्तम क्रम जीवन्त प्रचार का आधार है।'

'मनुष्य में अपने व्यक्तित्व का मोह जन्मजात है, यही कारण है कि कई बार स्वाभिमान के नाम पर भी अभिमान का पोषण होने लगता है।'

'श्रद्धापूर्वक विचारों की दृढ़ता के साथ, किया गया आचरण का प्रभाव बिना प्रचार के भी सहज ही दूसरों पर अंकित होता है तथा यह प्रभाव अधिक स्थायी एवं प्रबल होता है।

जीवन मूल्यों के इस प्रकार सजीव प्रस्तुतीकरण से भला कौन प्रेरित-प्रभावित एवं अंतःआंदोलित हुए बिना रह सकता है? निश्चित ही अभागे हैं वो जो इस प्रकार के साहित्य के पठन से वंचित रह कर जीवन-निर्माण की वास्तविक सामग्री नहीं जुटा पाते।

– दिलखुश जैन, मुम्बई

जिनवाणी माह जुलाई 2001 के अंक को देखा, जिसमें संपादकीय 'धर्म प्रचार हो-स्वप्रचार नहीं' विषय पर आपके विचार पढ़े। आपने स्वप्रचार पर सटीक और सामयिक टिप्पणियां की हैं और साधु समाज पर भी आपने चोट की, जो इससे अछूते नहीं। आपने अत्यन्त महत्त्वपूर्ण इस प्रश्न को कि अनभिज्ञ लोगों के बीच महावीर के उपदेशों के प्रचार की आवश्यकता है, बताया। परन्तु हो रहा है इससे उल्टा। यदि साधु किसी बात को मनवाना ही चाहते हैं तो उन्हें मांसाहारियों, शराबियों एवं अन्य व्यसनियों के बीच जाना होगा, तभी समाज सुधरेगा। जो लोग मांस सेवन नहीं करते, यदि उन्हें उपदेश दिया जावे तो समय और श्रम दोनों बरबाद होंगे। आशा की जानी चाहिये कि इस चौमासे में साधु वर्ग स्वप्रचार के बजाय पर कल्याण में समय लगायेंगे। जिससे संबंधित वर्ग महावीर के उपदेशों से सुपरिचित होकर अपना जीवन सुधार सके। जो आज के युग की महती आवश्यकता है।

– घेवरचन्द गोदीका, जयपुर

इस भौतिकवाद के युग की चकाचौंध में 'जिनवाणी' एक प्रकाशस्वरूप दीपक है। यह पाठकगणों के हृदय को भौतिकवाद से अध्यात्म के मार्ग की ओर प्रशस्त करता है। 'जिनवाणी' ज्ञानवर्द्धक उच्चकोटि की लेख सामग्री से ओतप्रोत है। परमपूज्य आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के मुखारविन्द से अमृतवाणी की ज्ञानगंगा से आम पाठकगण लाभान्वित हो रहे हैं। जिनवाणी प्रतिमाह समय पर प्राप्त हो जाती है। – **बाबूदास रामावत, राजमुण्ड्री**

आप द्वारा प्रकाशित जिनवाणी पत्रिका पढ़कर हमें बेहद प्रसन्नता हुई। इसे हम भी मंगवाने के इच्छुक हैं।–**रमेशचन्द्र सोलंकी (जैन), सिरोही**

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।
"आचार्य श्री हस्ती"

With Best Compliments From:

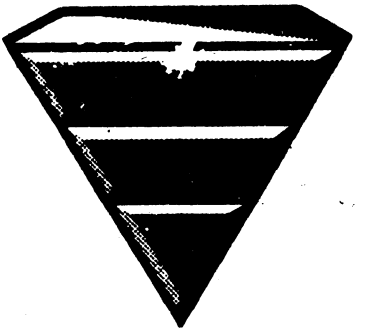

EVEREST GEMS LTD.

15 B, KOK PAH MANSION,
58-60 CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON,
HONGKONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : *Sunil Lunawat*
Raj Mohan Kothari

जीवन को बनाने या बिगाड़ने का
सारा दायित्व चरित्र पर ही निर्भर है।
-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments from :

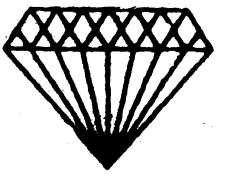

S. D. GEMS

&

SURBHI DIAMONDS

202, RATNA DEEP, BEHIND PANCHRATHNA,
OPERA HOUSE, MUMBAI - 400 004
PHONE : (O) 3690189, 3684091 (R) 8724429, 8735824
MOBILE : 98200-30872

Virendra Kumar Daga (Sonu Daga)

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- Hire Purchase
- Leasing
- Bills Discounting
- Foreign Exchange

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chn@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O. : No. 16, Whites Road, II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014.

Branches :

• Bangalore • Coimbatore • Ernakulam
• Kollidam • New Delhi

JAI MAHAVEER

JAI GURU HASTI

With Best Compliments from :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE,

CHENNAI 600 056

PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET, POONAMALLEE,

CHENNAI 600 056

With
Best Compliments
From

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।
– आचार्य श्री हस्ती

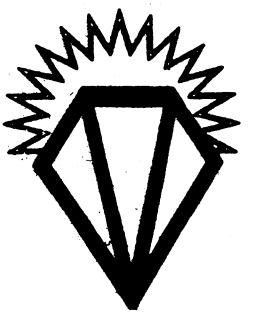

M/s HIMA GEMS

7th Floor,
KOKPAH,
58-60, Cameron Road,
T.S.T. Kowloon
HONGKONG
Tel 23671457

Director
HEMANT
SANCHETI

पंरपरागत कलाकृती का
बेहतरीन अलंकार...

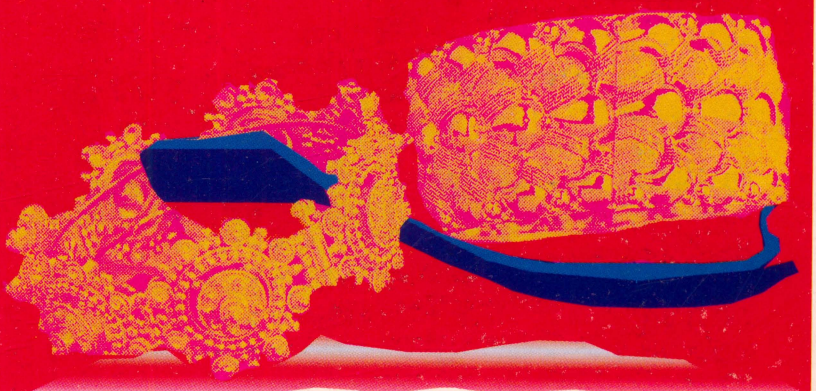

आधुनीक युगका
सुवर्ण श्रृंगार..!

हम पीढियों से दे रहे हैं
आपकी भावनाओं को शुद्ध, सच्चे व बेमिसाल आभूषणों की शक्ल.
आप बरसों से कर रहे हैं हमारे रिश्तों पर खरे मन से विश्वास...

A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854

मै. राजमल लखीचंद
(गोल्ड एम्पोरियम)
१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव-४२५ ००१, (महाराष्ट्र) फोन : (०२५७) २२६६८१, ८२, ८३

भारत सरकार द्वारा प्रदत्त पंजीकृत संख्या 3653/57

THE CLOSEST YOU CAN STAY TO KANDIVALI STATION.

Kalpataru Vatika-Phase II, is an imposing 14 storeyed residential tower that is far away from the hustle and bustle, yet near enough to the station.

It features 2 wings each having 4 apartments per floor of 2 BHK. It offers superior quality amenities (already developed) within the complex such as lush landscaped garden, swimming pool, club house with gymnasium, steam and sauna.

While Kalpataru Vatika-Phase I is already complete, with 4 wings of 7 storeys each, Kalpataru Vatika-Phase II is well under construction.

For further details or for a site visit, call Sangeeta or Rajeev at 282 2679/282 2888.

KALPA-TARU

Site address: Akurli Road, Opposite ESIS Hospital, Kandivali (East). Tel: 887 1911.
Kalpataru Group of Companies: 111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021. Fax: 204 1548 / 288 4778.
E-mail: sales@kalpataru.com or visit us at www.kalpataru.com

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिंटिंग प्रेस, जयपुर ✆ 562929, 564771